अंक : अक्टूबर–24, मार्च–25

रजि. नं. 31319/77 ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

स्थापना : 1977
राजस्थली

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

अन्तरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस रै मौकै आयोजित ग्यान गोठ में विचार
राखता शिक्षाविद् साहित्यकार अर चावा कवि डॉ. गजादान चारण, डीडवाना
अर गोठ में उपस्थित सुधी श्रोतागण

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अक्टूबर 2024–मार्च 2025

बरस : 48 संयुक्तांक : 1–2 पूर्णांक : 165–66

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

संपादक–मंडल

डॉ. मदन सैनी **डॉ. गजादान चारण**
किरण राजपुरोहित **मोनिका गौड़**

प्रकाशक

मरुभूमि शोध संस्थान

(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)

www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com

आवरण अर रेखाचित्राम

शैलेन्द्र सरस्वती, बीकानेर

मो. 9116727333

सैयोग राशि

पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

राजस्थानी रचाव रै पेटै सावचेती राखण री जरूरत — *रवि पुरोहित* — 3

आलेख

सबदां री परोटणगत पेटै — *डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'* — 5

उल्थै रै बूतै रातो-मातो हुंवतो राजस्थानी गद्य-साहित्य — *शंकरसिंह राजपुरोहित* — 12

बकाई — *माणक तुलसीराम गौड़* — 19

कहाणी

भुआजी! भुआजी! — *छगन लाल व्यास* — 23

अफसर — *अरविंदसिंह आशिया* — 31

कित्ता चौरावा — *मदन गोपाल लढ़ा* — 37

गायां रो गवाळियो — *डॉ. मनमोहन सिंह यादव* — 42

लघुकथा

चुगली रो चक्कर / सेठजी रो त्याग — *ललित शर्मा* — 48

अनूदित लघुकथा

चार लघुकथावां (मूळ : कमल कपूर) — *अनुवाद : विमला नागला* — 51

संस्मरण

मुथरा राम — *मनोहर सिंह राठौड़* — 56

म्हारी दादी — *श्याम जांगिड़* — 60

व्यंग्य

चौपाळ — *छत्र छाजेड़ 'फक्कड़'* — 65

दूहा

चाय-पच्चीसी — *मानसिंह शेखावत 'मऊ'* — 70

कविता

टिकड़्यां-सुयां सूं जीवां हां / औ सांस अटकतो जावै है — *भंवरलाल बैरागी* — 72

सफर रा दरसाव — *डॉ. रमेश 'मयंक'* — 74

कीं तो हुयो है! — *सत्येन्द्र सिंह चारण* — 77

गांव रा काचा-पाका घर — *मीनाक्षी पारीक* — 79

चार कवितावां — *सोनाली सुथार* — 81

तीन कवितावां — *डॉ. कृष्णा कुमारी* — 83

चार कवितावां — *पवन कुमार राजपुरोहित* — 85

गजल

चार गजलां — *अब्दुल समद 'राही'* — 87

गीत

दो गीत — *देवकी दर्पण* — 89

तीन गीत — *देवीलाल महिया* — 91

कूंत

धरती री सोरम : आरै-सारै रो जथारथ — *राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'* — 93

संपादकीय

राजस्थानी रचाव रै पेटै सावचेती राखण री जरूरत

आधुनिक राजस्थानी साहित्य रै सीगै आज री घड़ी में लगैटगै हरेक विधा में लेखन होय रैयो है। गद्य साहित्य में कथा-उपन्यास रै सागै कथेतर साहित्य विधावां में ई मोकळो सिरजण होय रैयो है, जिणमें निबंध, संस्मरण, व्यंग्य, नाटक, अेकांकी अर डायरी विधा में ई खूब पोथ्यां साम्हीं आय रैयी है। इणी भांत पद्य-साहित्य में ई कविता रै टाळ ई गीत-गजल, हाइकु, पंचलड़ी, क्षणिकावां आद विधा में ई लगोलग पोथ्यां छप रैयी है। पोथ्यां रै टाळ आं विधावां री मोकळी रचनावां 'राजस्थली' रै सागै माणक, जागती जोत, कथेसर, हथाई, रूड़ौ राजस्थान अर ई-पत्रिका राजस्थानी वाणी, नेगचार आद में लगोलग छप रैयी है, पण राजस्थानी रचनाकार नै आपरै रचाव रै पेटै कीं सजग-सावचेत होवण रै सागै ईमानदार रैवण री ई जरूरत लखावै। इयां नीं हुवणो चाईजै कै पैलै ई ड्राफ्ट में लिख्योड़ी रचना नै पाछी बिना बांच्यां ई 'ऑन डिमांड' किणी पत्रिका में छपण सारू संपादक नै डाक सूं कै पछै ई-मेल, वॉट्सऐप सूं भेज'र आपां निरवाळा होय जावां।

इणरै सागै अेक बात आ भी अखरै कै केई रचनाकार आपरी अेक ई रचना नै अेकै सागै सगळी पत्रिकावां रै संपादकां नै भेज देवै अर पछै उडीकता रैवै कै किसी-किसी पत्रिका में रचना छपी है। राजस्थानी में गिणती री तो पत्र-पत्रिकावां है अर पाठकां री संख्यां ई घणी कोनी, तो पछै अेक ई रचना दो-तीन पत्रिकावां में छप्यां सूं फायदो कांई? घूम-फिर'र सागी रचना पाठक नै किणी दूजी पत्रिका में बांचण नै मिल जावै, तो उणरो माथो तो ठणकै ई ठणकै, राजस्थानी पत्रिका रो संपादक भी सोचण नै मजबूर हुय जावै कै राजस्थानी रचनाकार इण भांत रो वैवार क्यूं करै? जदकै

आज री टैम तो आपरी रचना रै प्रकाशन-प्रसारण रा औरूं ई केई माध्यम आयग्या है। फेसबुक, वाट्सऐप ग्रुप अर दूजै किणी इलेक्ट्रोनिक माध्यम पर ई सागी बा ई रचना देखण नै मिल जावै, जकी किणी पत्रिका में छपगी है या छपण वाळी है। संसाधनां री कमी रै चालतां पत्र-पत्रिका ई मोड़ी-बेगी छपै, इण बात नै समझ'र राजस्थानी रा रचनाकारां नै कीं तो खटाव राखणो ई पड़सी। अेक बात और, आपां नै रचना रै वास्तै किणी संपादक रै समचै कै किणी पांडुलिपि प्रकाशन योजना री उडीक नीं राख'र लगोलग सिरजण करतो रैवणो है। अमूमन देखां कै अकादमी या किणी दूजी संस्थावां कानी सूं पांडुलिपि प्रकाशन सहयोग री विज्ञप्ति री उडीक में आपां सिरजण नै विराम-सो देय देवां अर जद कदैई अैड़ी तजबीज बैठै तो जापड़-तापड़ कर'र अस्सी कै छिनवै पानां री पांडुलिपि त्यार करण री आफळ में लाग जावां। लगोलग सिरजण सूं आपां आगै अैड़ी कोई नौबत ई नीं आवैला।

राजस्थानी में रचाव करती बगत आपां नै सबदां रै बरतारै रो भी ध्यान राखणो पड़सी। कम सूं कम इयां लागणो तो चाईजै कै रचना राजस्थानी री है। खाली हिंदी रै का, के, की री ठौड़ राजस्थानी बणावण सारू रा, रै, री सूं काम नीं चालै। इण सारू रचाव री बगत थोड़ै चिंतन-मनन री जरूरत है। थोड़ो-सो धीजो राख्यां अर चिंतन-मनन कर्‌यां आपां री रचना में ठेठ राजस्थानी रा सबद आय सकै, जका कै आपां रै हियै री सबद-संपदा हुंवता थकां ई उण बगत ध्यान में नीं आवै, पण रचना नै दुबारा संवारती बगत बै सबद मत्तैई मगज में आय जावै। इण वास्तै किणी रचना नै पत्र-पत्रिका रै संपादक कनै भेजण सूं पैलां उणनै थोड़ी संवारण री जरूरत हुवै, इण सारू थोड़ै धीजै अर खटाव री भी जरूरत पड़ै।

'राजस्थली' रै इण अंक रै पैलै आलेख रै रूप में डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' रो आलेख 'सबदां री परोटणगत पेटै' राजस्थानी रचनाकारां सारू घणो महताऊ अर कीमिया है। इणी भांत किणी दूजी भारतीय कै विदेसी भासा सूं राजस्थानी में अनुवाद करती बगत ई आपां नै सबदां री परोट पेटै सजग अर सावचेत रैवण री जरूरत है, जद ई आपां किणी रचना रो सांगोपांग राजस्थानी रूपांतरण कर'र उण मूळ रचना रै सागै न्याव कर सकां। इण बाबत भी इण अंक में अेक आलेख 'उल्थै रै बूतै रातो-मातो हुंवतो राजस्थानी गद्य साहित्य' दिरीज्यो है। शंकरसिंह राजपुरोहित रै इण आलेख में अनुवाद री महत्ता अर उण सारू जरूरी नेम-कायदां रै सागै राजस्थानी गद्य साहित्य रै लेखै अबार तांई हुया राजस्थानी अनुवाद री सांगोपांग विरोळ करीजी है। राजस्थानी रा नूंवा रचनाकारां सारू तो अै दोनूं ई आलेख घणा महताऊ है। इणरै टाळ ई इण अंक री सामग्री आप सुधी पाठकां नै अवस दाय आवैला, इणी विस्वास सागै...

रवि पुरोहित

9414416252

ISSN : 2320-0995

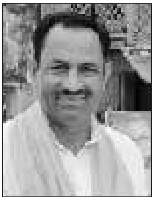

डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'

सबदां री परोटणगत पेटै

वाणी नै व्यक्तित्व रो ऊजळो दरपण मानीज्यो है। 'मरदां आ ही पारखा, बोला अर लाधा' मतलब औ कै मिनख री इत्ती-सी पारख है कै बोल्यो अर लाध्यो। बोलतां ई ठाह पड़ जावै कै कितोक पोदीणो है। किसै माहौल में रैयोड़ो है। घर-परिवार रा संस्कार किसा'क है। खुद री सोच रो दायरो कितोक है। मांयनै कीं माल है का कोरी डम-डम ई बाजै। 'म्हनै घड़गी जकी बाड़ में बड़गी' इयांकली सोच राखणियां किरड़ै दाईं बंटीजता धंतरसिंह जित्तै नीं बोलै बित्तै तो ठीक, पण बोलतां ई सो पलमो चौड़ै आवै अर सामलो सटाक देणी पिछाण लेवै। दुनियां तो भरम री है अर बोलतां ई भरम री भींतां धुड़ जावै। पछै सामलो आ कैवतां क्यूं टेम लगावै कै 'सेफां बाई राम-राम'। जद ई तो बडेरां बार-बार तोल-तोल'र बोलण माथै जोर देवतां कैयो है :

सिद्धां और कवेसरां, जे कोइ जाणै विद्ध।
कपड़ां में क्यूं ही नहीं, सबदां ही में सिद्ध।।

कोरा ऊजळा अर चीकणा कपड़ा पैरण अर उचक-उचक'र बोलण सूं प्रभाव नीं जमै, उण सारू सबदां रो सटीक अर सही प्रयोग होवणो जरूरी है। सबद री महत्ता उचित अरथ साथै समन्वित होवण सूं ई बणै। सबद रै सही अर सारथक प्रयोग नै जाणण अर सीखण सारू सबद री व्युत्पत्ति सूं लेय वरतमान रूप ताणी री विकास जात्रा नै जाणणो जरूरी है। हरेक सबद री एक सांस्कृतिक, सामाजिक अर भासावैज्ञानिक विकास जात्रा हुवै। सबद रो सटीक अर सही अरथ पकड़ण सारू इण विकास जात्रा नै जाणणो जरूरी है। रचनाकार सारू जरूरी है कै वो आपरै लक्षित

ठिकाणो :
'साकेत'
केशव कॉलोनी
स्टेशन रोड़, डीडवाना
(राजस्थान) 341303
मो. 9414587319

पाठक वरग नै ध्यान में राखतां सबदां नै परोटै। भासा नै सीखण रो मतलब उणसूं जुड़्योड़ै समाज रै व्यवहार अर उणरै सांस्कृतिक रीत-रिवाज नै सीखणो हुया करै। भासा समाज रै विचार अर व्यवहार रो उत्पाद है। सगळा लोग आपरै समाज सूं ई भासा सीखै। भासा रै साथै वै संस्कृति नै ई सीखै अर इण सीगै आपरी संज्ञानात्मक खिमता रो विकास पण करै। भासा सांस्कृतिक पिछाण रो सबळो माध्यम है। किणी भासा री ताकत उणरी सबद संपदा हुया करै। संसार रो समूचो व्यवहार सबदां माथै टिक्योड़ो है। जको मिनख पात्र अर प्रसंगानुकूल सही सबद-प्रयोग जाणै बो अनन्त विजय रो भागी बणै अर जको सबदां रो सटीक प्रयोग नीं जाणै बो लोकनिंदा पावै या पछै लोकहंसी रो पात्र बणै। अेक लेखक सारू जरूरी है कै बो सबदां री परोटणगत पेटै सावचेत रैवै। सामान्य रूप सूं भी जिणनै परोटणो हुवो, उणरी परकत नै जाणणो जरूरी हुवै। परकत पिछाण्यां बिना कोई नै परोटणो संभव नीं हुवै, सबद भी इण रा अपवाद नीं है।

'सबद' संसार रो सबसूं मोटो यायावर है। औ मिनखां री जीभ रै उडणखटोळै में बैठ'र आखै जगत री सतत जात्रावां करै। मिनख जद कठैई जावै तो बो आपरै साथै भासा नै अवस लेय'र चालै। मारग रै जिण-जिण पड़ावां माथै रुकै, आपसी बोल-बंतळ में बठै भासावां रो मेळ हुवै। इण मेळ में सबदां रै आवागमन सारू खिड़कियां खुलै। अेक भासा रा सबद दूजी भासा में आवै अर समै प्रवाणै बरतीजण लागै। समै री छाप सूं कदै ई आं सबदां री ध्वनि बदळै, कदै अरथ बदळै तो कदै दोनूं ई बदळ जावै। घणी बार तो इयां हुवै कै सबद रो मूळ पिछाणणो घणो अबखो काम हुज्यावै, पण अबखो काम भी कोई नै तो करणो पड़सी। इयां ई समान अरथ वाळा सबदां नै आडैकट काम में लेवणां सही कोनी। बां में भी देस, काळ, परिस्थिति अर स्थिति रै मुजब अरथ ढूंढणो पड़ै। 'चालै जियां ई चालण द्यो' वाळी शैली सूं कित्ता दिन काम चालसी ? अेक अरथ वाळा होवण रै बावजूद 'चावळ' री ठौड़ 'चावळ' अर 'अखत' री ठौड़ 'अखत' नै काम में लेवणो पड़ै। माण बधावण सारू 'चावळ चढाणो' ई कैवणो पड़सी 'भात' चढावणो का पछै तंदुळ, अखत या साळ चढावणो नीं कैय सको। मायरैदारां ताणी भात बणाईजै तो तीसरै रा चावळ रांधीजै, आंरी अदळा-बदळी स्वीकार कोनी करीज सकै। खेती चावळां री ई करीजै, तंदुळ, साळ अर अखत री नीं। इयां ई कोई मिनख आपरै गांव नै तो सुरग कैय सकै, पण गांव में रैवणियां नै सुरगवासी कैय'र देखो। भूमि सूं 'भोम' सबद बण्यो है, पण 'भूमिका' सारू 'भोमका' काम में लेवणो भारी भूल मानीजसी, क्यूंकै 'भोमका' तो समसाण सारू रूढ हुयग्यो। इणी गत बाळण सारू काम में लेवण वाळी सूखी लकड़ी नै बळीतो, काठ, इंधण आद नामां सूं जाणीजै, पण आं सगळां री आप-आपरी ठौड़ है। चूल्है कनै बळीतो, मुसाणां में काठ, बेचण सारू इंधण सबद काम में लेईजै। ब्यांव रै बगत घर में सबसूं पैलपोत सूखी लकड़ी ई ल्याईजै, पण इणनै 'मुगदणो' नाम सूं पुकारीजै, उणरा

गीत गाईजै। ब्यांव में बळीतो, काठ या इंधण बोलणो अपसुगन मानीजै। इण वास्तै चंवरी सारू काम में लिरीजण वाळी लकड़ी नै 'समीधा' कहीजै। अेक-अेक सबद री आपरी सत्ता है अर सत्ताधारी आपरै आसण माथै ई ओपै।

लारलै दो-तीन दसकां में हिंदी हुवो भलां ई राजस्थानी, दोनां में परिमाण री दीठ सूं सिरजण में मोकळी बधोतरी हुई है, पण इण बधोतरी में सबदां नै मनमानै ढंग सूं परोटण री प्रवृत्ति सामनै आई है। घणकरां कनै तो सबदां री सही वर्तनी अर अरथ-गर्भिता कानी ध्यान देवण री फुरसत ई कोनी। भासा रै प्रति जिज्ञासा-वृत्ति दिनोदिन घटती निगै आवै। आज री पीढी बिहारी री 'अनबूड़े बूड़े तरे जे बूड़े सब अंग' वाळी बात सूं आंख चुरावती निगै आवै। सबदां नै निरजीव दांई बरतै, वांरी आतमा नै देखण री खेचळ कुण करै? इयां लागै जाणै भासा वाळै समदर रै पार जावण अर गैराई नापण री चाहत मंद पड़गी। फगत किनारै पूगण में ई पोमीज रैया है, जदकै लेखक, मीडियाकर्मी, प्रशासक, शिक्षक, नेता, वक्ता आद सारू तो खास जरूरी है कै सबदां री गैराई सूं परिचित हुवै। आम आदमी सारू तो भासा रो मतलब इत्तो ई है कै बो आपरी बात नै जियां-तियां सामलै ताणी पुगा देवै अर सामलै री खुद समझ लेवै, पण लेखक अर शिक्षक तो इत्तै सूं संतोष नीं कर सकै। बांनै व्यष्टि री बजाय समष्टि रो ध्यान राखणो जरूरी है।

''उपजहिं अनत अनत छवि लहहिं'' कैवतां गोस्वामी तुलसीदासजी इण बात रो साफ संकेत करै कै रचना जलम कठै ई लेवै अर सोभायमान कठै ई और जाग्यां हुवै। दूजै सबदां में बात करां तो 'रचना' रचनाकार री कलम सूं पैदा हुवै अर पाठक रै काळजै में सादर विराजमान हुवै। इण दीठ सूं रचनाकार रो औ दायित्व हुवै कै बो पाठक नै सुभग संदेस देवै, संदेह नीं। संदेह अलंकार में भी छेवट असली संदेस फूटणो जरूरी हुवै। कलमकार या वक्ता आपरी बात नै कैवण सारू ठावा सबदां नै काम में लेवै, आ जरूरी है। अेक ई अरथ सारू काम आवण वाळा मोकळा सबदां मांय सूं प्रासंगिक अर पूरो अरथ देवण वाळो सबद छांटै। असल में मानखै रो इतिहास धरम अर राष्ट्रीयता सूं नीं जाणीजै, उणनै जाणण सारू भासायी अर छेत्रीय आधार खोजणा पड़ै। किणी ठौड़ री भासा सीधी-सीधी जातीय पिछाण या राष्ट्रीयता सूं नीं जुड़ै वरन जन-समूह खुद आपरी पिछाण सारू आपरी भासा नै जातीयता अर राष्ट्रीयता सूं जोड़ै। ''कोस कोस पर बदळै पाणी, चार कोस पद बाणी'' वाळी बात नै मानतां किणी भासा रै मानकीकरण नै सौ टका अंगेजणो सौरो काम कोनी पण भण्या-गुण्या लोगां अर खासकर लेखक-कवियां-शिक्षकां सूं इतरी उम्मीद तो जरूर रैवै ई है कै बै जिण भांत री सबदावळी काम में ले रैया है, उणसूं बांरी भासा रो सम्मान तो बण्यो रैवणो चाईजै। जे आपणै सबदां सूं भासा उपहास या जुगुप्सा री भागी बणै तो पछै आपां नै हियै में कांगसी फेरणी ई पड़सी।

अबार राजस्थानी लेखन में बरत्यूं री भासा रै नाम माथै धड़ल्लै सूं सबदां रो मनमान्यो प्रयोग होवण लाग्यो है। भासाविज्ञान में सबदां रै उच्चारण अर वर्तनी री दीठ सूं

जका-जका दोष बतायोड़ा है, बां दोषां सूं दूषित सबदावली नै 'बरत्यूं री भासा' कैय मतोमती काम में लेवणो, मायड़भासा साथै अन्याय करण जैड़ो काम है। किणी भासा री मौखिक सबदावळी में दोष आवणो सुभाविक बात है, पण उण दोष रो निवारण करण री बजाय उणनै धकोधकी आपरी भासा री पिछाण बणावणो आपरै पगां कुवाड़ी बावण जैड़ो काम है। बिना किणी रचना या रचनाकार रो नाम लियां, थोड़ाक दाखलां सेती बात रो खराखरी खुलासो करां :

1. म्हे तो बोपारी हां, ढांढा खरीदां। बेचवाळी है के थारै ?

2. अस्पताळ में बापू रै मूत री जांच कराई, पीळियो आयो।

3. पोसाळ में पढणियां छोरा-छोरियां री संख्या सूचनापट्ट माथै लिख्योड़ी रैवणी चाईजै।

4. म्हैं आज अजमेर गयोड़ो हूं। दो दिन बठै ई रैस्यूं।

5. म्हे भी अबार बीकानेर पधारेड़ा हां। दो-चार दिन अठै ई बिराजस्यां।

ब्होत-सा लिखारां रै दिमाग में आ बात बैठगी कै ओछा अर कमतर सबद ई राजस्थानी री पिछाण है। बै जाणबूझ'र इसा सबदां नै काम में लेवै। इण भांत रा जाण्या-अणजाण्या प्रयोग भावी पीढ़ी नै भ्रमित करण रै साथै मायड़भासा रै प्रति लोगां री श्रद्धा नै कम करण रो काम करै। ऊपर आयोड़ै अेक नंबर वाक्य ''म्हे तो बोपारी हां, ढांढा खरीदां। बेचवाळी है के थारै ?'' मांय 'ढांढा' सबद माथै विचार करां। 'ढांढो' गाय, भैंस आद चौपायै जानवरां रो सूचक सबद है, पण औ सबद उण अवस्था वाळै मवेशियां रो सूचक है, जका कीं काम रा कोनी रैया। ढांढै रो अेक अरथ मूरख अर गुणबायरो भी हुवै। आपरै सुभाविक गुण सूं हीण मिनख अर जानवर ढांढो कहीजै। इण वास्तै गायां-भैंस्यां रा बोपारी, पशुवां रा बोपारी, जिनावरां रा बोपारी कैवै तो ठीक है, पण ढांढां रा बोपारी कैवणो उपयुक्त कोनी। ढांढां नै कुण खरीदै ? जियां कपड़ां रो ई अेक नाम 'पूर-पल्ला' है तो कांई कपड़ां रै बोपारी नै 'पूर-पल्लां रो बोपारी' कैवां। मायरै सारू कपड़ा ल्यावण जावतै कोई परिवार नै कैय'र देखो कै 'पूर-पल्ला' खरीदण जावो के ? देखो के प्रतिक्रिया हुवै ? घास-फूस नै आम बोलचाल में 'कचरो' भी कैईजै, पण कदैई 'कचरै री टाल' नाम लिखेड़ो देख्यो ?

राजस्थानी इतरी समृद्ध भासा है कै इणमें अेक-अेक चीज सारू उणरी अवस्था अर उपयोग रै हिसाब सूं कई सारा सबद उपलब्ध है, बांनै बांरै सही संदर्भ में ई प्रयुक्त करणा चाईजै। अेक उदाहरण देखो- सबद है 'मोचड़ी'। जूतो, जूती, खल्लो, खूंसड़ो, खेटर इण रा ई नाम है, पण सगळा अेकदम सारिखा कोनी। ('जूतां री दुकान', मोचड़ी हाऊस या जूतियां आद नाम तो मिल जासी, पण कठैई खल्लां री दुकान या खूंसड़ां रा बोपारी देख्या के ? बिस्यो ई मामलो ढांढां रा बोपारी में है।) बडा मिनखां सारू मोचड़ी या मोजड़ी अर

सामान्य लोगां सारू जूतो-जूती कहीजै। जे बींद-बींनणी पैरै तो 'बीनोटा' नाम सूं पुकारीजै। थोड़ो पुराणो पड़ज्यावै तो वो खल्लो, खूंसड़ो कहीजण लागै। आं मांय भी फरक है। टांका खुल'र खोळो हुज्यावै या फीडो हुज्यावै तो वो खल्लो है अर ऊपर सूं चिकणाई खुस ज्यावै, पाणी आद सूं भीज'र करड़ो पड़ जावै तो खूंसड़ो बाजै। बार-बार टांका लगा-लगा अर तळै पर तळो चढ़ावतां जकी जूतियां मोकळी भारी हुज्यावै अर साव फाटण रै कगार माथै आज्यावै, जद वांनै 'खेटर' या 'खेटरखल' कहीजै। कोई नै कूटणो हुवै तो बीनोटा मारो या मोचड़ी मारो नीं बोलीजै। जूता मारो, खूंस मारो, खल्ला मारो या पछै खेटर मारो कहीजै। खेटर री मार सबसूं कसूती हुवै। 'जूतां सूं कुटीजणो अर जूत्यां सूं कुटीजणो' में भी मोकळो आंतरो है। इण वास्तै आपणी नई पीढी नै बरत्यूं री भासा रै नाम माथै ढांढा खरीदां, डोका बेचां, टुकड़ा खावो, पूर पैरो जिस्या प्रयोगां री हठधरमिता छोडणी चाईजै।

दूजोड़ो वाक्य भी इणी मनोबिरती रो परिणाम है। 'अस्पताळ में बापू रै मूत री जांच कराई, पीळियो आयो'। सामान्य रूप सूं इणरो अरथ समझ में आवै पण 'मूत' री ठौड़ 'पेशाब' सबद काम में लेवणो चाईजतो। राजस्थानी में मिनख रो पेशाब, गाय रो छिंगास, गधै, कुत्तै अर भैंस रो मूत, ऊंट-सांढ रो चीढ / चीड़ कहीजै। जद कोई आपरी मूळ बिरती सूं नीचै गिरै, जो सामलो रीस बळतो गाळ काढ'र कैवै कै ओ 'फलाणियै रो मूत' है। इयां ई हिंदी-संस्कृत सूं अनुवाद करती वेळा 'गोमूत्र' नै 'गाय रो मूत' लिखणो भी बडी भूल है, उण सारू आम बोलचाल में 'गोमूत्र' रो अपभ्रंश सबद 'गूंत' प्रचलन में आयग्यो। 'गूंत' लिखो या 'गोमूत्र' भी लिखो तो कोई बुराई कोनी, पण 'गाय रो मूत' लिखणो तो कत्तई आपत्तिजनक है। तीजो वाक्य भी कमोबेस इणी प्रवृत्ति रो शिकार है। पोसाळ में पढणियां नै लड़का-लड़की, छात्र-छात्रा कैवणो राजस्थानी कोनी अर 'छोरा-छोरी' कैवणो राजस्थानी है, आ जिद किण काम री ? पछै तो आप छोरा-छोरी ई क्यूं कैवो 'टींगर-टींगरी' लिखो, आप वाळी दीठ सूं तो और ज्यादा राजस्थानी लागस्यो। कूंकूं पत्री छापो उणमें भी वर-कन्या री ठौड़ 'टिंगर-टींगरी' लिखो। असल में हरेक सबद नै हिंदी सूं न्यारै-निरवाळै रूप में लिखण री हठधरमिता भासा रो रूप बिगाड़ण अर उणनै कमजोर करण रो काम करै। शिक्षक नै 'सिक्सक', विमर्श नै 'विमरस', आदर्श नै 'आदरस', मोक्ष नै 'मोक्स', निरीक्षण नै 'निरीक्सण', प्रमुख नै 'परमुख' लिखण सूं राजस्थानी रो कितरोक भलो हुसी, आ सोचण री बात है। बोलण में तो उच्चारण अवयव अर जलवायु री मजबूरी समझ में आवै पण लिखण में तो कोई मजबूरी कोनी। पछै अशुद्ध क्यूं लिखां ? शुद्ध लिखां तो बरत्यूं री भासा कोनी अर अशुद्ध लिखां तो अटपटो लागै, इण कारण ब्होत-सा आम व्यवहार में आवण वाळा सबदां नै बरतणां ई छोड दिया। आज रा राजस्थानी लेखक सौ मांय सूं अस्सी बार 'विद्यालय अर विद्यार्थी' री बजाय 'इस्कूल अर

इस्टूडेण्ट' लिखै। इणनै कांई मानां? कांई राजस्थानी सारू 'विद्यालय अर विद्यार्थी' सबद त्याज्य है। पछै 'स्कूल' नै 'इस्कूल' अर 'स्टूडेण्ट' नै 'इस्टूडेण्ट' लिखण रो कांई औचित्य? इयां ई टूणामेण्ट, इस्पेसल, आपरेसण आद आगत सबदां री कहाणी है। असल में औ 'प्रयत्न लाघव' या 'मुख-सुख' रै कारण आयोड़ो उच्चारण-दोष है। दोषयुक्त रूप नै खुद री भासा री पिछाण बतावणो, कितोक सही है, खुद ई सोचो।

चौथो वाक्य है 'म्हैं आज अजमेर गयोड़ो हूं। दो दिन बठै ई रैस्यूं।' इणमें 'गयोड़ो हूं' अर 'बठै' दोनूं प्रयोग भासाविज्ञान री दीठ सूं अशुद्ध है। घणकरो सो नागौर जिलो इण दोष रो शिकार है। औ स्थानीयता रै प्रभाव सूं दुषित रूप है। सही रूप हुसी- 'म्हैं आज अजमेर आयोड़ो हूं, दो दिन अठै ई रैस्यूं'। इयां ई अेक प्रयोग है-''म्हारो नाथूसर गयोड़ो है'' मतलब कै 'म्हैं नाथूसर जाय'र आयोड़ो हूं'' या ''म्हैं नाथूसर री जात्रा कर चुक्यो''। आम बोलचाल में तो कोई बात कोनी, पण इण रूप में कविता अर आलेख में परोटणो अर उणनै जनभासा री संज्ञा देवण री जिद भळै। इयांकली अेक अशुद्धि आजकालै हिंदी में आम हुंवती जा रैयी है-''मैंने यह काम करना चाहिए'' या ''उन्होंने फलानी जगह जाना चाहिए''। अठै 'मैंने' री ठौड़ 'मुझे' अर 'उन्होंने' री ठौड़ 'उन्हें' होवणो चाईजै, पण आडैकट इयां ई बोलै अर इयां ई लिखै। स्यात आपनै औ हिंदी वाळो प्रयोग अखरतो हुवैला, बियांई आपणो प्रयोग भासा रा जाणीजाण लोगां रै कानां में बटीड़ ज्यूं लागै।

पांचवों वाक्य ''म्हे भी अबार बीकानेर पधारेड़ा हां, दो च्यार दिन अठै ई बिराजस्यां'' है, जिणरो अरथ सीधो-सीधो समझ आवै, पण 'पधारेड़ा' अर 'बिराजस्यां' रो प्रयोग कबाड़ो करग्यो। औ प्रयोग आपरी भासा नै रूपाळी अर संस्कारित बणावण री खपत में हुयोड़ो है, जको अणजाणपणै री उपज है। आपणै अठै खुद नै छोटो अर सामलै नै मोटो समझण, बणावण, बतावण री शिष्टाचारी परम्परा है। अेक ई भाव सारू खुद रै वास्तै दूसरो सबद अर दूजां वास्तै दूजो सबद उपलब्ध है। छोटां सारू, समान ऊमर वाळां सारू अर बडां सारू न्यारा-न्यारा संबोधन अर सबद काम में लिया जावै। खुद सारू 'आयोड़ा, आयोड़ो' अर 'रैस्यां, रैस्यूं' कहीजै तो सामलै वास्तै 'पधारेड़ा, पधारेड़ो' अर 'बिराजस्यो' सबद काम में लेवणां चाईजै। इयां ई सांमला फरमावै, आपां अरज करां; सामला आरोगै, आपां खावां; सांमला पोढै, आपां सोवां; सांमला बिराजै, आपां बसां, सांमलां री मोचड़ी, आपणी जूती; सांमलां रो बंगलो, आपणी झूंपड़ी; सांमलां री पोशाक, आपणां कपड़ा इत्याद प्रयोग आपणी भासा री सांवठी धरोहर रा ऊजळा आभरण है। जिण भांत स्थानीय परिवेश रै हिसाब सूं सभ्यता अर संस्कृति रो विकास हुवै, उणी भांत स्थानीय परिवेश अर जरूरत रै हिसाब सूं सबद में नयो अरथ विकास लेवै। उण अरथ विकास री जात्रा नै सावळसर जाण्यां बिना उणरो प्रयोग खतरै सूं खाली नीं हुया करै।

सबदां साथै इयांकली छेड़खानियां करण में आपां उस्ताद हां। ब्होत सा इसा सबद है, जकां रो का तो आपां वर्तनीगत रूप बिगाड़ दियो अर का गळत अरथ में बांरो प्रयोग

करणो तेवड़ लियो। मतलब नै 'मतबल', पकड़ो नै 'कपड़ो', छानो नै 'अछानो', आदमी नै आमदी, फालतू नै 'बेफालतू' कैवणो अर लिखणो राजस्थानीकरण मानीजण ढूको। असल में व्याकरण री दीठ सूं औ वर्ण-विपर्यय दोष है, जको अल्पज्ञता, अज्ञानता, अशिक्षा, श्रवण री कमी, उच्चारण अवयवां रै दोष आद सूं आवै, पण इण दोष नै साहित्यिक रचनावां में बरतण रो चाळो देख'र सबदां री आतमा कांपती निगै आवै। सबदां रै रूढ, यौगिक अर योगरूढ रूप री बात हर व्याकरण में देखी जा सकै। इणनै नकारण रो कोई कारण नीं है पण 'मोर रै तो बोलणो सारै है, बरसै तो इंद्र जणा हुवै।' आपणै तो कैवणो सारै है, सांमलो मानै का नीं मानै, इण पर आपणो कोई जोर नीं चालै। हलांकै इण बीमारी सूं हिंदी भी अछूती कोनी, पण राजस्थानी में तो मोटो चाळो देखण नै मिलै। जाण-बूझ'र हिंदी सबदां नै बिगाड़'र राजस्थानी बणावण रो प्रयास भासा साथै मोटै धोखै सूं कम कोनी। भक्तिमती मीरां रै पदां रो संपादन करतां मोटा विद्वानां आपरी अक्कल लगाई अर सगळी जाग्यां 'न' नै 'ण' में बदळ दियो, अबै देखो खटको। बै लिखै—'बसो मोरे णैणण में णंदलाल'। कोई वांनै पूछै कै कुणसी राजस्थानी में 'णैणण' अर 'णंदलाल' सबद है। 'बसो मोरे नैनन में नंदलाल' जैड़ी फूठरी ओळी नै 'णैणण में णंदलाल' कर'र राजस्थानी री बेकूंटी काढण रो काम कर न्हाख्यो। पूरी मीरां पदावली में इयांकलो कबाड़ो देख'र मीरां अर राजस्थानी दोनूं रोवै, पण बांरा आंसुआं नै पूंछण वाळो कुण? 'न', 'ण', 'ल' अर 'ळ' आं चार वरणां री बदळा-बदळी आज री राजस्थानी नै इतरी अव्यावहारिक बणावै कै पूछो मत। इण दिस में सावचेती सूं ध्यान देवणो जरूरी है।

अेक बात आ भी है कै जद आपां राजस्थानी री लिपि रै रूप में 'देवनागरी' नै स्वीकार करी है तो पछै उणरै नेम-काण-कायदां नै भी अपणावणा ई पड़सी। देवनागरी अेक वैज्ञानिक लिपि है, जिणमें अेक वरण सारू एक ध्वनि है तो अेक ध्वनि सारू अेक वरण। जियां बोलीजै, बियां ई लिखीजै। इण वास्तै किणी अेक सबद री वर्तनी अेक ई हुसी, न्यारी-न्यारी नीं हो सकै। जे उच्चारण में कोई बाधा है तो स्वीकार है, पण वर्तनी तो शुद्ध राखणी ई पड़सी। बोलण में बीकानेर, जोधपुर रा घणकरा लोग 'राम-राम' नै 'रोम-रोम' बोलै, पण लिखणो तो 'राम-राम' ई पड़सी। संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय अर कारक रा काण-कायदां नै तो मानणो ई पड़सी। अठै अेक और बात कानी ध्यान देवण री दरकार है कै लेखक तो स्वयंभू है, बो लिख'र निरवाळो हुयो, सही-गळत अर शुद्ध-अशुद्ध री बात पाठक जाणै, पण शिक्षक नै तो सबद री संरचना, विकार, शुद्ध अर अशुद्ध रो कारण समेत खुलासो करणो ई पड़ै। बो अेक ई सबद रा दो या चार रूपां नै सही कियां बता सकै? उणनै तो अेक अर शुद्ध रूप बतावणो पड़ै। आज री साहित्यिक पत्रकारिता नै इण दीठ सूं कमर कसणी पड़सी। अब समै आयग्यो, जद आपां नै भासा रै मानक रूप कानी बधणो पड़सी। अस्तु!

◆◆

शंकरसिंह राजपुरोहित

उल्थै रै बूतै रातो-मातो हुंवतो राजस्थानी गद्य-साहित्य

अंतरराष्ट्रीय बजारवाद री उमड़ती आंधी अर वैश्वीकरण रो तेज तूफान जगत री तमाम मातृभासावां नै आपरी चपेट मांय लेय लीनी है। दस-बारै बरस पैली यू.अेन.ओ. री अेक रिपोर्ट मांय संसार री सगळी मातृभासावां सारू छायोड़ै इण संकट माथै गैरी चिंता प्रगट करीजी ही। भारतीय भासावां भी इण बवंडर सूं बारै नीं है। संसार री सगळी मातृभासावां अर उणरै साहित्य रै आपै माथै मंड्योड़ै संकट रा आं बादळां नै छांटण सारू 'उल्थै री विधा' ईज कीं सींव तांई कारगर सिद्ध व्है सकै। किणी पण भासा रा प्राण उणरै साहित्य मांय ई सांचरिया करै अर उल्थै रै मार्फत आपरै थोड़ै-थोड़ै प्राणां री थरपणा अेक भासा दूजी भासा रै मांय कर सकै। इण भांत री आफळ सूं दोनूं ई भासावां रै समूळ नष्ट हुवण रो खतरो नीं रैवैला। केई लोककथावां मांय ई आपां देखां कै वां कथावां रै नायक-नायिका रा प्राण सात समंदर पार पींजरै मांय बंद किणी तोतै कै मैना रै मांय बसै, जठै तांई पूग'र बांरी गाबड़ मरोड़णी खलनायक रै वस री बात नीं रैवै। सागी आ री आ बात आपां उल्थै पेटै ई कैय सकां कै किणी अेक भासा सूं दूजी भासा मांय हुयोड़ै उल्थै में भी उण मूळ भासा रा केईक सबद अर उण भासा री रंगत अर वठै री संस्कृति सुरक्षित रैय सकै। उल्थै रै मार्फत भासावां रै इण आपसी आदान-प्रदान सूं मातृभासावां रै समूळ नष्ट हुवण रो खतरो कीं हद तांई टाळ्यो जाय सकै।

उल्थै री महत्ता सारू अठै औ कैवणो भी गळत कोनी कै जे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर री 'गीतांजळी' रै गीतां रै अंग्रेजी उल्थै

ठिकाणो :
राजपुरोहित-रैवास
कृपाळ भैरूं मिंदर चौक
सर्वोदय बस्ती
बीकानेर-334004
मो. 7610825386

 ISSN : 2320-0995

रो संस्करण आथूणै समालोचकां रै साम्हीं नीं आवतो, तो बांनै 'नोबल पुरस्कार' इत्तो सोरो नीं मिलतो। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं ई प्रकाशित 'रवीन्द्रनाथ रो बाल-साहित्य' (भाग पैलो अर दूजो) री भूमिका 'कवि-कथा' में लीला मजूमदार लिखै, ''कवि रवीन्द्रनाथ कुल इग्यारै बार विदेस-जात्रावां करी। सन् 1912 री जात्रा मांय घणाई ख्यातनांव अंग्रेज लेखकां, कलाकारां अर विचारकां सूं बांरो तगड़ो भायलापो हुयग्यो। चावा कवि येट्स अर कलाकार रोथेन्स्तायन बांरा सबसूं बत्ता श्रद्धावान प्रशंसक बणग्या। बांरै प्रोत्साहन सूं कवि आपरै कीं गीतां अर कवितावां रो अंग्रेजी उल्थो छपायो। अै रचनावां 'गीतांजलि' नांव सूं छपी। (इणी नांव सूं अेक बांग्ला गीत-संग्रै पैलां ई छप चुक्यो हो।) अंग्रेजी 'गीतांजलि' रो विदेसी पाठकां ऊपरां गैरो असर पड़्यो। इण माथै कवि नै 'नोबेल पुरस्कार' मिल्यो, जिको संसार रो सै सूं सिरै अर दुरलभ पुरस्कार है।''

खैर, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर री 150वीं जयंती रै टाणै बांरी महताऊ कृतियां रो न्यारी-न्यारी भासावां मांय उल्थो करावण री बडी कार्ययोजना बणायी, जिणरै त्हैत राजस्थानी में ई बांरी केईक गद्य-साहित्य री पोथ्यां रा राजस्थानी उल्था छप्या। इण सूं ई पैलां लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रो रवीन्द्रनाथ टैगोर री कहाणियां रो करियोड़ो उल्थो 'रवि ठाकरां री बातां' नांव सूं साम्हीं आय चुक्यो हो। फेर तो मनोहर सिंह राठौड़ री अनूदित 'रवीन्द्रनाथ टैगोर री कहाणियां', रामस्वरूप किसान रै अनूदित करियोड़ो नाटक 'राती कनेर', पूर्ण शर्मा 'पूरण' कानी सूं अनूदित उपन्यास 'गोरा', बुलाकी शर्मा रै अनूदित 'रवीन्द्रनाथ रो बाल साहित्य' (दो भाग) अर सागै ई बांरी चावी कृति 'गीतांजळी' रै गीतां रो सरस राजस्थानी उल्थो कवि-कथाकार मालचंद तिवाड़ी रै मारफत साम्हीं आयो अर राजस्थानी उल्थै रै रूप में अै सगळी पोथ्यां ई साहित्य अकादेमी सूं बगतसर छपी भी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर री भांत ई राजस्थानी रा बाजींदा कथाकार विजयदान देथा (बिज्जी) रै बारै में ई आ बात कैयी जाय सकै। जियां ई बिज्जी री राजस्थानी लोककथावां रै लूंठै संग्रै 'बातां री फुलवाड़ी' री कीं टाळवीं कहाणियां रो पैली हिन्दी अर पछै दूजी प्रांतीय भासावां रै सागै अंग्रेजी में उल्थो छपियो तो बिज्जी री भारत में ई नीं, अंतरराष्ट्रीय कथाकार रै रूप में अेक लूंठी ओळखाण बणगी। इण बात रो जस साहित्य री 'उल्था विधा' नै ईज है कै टैगोर जियां ई पंदरै बरस पैलां बिज्जी ई नोबेल पुरस्कार सारू भारतीय साहित्यकार रै रूप में नामित करीज्या। इणरै टाळ उल्थै रै कारण ई बांरी कहाणियां माथै कीं हिंदी फिलमां ई बणी, जिणां में 'परिणति', 'दुविधा', 'पहेली' अर 'कांचळी' खास है। 'बातां री फुलवाड़ी' रै सगळा भागां रो अबै राजस्थानी सूं हिंदी उल्थो 'बातों की

बगिया' नांव सूं छप चुक्यो है। औ उल्थो बिज्जी रा सपूत कैलास कबीर अर शिष्य मालचन्द तिवाड़ी करियो।

बिज्जी री भांत ई डॉ. नृसिंह राजपुरोहित राजस्थानी रा ख्यातनांव कथाकार हा। राजपुरोहित भारतीय कथा-साहित्य री कीं टाळवीं कहाणियां रै सागै टालस्टाय री कहाणियां रो ई राजस्थानी में उल्थो करियो जको जोधपुर रै राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी सूं छपण वाळी 'परंपरा' पत्रिका में 'कथा भारती' अर 'टालस्टाय री टाळवीं कथावां' सिरैनांव सूं विशेषांक रै रूप में छपिया। नृसिंहजी नै गुजराती भासा सूं गैरो लगाव हो, क्यूंकै वांरो गांव खांडप गुजरात रै सीमावर्ती बाड़मेर जिलै में आवै। गुजराती लोक साहित्य रा मनीषी झवेरचंद मेघाणी राजपुरोहित जी रा आदर्श रैया तो पन्नालाल पटेल अर भोळाभाई पटेल बांरा समकालीन कथाकार हा अर बै बांरै लेखन रा मुरीद हा। डॉ. नृसिंह राजपुरोहित गुजराती रै काळजयी उपन्यास 'मानवी नी भवाई' अर 'धूड़ में पगल्या' रो साहित्य अकादेमी सारू उल्थो करियो, जिण सारू बांनै अकादेमी रो 'अनुवाद पुरस्कार' ई मिल्यो।

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं अनुवाद पुरस्कार बरस 1989 में सरू हुयो हो, पण पैलै साल राजस्थानी उल्थै पेटै कोई पोथी नीं आदरीजी। 1990 में पैलो पुरस्कार भास रै संस्कृत नाटक 'स्वप्नवासवदत्तं' रै राजस्थानी उल्थै 'सुपनो' सारू देवदत्त नाग नै दिरीज्यो। बियां तो साहित्य अकादेमी रो अनुवाद पुरस्कार अबार तांई पैंतीस रै नैड़ै राजस्थानी उल्थाकारां नै मिल चुक्यो है, जिणां री सूची अकादेमी री वेबसाइट माथै उपलब्ध है। इण सारू अठै बां उल्थाकारां अर उणां रै राजस्थानी में उल्थो करियोड़ी पोथ्यां रा नांव गिणावण सूं कोई सार नीं निकळै। हां, अठै आ बात जरूर राखूंला कै उल्थै रै इण खेत में तीजी पांती बीकानेर रा उल्थाकारां री रैयी है। मतलब कै सै सूं बेसी पुरस्कृत राजस्थानी उल्थाकार बीकानेर रा ईज है। चूंकि गुजरात प्रांत आपणै राजस्थान रै सींव लागतो प्रदेस है अर गुजराती-राजस्थानी भासा में समप्राणता ई रैयी है। इणी वास्तै नृसिंह राजपुरोहित रै सागै बीकानेर रा उल्थाकार रामनरेश सोनी हुवो कै जेठमल ह. मारू, कन्हैयालाल भाटी हुवो कै पछै डॉ. मदन सैनी, घणकरा उल्था गुजराती पोथ्यां रा हुया है अर इणां रो राजस्थानी उल्थो करती बगत मूळ कृति रै हिंदी उल्थै रै संस्करण रो सहारो लिरीज्यो।

भारतीय साहित्य री अबार लग इक्कीस नैड़ी पोथ्यां रो उल्थो कर चुक्या राजस्थानी रा ऊरमावान उल्थाकार दुलाराम सहारण रो इण बाबत सुथरो सोच है कै, ''राजस्थानी में किणी रचना रो उल्थो करणो सगळी भारतीय भासावां में उल्थो करण सूं अबखो काम है। औ इण वास्तै कै राजस्थान रो पाठक हिंदी में बित्तो ई डूब्योड़ो है जित्तो

राजस्थानी में। अबार तो औ भी कैयो जाय सकै कै राजस्थानी सूं बेसी हिंदी में डूब्योड़ो है। राजस्थानी में उल्थाकार अमूमन हिंदी सूं राजस्थानी में उल्थो करण वाळा है। अैड़ी स्थिति में उल्थाकार रै साम्हीं संकट औ रैवै कै बै आपरै मूळ स्रोत हिंदी सूं दूजी भासाई संरचणा करता थकां पाठ रो रसास्वाद करै। अैड़ी गत मांय आपरी भासा रै उण मूळ स्रोत मतळब ठेठ राजस्थानी सरूप तांई पूगणो पड़ै, जको आ बतावण में सिमरथ होवै कै हिंदी अर राजस्थानी मांय रात-दिन रो फरक है। उल्थाकार नै उण राजस्थानी परिवेश री संरचणा करता थकां अनुवाद करणो पड़ै जको परिवेश राजस्थानी पाठक नै आपरो निजू लखावै। राजस्थानी में करियोड़ो उल्थो जे आं दोनूं स्थितियां मांय खरो है तो ईज बो उटीपो उल्थो मानीजै, नींतर तो हिंदी रा 'का के की' री ठौड़ राजस्थानी रा 'रा रै री' करियां ई नाको निकळ सकै, पण अैड़ो उल्थो किणी भी सूरत में मुकम्मल उल्थो नीं मानीजै।''

दुलाराम सहारण रै साहित्य अकादेमी सारू अनूदित करियोड़ी कृतियां में रवीन्द्रनाथ ठाकुर रा 'च्यार पाठ', नारायण देसाई री गुजराती में लिख्योड़ी जीवनी 'अगनकुंड में खिल्योड़ो गुलाब' अर तकषी शिवशंकर पिळ्ळै री 'जेवड़ी' उल्लेखजोग है। इणरै टाळ आप महात्मा गांधी री मोकळी महताऊ पोथ्यां रै सागै मुंशी प्रेमचंद री कहाणियां, डॉ. भीमराव अम्बेडकर रचित 'जात-पांत रौ खातमौ', जोतीराव गोविंदराव फुले री 'गुलामगिरी', शरणकुमार लिंबाले री 'अक्करमाशी', जवाहरलाल नेहरू री 'कीं कागद बेटी रै नांव', काशीनाथ सिंह री 'कासी रौ अस्सी', कुसुम खेमानी री 'साच कैवती कहाणियां' अर अमृतलाल वेगड़ री 'रूपाळी नर्मदा' आद रो राजस्थानी उल्थो जसजोग काम तो है ईज, आं पोथ्यां रै प्रकासण रो काम ई बै आपरै बूतै करियो है, जदकै राजस्थानी में अनूदित घणकरी पोथ्यां साहित्य अकादेमी री 'अनुवाद योजना' रै त्हैत ई छपी है। हालांकै सहारण रै अनूदित करियोड़ी घणकरी पोथ्यां भी हिंदी रै माध्यम सूं ई राजस्थानी में आई है, पण भासा री पसम अर रंगत री दीठ सूं देखां तो लागै कै बै इणां रो उल्थो अनुवाद पेटै आपरी सोच अर मनगत मुजब ई करियो है।

उल्थै पेटै आ ईज बात अमूमन कैयी जावै कै इणमें भाव मूळ लेखक रा अर भासा अनुवादक री हुयां ई कोई उल्थो सिरै अर सरावण जोग मानीजै। किणी रचना रै उल्थै पेटै राजस्थानी समालोचक चेतन स्वामी उल्थाकार नै चेतावता थकां पोथी 'निरख-परख' में कैवै, ''अेक अनुवादक, सामान्य पाठक सूं कितरो ई बेसी क्रिति नै अनुभूत करै अर अनुवाद खतम होवतां-होवतां उण क्रिति सारू उणरै हिवड़ै में मूळ लिखारै जितरो ई हेत होय जावै। मैमावान राजस्थानी उल्थाकार किशोर कल्पनाकांत कैया करता कै, म्हैं काळिदास रो अनुवाद करूं तो काळिदास रै जोड़ाजोड़, गुरुदेव रो करूं तो साख्यात

रवीन्द्रनाथ अर शरत रो अनुवाद करूं तो म्हारै मांय शरत रै अलावा दूजो कीं होय ई नीं सकै। मूळ लिखारो म्हारै मांय थापित होय जावतो, म्हारी तो फगत भासा-भासा होवती। ....इसड़ा उथळणहारां खातर अनुवाद दोरो नीं होवै। अबार राजस्थानी रा घणा लूंठा गद्यकार जहूरखां मेहर री मारफत करियोड़ो अेक अफ्रीकी उपन्यास रो उथळो, थोड़ो-सो बांचण मांय आयो, पण उणरी कोर-कोर राजस्थानी ही। अैड़ी हतोटी, खामचाई, कळा जिणरै मांय बस जावै, जिका मूळ अर लक्ष्य दोवूं भासा मांय पारंगत है, आ विधा फगत बां लिखारां सारू ईज है। चेतै राखज्यो! अनुवाद दूजां रै खल्लै (जूत) मांय आपरो पग खसोलण री विधा नीं है। जिका माडाणी अर बिना ऊरमा अनुवाद जियांकलो झीणो काम कर रैया है बांनै थोड़ो'क ठबक'र विचार करण री दरकार है कै जिकै नै 'रस्सी' खातर राजस्थानी मांय 'जेवड़ी' सबद नीं ऊकलै बो किणी उथळै री खेचळ करै ई क्यूं? असल मांय अनुवाद अभ्यास मूलक चतराई रो काम है।''

आपां जद किणी रचना रो राजस्थानी उल्थो करां तो आपां नै कम सूं कम आपां री भासा में तो पारंगत होवणो ई चाईजै। बियां तो उल्थै सारू किणी उल्थाकार खातर औ जरूरी है कै बो मूळ कृति अर खुद रै उल्थै री भासा, दोनूं माथै समान अधिकार राखै। अबै अनुवाद रा डिजिटल माध्यमां रै आवण सूं दूजी भासावां रै किणी सबद रो सागी अरथ अर उणरो मूळ भाव भी समझ्यो जाय सकै, पण उल्थाकार री कम सूं कम आपरी भासा माथै तो पकड़ होवणी ई चाईजै। उल्थै रै इण काम सूं उणरी खुद री भासा औरूं टकसाळी होय सकै।

भारतीय भासावां रै केई नामी-गिरामी कवियां री काव्य कृतियां रो उल्थो करण रै सागै 'क्राइम एंड पनिशमेंट' जैड़ी दुनिया री काळजयी गद्य औपन्यासिक कृति रो राजस्थानी उल्थो करणिया ख्यातनांव साहित्यकार चन्द्रप्रकाश देवल आपरै अनुवाद-कर्म बाबत दुलाराम सहारण सूं बंतळ करतां बतायो कै, ''राजस्थानी अनुवाद अेक अबखो काम है। पण अनुवाद रै मारफत बीजी भासा री रचना आवै, उणसूं खुद री भासा भी मजबूत बणै। बीजी भासावां में कांई लिखीजै, उण भासा रै कवियां रो अंदाजेबयां कांई है, अैड़ा अलेखूं सवाल अनुवाद बांचनै सुळझै। म्हैं जिका अनुवाद करिया वै आप-आपरी भारतीय भासा रा नामी कवियां री रचनावां रा हा, पण असल में औ म्हारो अर म्हारी भासा रो इम्तहांन हो। अनुवाद रै मारफत खुद री भासा री सिमरधी अर कंगाली दोनुवां रो ठाह लागै। लोक अर कोश दोनूं खंगाळीजै तद उल्थाकार ई मांजीजै। वो भासागत मजबूत बणै। वठैई बीजी भासा रै रचनाकारां नै पढां तद ठाह लागै कै कांई इयां भी सोचीज सकै। दोस्तोयेव्वस्की रै उपन्यास 'क्राइम एंड पनिशमेंट' रो म्हैं 'सजा' नांव सूं उल्थो करियो।

औ उपन्यास 750 पेज रो है। विश्व साहित्य पेटै बीस-तीस किताबां अैड़ी है जिकी क्लासिक मानीजै। उण गिणत भेळी इण पोथी नै म्हैं बांची तद चमत्कृत हुयो कै उण सागी बगत में आपणी भासा में कांई लिखीजै हो? आपां सामंती जुग में जीवै हा। आधुनिक री तो छोडो, आपां सोचै तकात ई नीं हा। जदकै दोनूं ठौड़ व्यवस्थावां अेक जैड़ी ही। अठै राजशाही तो वठै जार्ज व्यवस्था ही, अेक जैड़ी समस्यावां। म्हनै लाग्यो कै तद पछै औ फरक? सोचण जोग हो। इण फरक रै कारणै म्हैं जरूरी समझ्यो कै आपां री भासा में ई इण रचना नै लावणी चाईजै। अनुवाद पेटै अैड़ी मोकळी बातां है।''

राजस्थानी में छपण वाळी पत्र-पत्रिकावां में ई भारतीय साहित्य री प्रतिनिधि रचनावां रा राजस्थानी उल्था छपता रैया है। इणमें किशोर कल्पानाकांत रै संपादन में छपण वाळै 'ओळमों' री महताऊ भूमिका रैयी। परंपरा रै 'कथा भारती' अर 'टालस्टाय री टाळवीं कथावां' रै विशेषांक रो जिक्र ऊपर आय चुक्यो है। इणरै टाळ ई परंपरा रै 'हेमाणी' अर दूजा विशेषांकां (संपादक तेजसिंघ जोधा) में केई देसी-विदेसी कवितावां अर कहाणियां रो उल्थो छपियो। तेजसिंघ जोधा रै ईज संपादन में जोधपुर सूं 'माणक' पत्रिका री सरुआत हुई तो उणमें ई उल्थै रो काम करता रैया। इणमें पैली हरेक अंक में किणी अेक भासा रै कथाकार री कहाणी रो उल्थो छपतो। अबार माणक में कवितावां रै उल्थै माथै जोर है, जिणमें उल्थाकार रै रूप में मीठेस निरमोही अर डॉ. रमेश 'मयंक' रा नांव खास तौर सूं लिया जाय सकै। इणरै टाळ श्याम महर्षि रै संपादन में छपण वाळी 'राजस्थली' में ई बगत-बगत पर राजस्थानी अनुवाद छपता रैया है। नोहर सूं छपण वाळी 'हथाई' पत्रिका रै अेक पूरै अंक में सआदत हसन मंटो री इक्कीस टाळवीं कथावां रो राजस्थानी उल्थो डॉ. भरत ओळा करियो। डॉ. ओळा किसानां रै मसीहा सर छोटूराम रै विचारात्मक बीसेक आलेखां रो ई राजस्थानी में उल्थो करियो जको डॉ. हाकम नागरा रै संपादन में निकळण वाळी इणीज पत्रिका में विशेषांक रै रूप में छप्या है। राजस्थानी भाषा-साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर री मुख पत्रिका 'जागती जोत' में बगत-बगत पर राजस्थानी उल्था छपता रैया है। अबार भी आ कोसिस रैयी है कै इण पत्रिका रै हरेक अंक में भारतीय कै विदेसी भासा री किणी अेक टाळवीं रचना रो उल्थो छपै। अबार डॉ. नमामीशंकर आचार्य रै संपादन में छप्यै जागती जोत रै जुलाई, 24 रै अंक में भारत रा यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी री अेक कहाणी रो राजस्थानी उल्थो छप रैयौ है। आपां मांय सूं भोत कम लोगां नै आ जाणकारी हुवैला कै राजनेता रै सागै-सागै नरेन्द्र मोदी भी पैलड़ा प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी दांई कवि-हृदय रैया है। बांरा गुजराती में अेक कविता संग्रै अर कहाणी-संग्रै छप्योड़ो है। इणी संग्रै मांय सूं बांरी 'सेतु' नांव री कहाणी रो उल्थो

'बावजी चतुरसिंह राजस्थानी अनुवाद पुरस्कार' सूं आदरीज्या बाड़मेर रा बंशीधर तातेड़ करियो है।

उल्था विधा में आपरी पूरी ऊरमा सूं काम करणिया राजस्थानी उल्थाकारां रा जका नांव म्हारै साम्हीं आवै, उणां में अबार री घड़ी सरबश्री अर्जुनसिंह शेखावत, सोहनदान चारण, विनोद सोमानी 'हंस', कैलास कबीर, आईदान सिंह भाटी, रामस्वरूप किसान, कुंदन माली, भरत ओळा, उपेन्द्र 'अणु' कमल रंगा, डॉ. नीरज दइया, शंकरसिंह राजपुरोहित, कैलास मंडेला, रवि पुरोहित, मनोज कुमार स्वामी, कुमार अजय, डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा, वीरेन्द्र लखावत, संजय पुरोहित, डॉ. हरिमोहन सारस्वत 'रूंख' डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, राजूराम बिजारणिया, डॉ. नमामीशंकर आचार्य अर डॉ. गौरीशंकर प्रजापत आद रा नांव उल्लेख जोग है। राजस्थानी गद्य साहित्य में उल्थै री इण विधा नै लेय'र लेखिकावां रो कोई खास उछाव निजर नीं आवै, जको चिंता रो विसै है। राणीजी रै पछै डॉ. शारदा कृष्ण कवि काळिदास रै 'शाकुंतलम्' अर कीं दूजी कृतियां रो उल्थो करियो। अबार री बगत डॉ. कृष्णा जाखड़ रै देवेश राय रै बांग्ला उपन्यास 'गाथा तिस्ता पार री' अर गंगाधर गाडगीळ री मराठी आतमकथा रो 'अेक कीड़ी रौ महाभारत' सिरैनामै सूं करियोड़ो राजस्थानी उल्थो इण दिसा में नूंवी आस जगावै, क्यूंकै अै दोनूं भारतीय साहित्य री लूंठी अर महताऊ कृतियां है। मोनिका गौड़, विमला नागला, पूर्णिमा मित्रा, सीमा भाटी, ऋतु शर्मा आद कीं अैड़ा नांव है, जिणां इण कानी अवस कीं ध्यान दियो है अर इणां री उल्थै री इक्की-दुक्की कृतियां भी साहित्य अकादेमी कै पछै किणी दूजै स्रोत सूं साम्हीं आई है। राजस्थानी गद्य-साहित्य नै उल्थै रै मार्फत रातो-मातो करण सारू लेखिकावां नै भी बरोबर भागीदारी निभावणी चाईजै।

◆◆

माणक तुलसीराम गौड़

बकाई

केई लोग रुक-रुक'र बोलै। केई तोता बोलै तो केई बकायां खावै अर हकलावै। बापड़ा दौरा-सौरा बोलणो चावै। आपरै मन री बात कैवणी चावै, पण पूरी बात सावळ ढंगसर कैय नीं पावै। जिका मिनख उणां सूं हिंवळाई-निमळाई अर अपणायत राखै, बै तो उणां री बात सुण लेवै। उणां री मनस्या-ई जाण लेवै कै औ टाबर अर भलो मिनख कांई कैवणी चावै, पण जिका कुबधी मिनख होवै बै उण बेचारां रा मजा लेवै। उणनै चिड़ावै। उणरी कूंटियां कढावै। जद'क उणां नै ठा होवणो चाईजै कै हकलावणै अर बकायां खावणै मांय उण बेचारां रो कीं-ई हाथ नीं होवै है। बै का तो जनमजात-ई हकलावणिया होवै का पछै बोली सीखती बगत उणां माथै सावळ ध्यान नीं देवै, तो उणां री रुक-रुक'र बोलणै री आदत पड़ जावै। पछै आ ईज आदत उण रो जीवणभर साथ नीं छोडै अर उण टाबर रो बो अेब मानीजणै लागज्यावै।

म्हारै अेक भाई है जिको पांच-छह बरसां रो होयो जठै तलक तुतलावतो। उणनै म्हैं कैवता—''बोल, काकोसा।''

बो कैवतो—''तातोसा।''

''बोल भाई, चाचाजी।''

बो कैवतो—''ताताजी।''

''बोल बेटा, टाटा।''

बो कैवतो—''ताता।''

''कैय दै भाई, पापाजी।''

तो ई बो कैवतो—''ताताजी।''

ठिकाणो :
121, दूसरी मंजिल
फेज 1, मेन रोड
ग्रीनविष्ठा ले आउट
चिकबेलंदुर विलेज
करमेलाराम पोस्ट
बेंगलुरु (कर्नाटका)
पिन-560035
मो. 8742916957

ISSN : 2320-0995

मतलब उणरी भासा री वरणलाळा मांय फगत त थ द ध न ईज हा, बीजा कीं नीं।

अेक दिन बो पोसाळ सूं भागतो-भागतो आयो अर सांस भरीज्योड़ो उतावळो-सो कैयो। उणरो मतलब औ हो—''भाईसा-भाईसा म्हारी पोसाळ मांय अेक छोरो आयो जिको तोतो बोलै हो। म्हनै घणो मजो आयो।''

म्हैं कैयो—''कांई थारै सूं-ई बेसी।'' बो तो कीं ई समझ्यो कोनी, पण म्हैं घर रा सगळा-ई जणां हंस-हंस'र लोट-पोट होयग्या। हंस-हंस'र म्हारै पेट मांय बळ पड़ण लागग्या।

म्हारै अेक बाबोसा हा। बै हकलावता हा। बै केई आखर बोल नीं पावता अर खास कर'र 'स'। म्हारी दादी कैवती ही कै बाबोसा आपरै ब्यांव पछै पांवणचारी करणै गिया। बठै साळ्यां बारणो रोक लियो। बार छुडाई वास्तै कीं दूहो का पछै ओखिणो बोलणो पड़तो। बाबोसा नै बार छुडावणै वास्तै ओखिणो कैवणो हो, जिको बै गांव सूं सीख'र गिया हा :

आळै मांय पड़ियो झेरणो, छोडो साळ्यां बेरणो।

अठै बाबोसा री पंचायत होयगी। बाबोसा री जीभ आंटो खायगी। उणां रै तो परीक्षा री घड़ी आयगी ही। बाबोसा बोल पड़्या :

आळै मांय पड़्यो झझझ झेरणो,

छछ छोडो छछछछ छाळ्यां बेरणो।

उणां नै मरियां ई साळ्यां नांव आयो कोनी अर आपरो पिंड छुडावण वास्तै कैय बैठ्या छाळ्यां। साळ्यां तो औ कोतक सुण'र भाजगी अर केई बेराजी होयगी ही। बांनै सावळ समझाया अर बतायो कै कंवरसाहब थोड़ा तुतळावै। जणा जाय'र बै मानी। तुतळावै कांई है, अठै तो पूरी बारह ई बज्योड़ी ही। खैर जावण दो। किणरो ई इतरो लारो नीं पकड़णो।

म्हारै कडुंबै रै मांय दादोसा हा। जिका हकलावता अर कम सुणता हा। बोळा हा। घरवाळा कैवता कै थोड़ो ऊंचो सुणै। अेकर दीवाळी रै तिंवार माथै म्हे सगळा टाबर भेळा होय'र फटाका छोडै हा। जिण मांय लड़ां, छोटा अर मंझला बम ई भेळा हा। फटाका घणासारा छोड्या अर बठै घणो कचरो होयग्यो हो। दादोसा बठै कनै ई बिराज्या हा। म्हांरा सगळा फटाका खतम होयग्या हा, जणां दादोसा कैयो, ''छोरां, इयांन कांकांकां कांई खेलो हो। थोथोथो थोड़ा फफफ फटाका छोडो। दीवाळी रो तिंवार है। तिंवार मांय इयांन कांई सुन्याड़ कर राखी हो।''

जणा म्हैं दुकान जाय'र सूतळी बम लेय'र आया अर जोरदार भचीड़ बोलायो। जणा दादोसा कैयो, ''छोरां, टिकड़ी छोडी कांई रै?''

 ISSN : 2320-0995

म्हां सगळां री तो हंसतां-हंसतां हालत ई खराब होयगी। म्हांनै लाग्यो कै मुरगो तो आपरी जान सूं गियो अर खावण वाळां नै मजो ई नीं आयो।

अेकर बस रै मांय अणूती ई भीड़ ही। बस री पूरी गळी सवारियां सूं भरियोड़ी ही। फाटक माथै ई लोगड़ा ऊभा हा अर कीं मिनख तो लटुमै हा बांदरवाळ रै जियांन। म्हैं तो धक्का खावतो-खावतो अर किणी नै धक्का देंवतो जाय'र तीन वाळी सीट माथै चौथो घुसग्यो। रामूजी लारै रैयग्या हा। बै कासा हकलावता हा। कदै-कदैई तो बै अेक ई सबद माथै दोय-च्यार मिनट तांई ठै'र जावता। उणां नै ई किणी रो जोरदार धक्को लाग्यो। बै थोड़ी गाळ्यां ई काढता हा। धक्को लागतां ई बै उणनै कैवण लाग्या ह... अर बस रै ठेठ लारली सीट माथै फंसता-सा बैठिया अर कैयो- ''ह...रामी।''

औ सुण'र कनै वाळी सवारी कैयो, ''भाया, अेक तो थनै इण भीड़ मांयनै बैठण खातर आ जग्यां दी अर तूं कैय रैयो है—हरामी।''

म्हैं देख्यो कै अठै तो अब बाजो बिगड़ण वाळो है जणां म्हैं बीच मांय बोल्यो, ''भाईसा, औ बकाई खावै है। बस री फाटक माथै जिको मिनख इणां नै धक्को दियो उणनै कैय रैया है, पण औ हकलावै इण खातर सबद बोलतां-बोलतां इतरी देर लागगी अर अब जाय'र वो सबद पूरो होयो है। औ थांनै कीं नीं कैय रैयो है। जणां जाय'र कोई बात आई-गई होई।

पुराणै जमानै रै मांय अबार रै जियांन बस अर रेलां नीं ही। लोगबाग ऊंटां अर बळदां री गाडियां माथै जातरा करता। अेकर अेक सागड़ी बळदगाडी हांकै हो अर अेक हकलावणी सवारी उण गाडी मांय बैठी ही। सागड़ी रो ध्यान इन्नै-बिन्नै हो अर इत्तै मांय हकलावणी सवारी नै मारग माथै अेक खाडो दीख्यो। खाडो दीखतां ई बो कैवणै लाग्यो, ''खा... खा... खा...'' इतणै रै मांय गाडी रो पेड़ो तो जाय पड़्यो खाडै रै मांय अर लागियो जोर रो झटको अर बो मिनख ई बोल्यो, ''खा... खाडो।''

जणां सागड़ी कैयो, ''भाईजी, पैलां कोनी कैयो।''

बो पडूत्तर दियो, ''म्हैं... प... प... पैलां ई कैयो, पण थैं स... स... सुणियो कोनी।'' जणां उणरै समझ मांय आई कै बीमारी कठै है।

गांव रा चौधरी हकलावता हा। अेकर अेक घोनां चरावतै छोरै री घोनां उणां री फाटक मांय बड़गी। चौधरी छोरा माथै राता-पीळा होया अर कैवण लाग्या, ''अरे, व... व... वेगी काड घोनां नै ब... ब... बारै।''

टाबर डरग्यो तो ई कैयो, ''ब... ब... ब... बाबोसा कांई है।''

उणरै मूंडै सूं ब... ब... सुण'र उणां नै लाग्यो कै औ कालै रो जलम्योड़ो छोरो म्हारी कूंटियां कढावै। बै तो आव देख्यो न कोई ताव, घोनां नै भूल'र लेय लकड़ी अर ठोकण खातर उण छोरा रै लारै भाज्या।

लोग पूछ्यो, ''चौधरयां कांई होयग्यो ? इण टाबरिया रै लारै आज इयां कैयां भाज रैया हो ?''

चौधरी कैयो, ''औ काल रो टाबर म्हारी क... क... कूंटियां कढावै।''

समझदार नै इसारो घणो। जणां बै कैयो, ''चौधरयां, औ कूंटियां कोनी कढावै। औ ई आपरै जियांन थोड़ी बकाई खावै। हकलावै।'' जणां जाय'र बापड़ा रो लारो छूट्यो।

हकलावणिया टाबर अर मिनख हंसी रा पात्र नीं हुया करै। आ अबखाई तो किणी रै ई साथै होय सकै। बीत सकै। आ आपां रै सरीर री अेक तरै री कमी होवै, जिणनै दूर करणी चाईजै। आ अेक तरियां री आपां रै सरीर री अपंगता है। विकलांगता है। इणनै अेक बीमारी समझ'र मिटावणी चाईजै। जिण मिनख नै पूरो बोलणो नीं आवै। बो बोल नीं सकै। आपरै मन री बात कैय नीं सकै। अैड़ा मिनखां नै आपां री मदद री दरकार होवै। तन, मन अर धन सूं जितणी कर सकां उतणी करणी चाईजै। उणां री हालत माथै हंस'र उणां रो मन नीं दुखावणो चाईजै। कांई ठा आ बीमारी आपां रै खुद रै का पछै आपां रै परिवार मांय किणी मिनख रै ई लाग जावै अर पछै कोई आपां माथै हंससी तो आपां नै कैड़ो लागसी ? कैया करै है कै आतमा सो परमातमा।

◆◆

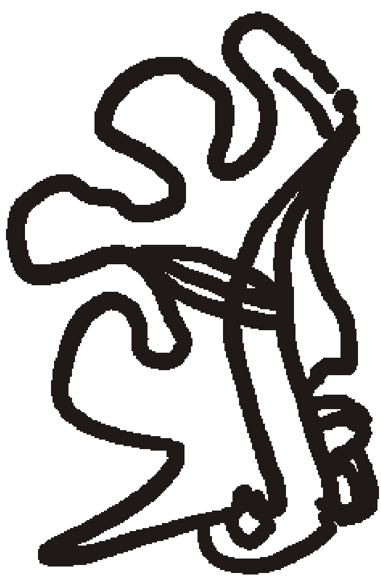

 ISSN : 2320-0995

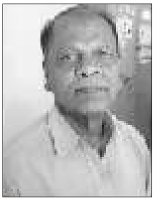

छगन लाल व्यास

भुआजी! भुआजी!

यूं बा महीनै भर सूं भतीजे रै बेटी रै ब्यांव सारू त्यारी करती कैवती, ''औ देवूंला उण छोरी नै। औ जंवाई रै। इक्कीस हजार रो चेक। कांई ठीक है? बीनणी! ठीक लागैला, बेटा?''

''ठीक ई है। इण ऊपरां खुद सोच लेवो। थांरा पईसा अर थांरो मन।'' धणी-लुगाई दोन्यूं रो अेक ई उथळो।

देखतां-देखतां अचाणचक दरवाजै माथै लाग्योड़ी घंटी बाजी कै भुआजी जाणग्या—म्हारो भतीजो आयग्यो है।

भतीजो! भाई रो छोरो। कितरी हूंस। कितरी आसावां। जाणै मूळ सूं ई ब्याज प्यारो!

जद सूं उणरो फोन आयो कै म्हैं काल-परसूं आय रैयो हूं, तद सूं ई भुआजी लगोलग आंख्यां बिछावै अर ज्यूं ई घंटी बाजी तो खुद जाय'र जाळी खोली।

साम्हीं ई भतीजो! बो पगां रै हाथ लगाया तो भुआजी उणनै छाती रै चेप दियो। बो दोय पगल्या भरतो, फूंफोजी कनै पूग'र बांरै ई पगां रै धोक देंवतो प्रणाम कीनो तो उणां री आंख्यां ई खुशी सूं भरीजगी।

यूं तो मां-बाप जीवै बठै तांई पीहर हुवै, पछै भाई-भोजायां में फरक पड़ जावै, आ घर-घर री रीत। भाई रै 'नैनप' पड़गी। मां-बाप रै लगता 'मौसर' सूं 'लेणो' माथै हुयग्यो, इणमें भुआजी सूं ई उधारी लीनी अर देय'र जाणै दुस्मणी लीनी।

बगत-बगत री बातां हुवै। भतीजो धंधै-पाणी में हुंसियार निकळ्यो अर देखतां-देखतां व्योपार में तरक्की कीनी तो दुनिया देखती रैयगी। सगळां री उधारी ई चुकाई अर घरां ई रामजी राजी।

ठिकाणो :
गांव-खण्डप,
वाया-मोकळसर
जिला-बालोतरा
(राजस्थान)
मो. 9462083220

मिनख! आजकाल सगाई-सगपण में मकान, गाडी अर पईसो देखै। 'घर-गुवाड़ी' देखण रा दिन जाणै बाबा आदम रै जमानै रा हुया! रंग-रूप ई पैली ठौड़! आ ई बात! इणी कारण भतीजै री अेक-अेक लाडली सारू अलेखूं पग आंगणो कीनो। यूं भीआजकाल छोरियां री हर समाज में कमी। इणी कारणै सिफारिशां ई।

सगपण रै पैली उण पापा-मम्मी साथै भुआजी (घर में बडा हुयां) सूं ई सलाह पूछी, ''उण ठौड़ बेटी देवूं तो आपनै कांई जचै?''

''म्हैं उणां नै जाणूं नीं। हां, उणां रै बाप-दादा री पैठ! छोरा बाबत तो कांई कैवूं, पण कैवै कै खानदान रो असर आयां ई रैवै। हां, कांई करै है बो?''

''डॉक्टरी कीनी है।''

''तो पछै कांई पूछणो! पण 'डिग्री' री परख कर लीजै क्यूंकै आजकाल नूंवी पीढी रो कोई भरोसो नीं। आंबो बतावै उठै आकड़ो ई कोनी मिलै! सावचेती जरूरी। हाल काचा मूंगां रो कांई नीं बिगड़्यो। कुंवारा रै सौ घर अर सौ वर हुवै।''

सगपण साथै ई ब्यांव री तारीख तय कर'र भुआजी नै फोन कर्‌यो कै आखातीज रो 'फेरै' रो विचार है। चट मंगनी अर पट ब्यांव। सबसूं आछो नींतर आजकाले दुनिया खावै नीं तो ढुळावै जरूर, आ ई नीयत।

आखातीज आवण रै पैली ई भुआजी त्यारी में। पीहर रो इतरो कोड!

उठीनै भतीजै महीनै भर पैली ई फोन कर्‌यो कै म्हैं काल-परसूं आपनै अर फुआजी नै लेवण आय रह्यो हूं, तो भुआजी मन ई मन अलेखूं आशीसां देंवता ऊपरलै मन सूं कैयो, ''इतरा पैली! अरे महीनै भर पैली वाळी बातां तो गई, थारै-दादा-दादी संग। आजकाल तो बगत माथै हाजरी देय'र बै जावै, बै जावै रो बगत।''

''ना, ना। म्हैं काल ई आय रैयो हूं। पैलो 'आणो' आपरो। आपरै हाथां ई टाबरां रा लाड-कोड! आप आयां म्हनै नैछो कै भुआजी अर फुआजी बैठ्या है।''

''ना भाई, बूढां नै कुण पूछै? नूंवा राजा अर नूंवी प्रजा। नूंवा नेम-कायदा। नित नूंवी फैशन।'' भुआजी लगता बोलता अर बो बिचाळै ई बोल्यो, ''सौ बातां री अेक बात, आप दोन्यूं नै आवणो है।''

आज ज्यूं ई घंटी बाजी भुआ जी राजी। अणूता राजी। गळी री लुगाइयां ई गाडी देख'र पूछ्यो, ''कुण आया है!''

''म्हारो सगो भतीजो है। इण री छोरी रो ब्यांव है। आखातीज रो जंवाई डॉक्टर लायो है। औ खुद करोड़पति है, पण पईसे भर ई मिजाज कोनी। भुआजी! भुआजी! अर फुआजी! फुआजी! करतो जीव सुखावै। दूजै-तीजै दिन फोन आय जावै। काल ई फोन आयो कै पैलो 'आणो' आपरो अर आज आयग्यो।''

''भली बातां पीहर री। कद रो फेरो है?'' पुष्पा पूछ्यो।

‘‘आखातीज रो। हाल महीनो पड़्यो है। इतरा पैली दोन्यूं कांई करां! औ ई कैवूं हूं इणनै। हां, पैली महीनै भर बन्ना गावता, धान-चून साफ करता, पण आजकाल सगळा रैडीमेड! सुबै स्याणी टैंट लागै अर सिंझ्या रा भेळो हुंवतो ई दीखै। ब्यांव जाणै ‘रमेकड़ो’, पण इणमें कितरो प्रेम है, पैली रै रीति-रिवाज रो। महीनै भर पैली आवणो है, आपरै आयां बाद ई ‘हाथ-काम’ लेवांला, आ ईज रट।’’

‘‘तो पछै जावो। इतरी मनवार करै है तो थे इतरा मूंघा क्यूं पड़ो? अैड़ा भतीजा हजारां में अेकाध ई हुवै, नींतर सगा भाई ई कोनी बुलावै!’’

‘‘हां, म्हैं लारलै दिनां ई भतीजै रै ब्यांव में गई तो आज तांई पछतावो ई करूं। नित सोचूं कै ब्यांव-शादी में जावण रो हाथ-पाणी ई लेवणो।’’

‘‘क्यूं? अैड़ो कांई हुयो! थे तो कैवो हो नीं कै म्हारो भाई अफसर है।’’

‘‘धूड़ उणरी अफसरी में! बिचारा अै पूरी रात बरामदै में पड़्या रैया अर मजाकां करै—इणां नै क्यांरी ठंड लागै अर खुद आपू-आपरै कमरै में। अरे, अेक दिन अळघा पड़्या रैवो तो कांई हुवै। इण ऊपरां म्हैं बीसेक हजार रो खरचो कर्‌यो अर उण दिया-इक्यावन सौ। आ सीख! गयी भैंस पाणी में। नीं लाज, नीं शरम। ऊघाड़ै माथै ई ‘ही! ही! हू! हू!’ औ देख्यो फगत, अधूराई!’’

म्हैं तो कैवूं कै जद भतीजो गाडी लेयर लेवण नै आयग्यो तो जावणो चाईजै। आखर ब्यांव रा ढोल तो ब्यांव में ईज बाजै।’’ दूजोड़ी बोली।

‘‘म्हारै तो भाई अर भोजाइयां बैठी लेहर करो, कोई कारज री नीं। चीरी आंगळी माथै ई...! पछै भतीजां सूं कांई आस करणी। भाई खुद बैन नै पूरी खाय’र दाणो बतावै जिसा नीं!’’ कोई भाइयां माथै दांत किटकिटावती बोली।

‘‘म्हैं तो कैवूं कै भतीजो आयो है तो आयां रो आवकार जाण जावो। इण ऊपरां आपरै अठै कुणसा टाबर रोवै!’’ लुगाइयां जितरी बातां।

‘‘हां। म्हैं ई औ ईज कैवूं। मन नीं लागैला तो फेरूं पुगाय देवूंला, इण सिवाय तो कांई कर सकूं।’’ भतीजो बीचै बोल्यो।

‘‘मन तो क्यूं नीं लागै! आखर नैनी-मोटी उठै ई हुयी। इण ऊपरां पीहर रा रूंख ई कठै पड़्या है देखण नै, पण इणां रो स्यात मन नीं लागै तो...!’’

‘‘इणां रै मन लगावण री जिम्मेवारी म्हारी।’’ भतीजो हंसतो-हंसतो बोल्यो।

‘‘अरे, म्हैं तो कठैई रैय जावूं, भलांई अेक बार तो दुश्मणां भेळो ई। बस, दो विस्वा प्रेम चाईजै। जद आगलो आघो-आघो दौड़ै, भाव ई नीं पूछै जद बिना मान-मनवार पल भर ऊभो नीं रैवूं। आखर उण आंगणै रो तोरण बींध्यो। सूंठ सुळ्योड़ी तो ई धाणा सूं गईबीती कोनी हुवै!’’

भतीजो फुआजी रै तीखै तानै नै तुरंत समझतो बोल्यो, ‘‘आप मन मोटो राखो सा।

आप भण्या-गुण्या हो। म्हैं तो आपरै टाबरां सूं ई नैनौ, ना समझ। आखर, पाणी पाणी रै ढाल उतरै।''

''आखर थांरी कांई मंशा है?'' भुआजी, फुआजी साम्हीं मूंडो करतां पूछ्यो।

''राणीजी कैवै उठै उदैपुर। महीनै-भर सूं तो मांयनै री मांयनै त्यार हुय रैयी है अर आज म्हनै पूछै, कांई है विचार!''

''त्यार तो हुवणो ई पड़ै। आखर जावणो तो पड़ैला ई। यूं तोड़्या घोड़ै अर असवार दोन्यूं री घटै। म्हैं नीं, तो टाबरां नै भेजणा पड़ता। रीत रो रायतो तो करणो ई पड़तो अर दोय गाभा ढंग रा ई जरूरी। थांरै ज्यूं तो हुवै कोनी कै अेक सफारी अर अेक झब्बो-पायजामो लियां ऊभा ज्यूं ई व्हीर!''

''म्हैं तो कैवूं कै लेवण नै आयग्यो अर इतरी मनवार करै है, तो अेकर चालां।'' फुआजी ठेठ सूं खुल्लो कैवण वाळा। खुलासो करतां कैयो, ''छाछ नै जावतां बरतन क्यूं लुकोवणो? पण महीनै-भर पैली! दुनिया कैवैला कै अै आया लाडै री भुआ।''

''दुनिया तो घोड़ै चढ्यै नै ई कैवै अर पगां चालणियै नै ई! उणरी चिंता छोडो।

दोन्यूं त्यार हुयग्या तो भतीजै भुआ रै टाबरां नै कैयो, ''थे सगळा हफ्तै-भर पैली आय जाईजो। उठै मामा रो घर अर मां परोसण वाळी, कैवत सुणी!''

''बगतसर आय जावांला।''

''बगतसर कांई हुवै। पंदरै दिन पैली आय सको तो ठीक, नींतर हफ्तै में कांई कैवणो।'' उण फेरूं जोर देय'र कैयो।

''जरूर।

''खा म्हारी सौगन्ध।''

''अरे आय जावांला, विस्वास राखो।''

''अरे थे तो उठै सूं ई ग्यारहवीं कीनी, तो केई यार-दोस्त मिल जावैला अर म्हारै ई कारज में हाथ बंटाईजैला।''

गाडी रवाना हुवण रै पैली दादी अर दादै रा दोय थैला राखतां देख, जय-जश संग वैभव ई ढीलो मूंडो करण लागो तो दादा री ई आंख्यां भरीजण लागी। उठीनै बेटो अर बीनणी पगां रै धोक देंवता बोल्या, ''मन नीं लागै तो फोन कर लीजो, लेवण नै आय जावूंला।'' बेटो लगतो बोल्यो।

''काले थे सगळा ई थांरी खुद री कार लेय'र त्यार हुय'र आईजो।'' दादी पोतरां नै कैवती-कैवती बीनणी ने शुकुन देवण रो इशारो कीनो तो बा गाडी रै जीवणै कानी जाय ऊभी। टाबरां नै मन में विश्वास नीं! इणी कारण अेक टकी लगायां देखता।

''अै टाबर म्हां दोन्यूं रै इतरा ओळ्यूं-दोळ्यूं रैवै कै इणां सिवाय म्हैं नीं अर म्हांरै सिवाय अै नीं रैवै। जाणै अेक जीव ई।'' भुआजी खुद रै भतीजै सूं कैवता आंख्यां मसळी।

''तो लेय लेवो टाबरां नै साथै, गाड़ी घुमावूं?''

''ना, ना। टाबर पढै है। महीनै-भर री पढाई खराब कर्‌यां कांई मिलै। थोड़ी देर याद करैला, पछै भूल जावैला।''

फुआजी आगली सीट माथै अर भुआजी लारली सीट माथै दोन्यूं थैलियां नै संभाळ्यां काच सूं दौड़ती कार संग सरपट सड़क नै देखतां बोल्या, ''आ ई सड़क कांई डबल हुयगी?''

''हां, आजकाल तो भारत माळा सड़क सूं डबल कांई, देखो खूब ऊंची अर आछी सड़क बणगी। किणी बगत पांच-छह घंटा लागता उण ठौड़ तीनेक घंटै में पूग जावांला।''

''कांई बात करै!''

''हर ठौड़ विकास दीखै। इण ऊपरां मोबाइल सगळा समाचार देंवतो रैवै। भतीजो पूरी बात बोलतो, उण सूं पैली भुआजी कैयो, ''मोबाइल टाबरां अर लुगाइयां रै तो जाणै जीव री ई जड़ी होयग्यो!''

''हां, औ तो है ई।'' कैवतो-कैवतो बो गाडी सड़क सूं नीची लीनी खुद रै गांव री सड़क पकड़ण सारू। अठै गौशाळा देख'र उण अेक सौ रो नोट चारै वाळै नै पकड़ावतो कैयो, ''गायां नै चारो।''

चारा वाळा पांच-सात। सगळां कनै गाय ऊभी।

''खुद री गाय अर खुद रो चारो! आ कैड़ी सेवा!'' फुआजी बोल्या।

''आपू-आप रा करम-धरम। किणी री निंदा नीं करणी।'' कैवता भुआजी ई चारै वाळै साम्हीं पांच सौ रो नोट करतां कैयो, ''अेक सौ रो चारो।''

''खुला क्यूं करावो! म्हैं देय देवूंला।'' भतीजो बीचै बोल्यो।

''ना भाई, म्हारै हाथ सूं धरम। थारा पइसा क्यूं लेवूं!''

''ठौड़-ठौड़ गऊशाळावां। कमाई रा साधन हुयग्या। जमीन मिलै, अनुदान मिलै अर धरमादै रै नांव सूं खूब आवै तो भी पेटियां लियोड़ा बसां में, रेल में, बजार अर दूकानां साथै गाडियां लेय'र घर-घर! गायां रै नांव माथै खुद रो घर चलावै, कमाई रा साधन कर लीना।'' फुआजी लगोलग कैवता अर भुआजी कैवता, ''किण भांत रो सुभाव हुयग्यो थांरो, दूजां री खोट ई खोट दीखै!''

''म्हैं ई अेक लाख रुपिया गायां रै चारै रो गोदाम बणावण सारू दीना।'' भतीजो भुआजी नै कैयो।

''चोखो भई, चोखो। औ ईज आगलै जलम रो कारज है, बेटा। थालै में हुवै जद अवाड़ै में ई आवै। यूं भी गो-दान सब सूं मोटो मानीजै।

बै घरां पूग्या तो भतीजै री बहू साथै भोजाईजी ई पगां लाग्या। टाबरिया ''भुआजी! भुआजी!'' करता ओळ्यूं-दोळ्यूं कमरै सूं बारै आय'र साळाजी ई पगां रै हाथ देवण लागो, तो भुआजी अर फुआजी दोन्यूं उणा नै आसीस देंवता भुआजी तो छाती रै ई चेप्यो।

चाय-पाणी साथै नाश्तो।

''मकान ई जोरदार बणा दियो!'' फुआजी अठी-उठी निजर फेंकता बोल्या, तो भुआजी बोल्या, ''बणावै क्यूं नीं! करोड़पति है। पुराणो पूरो पटकाय नूंवो ऊभो कर्‌यो कांई भाभीजी?''

''हां। पैलीवाळो ई मरम्मत मांगतो। इण ऊपरां बाढ़ आयां खळ-विखळ हुयग्यो जद ठेकेदार कैयो, पीलर माथै उठा दूं ताकि सौ बरस साम्हीं देखण रो कारज नीं।''

''आजकाल सगळा मकान पीलरां माथै ई बण रह्या है। कॉम्प्लेक्स हुवो चावै बीस -तीस मंजिला फ्लैट ई, कोई जोखो नीं।'' भुआजी ई हां में हां मिलावता बोल्या।

''यूं तो बो ई घणो पुराणो नीं हुयो हो। म्हारै ब्यांव री बगत ऊभो कीनो हो। पचास बरस रो। जल्द ई पटकायो।'' भुआजी लगतां कैयो।

''पण कैवै है नीं कै 'माया' नै माड़ो नीं सुहावै।'' फुआजी ई कैवता-कैवता हंस्या अर पूछ्यो, ''ऊपर ई बणा दियो दीखै?''

''पूरी तीन मंजिल रो ऊभो कीनो है। म्हैं तो नित 'स्टेटस' देखती रैवूं। अै तो फगत मोबाइल माथै कहाणियां लिखै।''

''मकान रो मौरत ई ब्यांव रै पैलै दिन। अेक पंथ, दो काज री भांत।'' साळाजी कैयो।

''आछो भई आछो। करिया सो काम अर भजिया सो राम।''

भतीजो अर भुआजी नित बातां करै। औ मकान-मौरत रै दिन रो मीनू। औ ब्यांव रै दोय दिनां रो विचार। औ देवण-लेवण रो सोचूं।

''ब्होत बढ़िया।'' कैवता भुआजी आपरै धणी नै ई जाणकारी देंवता रैवै।

''साळाजी सूं ई साळाजी रै छोरै नै कितरो हेत है।'' फुआजी रैय-रैय कैवै।

''आपनै कांई जचै फुआजी?''

''थांनै अर भुआजी नै जचे जिको सोळै आना। इण ऊपरां आपरै पापा-मम्मी नै पूछो।'' फुआजी कैयो।

''उणा नै तो पूछूं ई हूं, पण आप ई मोटा हो।''

''ना सा! आपू-आपरै घर में सगळा मोटा।''

देखतां-देखतां मकान रो मौरत हुवण लागो। भतीजो ठौड़-ठौड़ भुआजी, फुआजी कैवतो जीव सुखावै। फोटू खिंचावै। मोबाइल माथै स्टेटस लगावै। फेसबुक अर नीं जाणै

ISSN : 2320-0995

कठै-कठै भेजै। आ अपणायत देख'र भुआजी अर फुआजी दोन्यूं फूल'र कुप्पो हुवै।

ब्यांव में ई कनै ई राखतां हजार बार पूछै, ''आप नाश्तो कर्‌यो ? खाणो खायो ? बो लाऊं ? बो देवूं ? इणी सूं फुआजी राजी। खूब राजी। बै तो नित कैवै ई है कै हंस नै बोलै तो ई खूब। पण करड़ा ठूंठ हुय'र आवकार ई नीं देवै जद माथो बरणाटै चढै ई है। म्हैं थांनै मोटा कर्‌या, थे म्हनै नीं!

ब्यांव रै दूजै-तीजै दिन कह्यो, ''अबै जावां ?''

''अेक-दो दिन ठैर जावो। नैछै सूं पुगाय देवूंला। आपरै कुणसा टाबर रोवै!''

''टाबर तो नीं रोवै, पण पोतरा नित फोन करै कै कद आवोला ? लेवण नै आवां कांई ? इण ऊपरां बिनणी रै गोडां री तकलीफ, जद जाणूं घरां हुयां उणां नै विस्वास।''

''भतीजो, भुआजी अर फुआजी नै सोनै री बिंटियां देंवतो च्यार-च्यार जोड़ी गाभा संग दस दस तोळै रा दोन्यूं नै चांदी रा सिक्का (जिकण माथै बेटी-जंवाई रा फोटू अर तारीख ही, जिका जांनियां नै दीना, बै ई) दीना तो भुआजी बोल्या, ''सिक्को अेक ई। जद घर दीठ दीनो है, तो म्हांने दो क्यूं ?''

''आपरै खटतो माल देवूं जितरो ई कम।''

घणी खेंचताण कर्‌यां ई नीं भतीजो मान्यो नीं भोजाई।

खूब सारी मिठाई संग बो खुद पुगावण नै आयो अर ज्यूं ई गळी में कार रो हॉर्न बाज्यो, टाबर दौड़'र आया, ''दादाजी आयग्या! दादीजीआयग्या!'' कैवता बो लेवै तो बो दूजी चीज खोलै, फाड़ै, जाणै सामान रो पोस्टमार्टम करता व्है।

गळी री लुगाइयां भेळी हुंवती आयी अर बोली, ''थांरै सिवाय तो महीनै-भर सूं मोहल्लो साव सूनो-सूनो ई लागतो। अैड़ो ठेठ भतीजै री छोरी रो ब्यांव, जद भतीजै रै ब्यांव री बगत तो स्यात च्यार महीना बैठ्या रह्या हुवोला ?''

''ना। उण बगत टाबरां री परीक्षावां रा दिन हुवण सूं ऊभै पगां आयी।''

''उणरी कसर अबकाळै निकाळ लीनी, जाणै आटै री कसर खाटै में वाळी बात!'' लुगाइयां हंसती-हंसती बोली।

''अरे भतीजो हथेळी रै छालै ज्यूं राखतो। खूब सेवा-चाकरी कीनी। जद मन ई नीं हुयो कै घरां जावां। इण ऊपरां इणां ई नांव नीं लीनो, नींतर अै तो आज तांई कदैई दो दिनां सूं ज्यादा नीं ठैर्‌या। भतीजो हुवै तो इसो हुवै। कठै चालै अर कठै हाथ राखूं,आ ई गत।''

''तो सोनै में ई पीळापट कीना हुवैला ?'' लुगाइयां बात री तह तक पूगण सारू पूछ्यो।

''हां। म्हां दोन्यूं रै सोनै री अंगूठियां। हरेक जांनियां नै दस-दस तोळै रा चांदी रा सिक्का। भाटै रै जैड़ा! म्हांनै दोन्यूं नै दो! लाव अे बीनणी! बो पॉकेट!'' कैवता सिक्का

बतावतां बींटियां बताई। लुगाइयां रैय-रैय बातां पूछती अर भुआजी बखाणां रा पुळ ई बांधता फूलीजता, ''देखो! आज हजार कारज छोड ई म्हांनै पूगावण नै आयो। इण ऊपरां महीनै भर में म्हांरो नूंवो टक्को ई खरच नीं करवायो!''

बै नित फोन माथै समाचार पूछै बेटी रा। उणरै कांई दिन चढ्या है? पांवणा रै प्रेक्टिस किण भांत री है? सास-ससुर रो सुभाव किण भांत रो? आद-आद। भेळा रैवण रो प्रेम हुयां टाबर ई बोलै, ''भुआजी, कद आवोला?''

''काल...।''

''ना। आज ई आवौ। पापा नै भेजूं भुआजी!'' भतीजै रा टाबर लगता बोलता।

कितरो हेत! कितरो सनेव! जाणै घर रा पोतरा सूं ई सवायो, डोढो।

◆◆

फार्म नं. 4, नियम-8

पत्रिका रो नांव	:	राजस्थली
प्रकाशन री ठौड़	:	श्रीडूंगरगढ़
प्रकाशन री अवधि	:	तिमाही
मुद्रक	:	महर्षि प्रिंटर्स, श्रीडूंगरगढ़
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
प्रकाशक	:	महावीर माली
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
संपादक	:	श्याम महर्षि
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
उणां शेयर होल्डरां रा नांव अर ठिकाणा, जिणा कनै कुल पूंजी रा 10%सूं बत्ता शेयर है:		कोई कोनी

म्हैं महावीर माली घोसित करूं कै ऊपरलो विवरण म्हारी जाणकारी अर विस्वास रै मुजब सत्य अर वास्तविकता माथै आधारित है।

महावीर माली
प्रकाशक

ISSN : 2320-0995

अरविंदसिंह आशिया

अफसर

अफसर करै न अफसरी, दफ्तर करै न वर्क।
दास मलूका कह गए, सब कै काका क्लर्क।।

कॉलेज रा दिनां जद औ जुमलो कठैई पढ्यो हो तद औ नीं सोच्यो हो कै ईं रो कोई तोड़ होय सकै। बो टैम सरकारी हो। पूरी तरियां। जद रेडिया रा भी लाइसेंस हुंवता अर नूंवी साइकिल नै भी बधाय'र घरां लावता। जे साइकल डायनमा वाळी है तो पछै मत पूछो बात। रात रा बीं रो खास शो हुंवतो अर चलावणियो भायलां नै बतावतो कै कीकर साम्हीं सूं आवती कार वाळो भी साइकिल री बत्ती रै पळकै सूं आधी सड़क छोड दीधी।

देस तद इत्तो अमीर नीं हो, जित्तो आज है। अब तो सगळा ई जेबां में मोबाइल अर ढूंगा नीचै फटफटिया दाब्यां उडिया फिरै। तद तो आखै मोहल्लै में जीं रै कनै मोटरसाइकिल हुंवती बो अमीरां में गिणीजतो। देखण नै दो ईज कारां ही अंबेसडर अर फिएट। खासकर कस्बां अर छोटा-मोटा स्हैरां में। रिस्तै में अेक ईज बात रो मोल तेंरै आना हो कै छोरो सरकार में नौकर है। औ ब्यांव सारू सुपातर लड़को ढूंढण रो भी अेक मात्र सैंतीसवों गुण हो, जको लड़कै री कुंडली में जे है तो पछै पांचू घी में मानो आप।

किसनजी बिजळी विभाग रो अैलकार। किसनजी लाग्यो तो अफसर नीं हो, पण पछै चढतां-चढतां अफसर हुयग्यो। अेक नेताजी आपरै कुशल प्रबंधन रो राज बतावतां अेकर कैयो हो कै चार तरियै रा राज रा नौकर हुवै। पैला ईमानदार अर कामगरा, दूजा ईमानदार अर निकामा, तीजा भ्रष्ट अर कामगरा अर चौथा भ्रष्ट अर

ठिकाणो :
डीडी-14
टाईगरहिल्स
उदयपुर-313011
मो. 9413318066

निकामा। किसन जी पैली टाईप रो अफसर हौ। बां दिनां में स्यात् भ्रष्टाचार इत्तो नीं हुवैला, पण सरकारी ठसक टणकी ही। गांव-खेड़ा में जे आप बिजळी विभाग नै नूंतो नीं द्यो तो जान तोरण आयां आखै गांव री बिजळी कट जावती। जळदाय, बिजळी, पीडब्लूडी अर पटवार—अै राजा हा अर बाकी परजा।

किसनजी बीं जमानै में पॉलीटेक्नीक कर बिजळी विभाग में बड़ग्यो, सो दस-बारै बरस में एइएन तांई पूगग्यो हो। किसन जी रो जिलो पाली अर ट्रांसफर रा नांव माथै पांच-सात कस्बां सूं बधतो कठैई नीं गियो। अफसरां रै अंगविसेस रो बाळ। काम करण में साचो हुंसियार अर बीचै डाचळी को मारै नीं, सो महकमे रा दूजा अफसरां री मौज। कीं आडो-अंवळो काम फंस जावतो तो किसनजी नै टूर माथै मेलता, सो किसन जी जाय'र काम सळटाय देंवतो।

खैर साब! तो रामजी आपनै भला दिन देवै। सरकारां बदळी अर नूंवा एमएलए साब चुणीज्या। लारलै दाइकां सूं राज करणियां वुआ जाता रैया। लोकतंतर री आ ईज खासियत है कै जिणनै आप न्हार कैवो बो ईज न्हार। नूंवा एमएलए साब रो खटको न्यारो। बां सारू राज में काम करणिया फकत नौकर। भलांई पोस्ट किसी ई हुवो। बांरो अेक जुमलो फेमस हो, ''आंनै राज चुण्या अर म्हांनै जनता। अै पच्चीस-पचास हजार प्रतिभागियां सूं कम्पीटीशन कर'र राज में बड़िया है अर म्हांनै ढाई लाख जनता चुण'र जन प्रतिनिधि थरप्या है, सो अै नौकर है अर म्हे मालिक हां।'' मंत्रीजी री दबक बीं हलका रै सगळा अफसरां में टणकी। एमएलए साब घर रा आसूदा। वौपारी परिवार रा। पइसो यूं भी माथै चढ'र बोलै अर पछै बांरै राज री रेखा हाथ में बा न्यारी। मंत्री पदां रो जद डिक्लेरेशन हुयो तो आं एमएलए साब रो भी नांव लिस्ट में अर अब बै मंत्री हा। लालबत्ती आळी गाडी, आगै सायरन बजातो जाब्तो। ल्यो रे थारी? कुण कैवै कै ब्यांव भूंडो।

पौष-माघ रा दिन। अणूती ठंड। सुबै-सुबै दफतर खुलिया ईज हा कै चपड़ासी दौड़'र आयो अर किसनजी नै कैयो कै बारै मंत्रीजी री गाडी आई है। किसनजी कीं जवाब देंवता बीं सूं पैली तो मंत्रीजी ऑफिस में आयग्या। किसन जी ऊभो होय'र नमस्ते करी अर साम्हीं लाग्योड़ी कुर्सी साम्हीं हाथ करता कैयो, ''बिराजो सा।'' औ मंत्री बणियां पछै पैलो मौको हो जद किणी अफसर खुद री कुर्सी नीं सूंप'र मंत्रीजी नै साम्हीं बैठण रो कैयो हो। मंत्रीजी रो मूंडो थाप खायग्यो, पण बात नै नीं गिनारता मंत्री सामली कुर्सी माथै काबज हुंवता कैयो, ''मनोहरपुरा कच्ची बस्ती कानी गिया हा कांई एईएन सा? सुण्यो है के दस-बीस कनेक्शन काट दीधा?''

''सर, बात आ है कै बठै इल्लीगल कनेक्शन बिजळी रा खंभां सूं अंकोड़िया घाल'र लीधोड़ा हा, सो वाजिब कारवाई करणी पड़ी।'' किसनजी लुळताई सूं कैयो।

''देखो भाई, थांनै तो है अफसराई रो जोम अर म्हारा है बै वोटर्स, सो लीगल एक्शन पाछो ल्यो अर आईंदा बठै जावण री जरूरत नीं है थांनै।'' कुर्सी माथै पसर'र बैठता मंत्रीजी बोल्या।

''देखूं देखां, कांई कर सकां ईं मामलै में।'' किसनजी आपरा भाव लुकावता बोल्या, ''यूं चोखो तो औ रैसी कै आप ऊपर बिजळी मंत्रालय रा सेक्रेटरी साब नै फरमाया'र अेक कागज इश्यू कराय दिरावो कै सगळां नै फ्री कनेक्शन रो आदेश फरमाय देवै।''

''हूं।'' मंत्रीजी पाणी पीय'र निसरग्या।

किसनजी नै हैडबाबू समझायो कै क्यूं उडतो तीर लेवो हो आप ...औ तो गाडो यूं ईज गुड़कसी। पण किसनजी ईमानदार अफसर अर पछै कैवत भी है कै तेजी नै ताण नीं खटै। सो हैडबाबू नै कैयो कै बीं एरिया रा जेईएन साब अर सगळा लाइणमैनां नै कैय दो कै बीं एरिया नै है ज्यूं ई रैवण दो। अेकर कोर्ट में जुर्मानो भरसी तद ई अक्कल आसी आं चोरां नै।

मनोहरपुरा रा कोई बीस जणां नै कोर्ट रो नोटिस मिलग्यो। के तो जुर्मानो भरो नींतर कानून रै कायदै जेळ जावो। हाकाहूको हुयग्यो। किसनजी रोज ईं केस री खास रिपोर्ट लेवै। बात कार्यकर्ता स्तर सूं मंत्रीजी तांई पूगी। मंत्री सुण'र लाल-ताता हुयग्या।

''कांई नांव बतायो रे बीं एईएन रो?'' मंत्रीजी धाकल करतां पूछ्यो।

''किसनजी। किसन जगावत।'' अेक छुटभय्यो बोल्यो।

' हूं ! कठा रो है औ?''

''सा जेतपुरा रौ।''

''ईं री तो...'' मंत्रीजी अेक टणकी गाळ काढता बोल्या, ''म्हारै ऑफिस में जाय'र कैयां पछै भी इतरी निसरमाई? रामसिंह गाडी काढ देखां!''

घड़ी में दोपार रो कांटो हुयो तद तांई तो मंत्रीजी भरणाट करता विद्युत विभाग रै ऑफिस पूगगा।

''भाई, के तो थनै म्हारी बात समझ कोनी आवै अर कै पछै थूं खुद नै टणकेल समझै दीखै। म्हारै कैयां पछै भी मनोहरपुरा रो मैटर लीगल प्रोसेस में कीकर गियो?''

किसनजी ऊभा हुय'र नमस्तै करी, पण बीं रै जवाब री ठौड़ रीसां बळता मंत्रीजी कुर्सी नै आपरै कानी खींच'र बैठता बोल्या, ''भाई, इतरो कानूनबाज मत बण। दोन्यूं हाथ भेळा धुपै...।'' मंत्रीजी रो सुर ऊंचै आभै हो। मंत्रीजी रै लारै ऊभा दस-बीस कार्यकर्ता सगळो तोतक देख रैया हा।

किसनजी आपरी कुर्सी माथै बैठता बोल्या, ''सर, मैटर तो बताय दियो हो आपनै अर आप थोड़ा देरी सूं पधारिया। सचिव महोदय रो कागज आय जावतो तो आ नौबत ई नीं आवती।'' किसनजी लुळताई सूं कैयो।

''तो मतलब थूं म्हारो कैयो नीं करै ?'' मंत्रीजी बिफरिया।

''बात अब म्हारै हाथ भी तो नीं है सा। मामलो कचेड़ी में पूगग्यो।'' किसनजी बोल्यो।

''अब तो थूं भी बाट जोव। अैड़ी काळीधार फेंकस्यूं थनै कै सगळी अफसराई मांय बड़ जासी।'' मंत्रीजी लाल-ताता हुंवता रीस में झळाबोळ कुर्सी सूं ऊठ'र बारै नीसरग्या।

किसनजी ऊभा देखता रैया। बारै मंत्रीजी री गाडियां जावण री आवाज कानां में पड़ी। ऑफिस रा सगळा एइएनसाब रा चैम्बर में भेळा हुयग्या। किसनजी मुळकता कैयो, ''कांई देखो भाईड़ा! आप-आपरा काम करो, जाओ।''

हैडबाबू आपरा कमरा में कुर्सी खींचतो अकाऊंटेंट नै कैयो, ''तुम बाण चलाओ पार्थ।''

''मगर किस पर ?'' अकाऊंटेंट मुळकतां कह्यौ।

''तुम तो किधर भी चलाओ, अपने एइएन साब आकर बाण स्वीकार कर लेंगे।'' कैय'र हैडबाबू जोर सूं हंस्यो। असल में सरकार में रैय'र कामगरो अर ईमानदार बण्यो रैवणो नौकरी करण सूं भी दोरो हुवै।

तीजै दिन भूरो लिफाफो आयग्यो किसनजी रै नांव। बांरी बदळी जैसलमेर रै आथमणै कानी अेक कस्बै सानूं में हुयगी ही। बां दिनां धोरां में नौकरी काळैपाणी ज्यूं ई मानीजती। ऑफिस में जका किसनजी नै पसंद करता बांनै दुख हो अर जका कड़क अफसर सूं तंग हा, बांनै मजो आयग्यो हो। दूजै दिन समोसा-कचोरी री पार्टी हुयी। ऑफिसवाळा झूठा भासण दीधा कै किसनजी रै कार्यकाल में काम आपरी ऊंचाई माथै हो अर किसनजी पैली वेळा आपरै जिलै सूं जिलाबदर हुयग्या।

सानू रामगढ़ सूं पैली अर जैसलमेर-रामगढ़ रै बिचाळै। आपरै बाप जमारै भी कदैई किसनजी पाली जिलै सूं बारै नीं गिया, पण मंत्रीजी सूं राड़ करी ही। औ तो हुवणो ईज हो।

सानू आरएसएमएम रै लाइम स्टोन माइंस रो टणको माइनिंग एरियो। पाली सूं जोधपुर अर जोधपुर सूं नाइट बस में किसनजी जैसलमेर पूग्या। बींटा बिस्तर सागै। सुबै सात साढी सात तांई जैसलमेर पूगग्या। बठै ई चाय पाणी कर'र पतो कीधो कै सानू सारू यूं तो माइंस री बसां है, पण दूजां नै बै बैठावै कोनी, सो रोडवेज सूं ईज जाणो पड़सी। नौ बजियां अेक बस है रामगढ़ वाळी। बा सानू हुय'र जावै। किसन जी बीं में जमगा, सो कोई दोयेक घंटा पछै सवा इग्यारै रै लगै टगै सानू पूगा। सानूं उतर'र अेक ऑटोवाळै नै त्यार कीधो कै भाई बिजळी विभाग रै ऑफिस पूगाय दै। यूं कर'र डोढ दिन चाल'र किसनजी नूंवी जगै पूग्या, जठै बांनै मंत्रीजी री मेहरबानी सूं राज ट्रांसफर कीधा हा। सगळा सूं रामा-स्यामा हुया। ज्वाइनिंग हुयी। बठै अेक पुष्करणो लाग्योड़ो हैडक्लर्क। बीं रै क्वार्टर में, जको कै लारलै पसवाड़ै ईज हो, साफ-सूफ कराय'र किसनजी नै शिफ्ट

 ISSN : 2320-0995

करिया। बात आई–गई हुयगी। किसनजी रै आवण सूं पैली बांरी ख्यात पूगगी ही कै करड़ो अफसर है। यूं किसनजी सगळां नै सागै लेय'र चलणिया। पछै सानू में सैसूं बडी पोस्ट एईएन री ई ही, सो धाको किसनजी रो टणको।

मार्च रा दिन आयग्या हा। फाइनेंशियल ईयर री एंडिंग। फील्ड एरिया रा दौरा बधग्या हा। बिजळी रा बिल अर रिकवरी रा अंबार लागग्या। किसनजी रोज सरकारी जीप में ईज दोपारी करै। गर्मी बधण लागगी ही। जैसलमेर यूं भी बधता टेम्परेचर वाळो एरियो। पंखा चालण लागग्या हा। किसनजी सुबै बेगा दौरा माथै गिया, सो दुपार तांई पाछा आय'र कुर्सी माथै पसरियोड़ा पंखा री हवा रो आणंद लेवै। हैडबाबू पुष्करणो कनै बैठ्यो बाकियात री लिस्ट बतावै। जितरैक तो अेक नांव आयो बालमुकुंद जिंगा। कोई तीन बरस सूं बिजळी री बाकियात चाल री अर अस्सी लाख सूं बधतो अमाऊंट बाकी नीसरै।

''औ कुण तोप है भाई जको लाखूं खाय'र बैठो है अर डकार तक नीं लेवै!'' किसनजी कनै पड़ी गिलास मांय सूं चाय रो सुरड़को लेवता बोल्या।

''सा, मोटी आसामी है अर पॉलिटिकल बैकग्राउंड है सा, कांई करां? सगळां नै नौकरी वाल्ही है।'' पुष्करणो मुळकतो पड़ूत्तर दीन्हो।

''अैड़ो कांई बैकग्राउंड है?'' किसनजी गुणको पाड़्यो।

''पीडब्लूडी वाळा मंत्रीजी रै साळाजी है बालमुकुंदजी। लाइमस्टोन री माइन्सां अर गैंगशॉ लाग्योड़ा है। दो अेक वेळा इल्लीगल बिजळी रै वपराण री शिकायत ई हुयी, पण मामलो रफा–दफा ई रैयो। सांप रै जाळै में हाथ कुण घालै।''

मंत्रीजी रै नांव सूं ई किसनजी कुरसी माथै सजग हुयग्या। मन में मुळक्या कै अै तो आपां रा वाळा ईज मंत्रीजी है जकां ट्रांसफर करायो अर बांरा साळा जी ई निकळ्या जिंगाजी तो। पण ऊपर सूं गंभीर हुंवतां कैयो, ''हैड बाबूजी, आप पन्दरै दिन रो नोटिस पकड़ावो आंनै अर कॉपी रीको रा चीफ नै भेजो।'' पुष्करणो अचूंभै सूं देखतो रह्यो कै साब क्यूं काळै री पूंछड़ी पर पग देवै, पण साब रै मूंडै गंभीरता देख'र कैयो, ''ठीक सा।''

अब किसनजी इण मामलै री सगळी फाईलां मंगवाय ली। रसूखात रै चालतां जिंगाजी रो बिल बणतो गयो, पण बां जमा करायो ई नीं अर अमाऊंट हजारां सूं लाखां हुयग्यो। किसनजी तो जाणै अब दिन गिणै। संजोग सूं उद्योग सचिव किसनजी रो मिलणियो अर कठैई बां मंत्रीजी सूं ठूंठो–सो तोजो जमग्यो। पंदरै दिन पूरा हुंवतां ई अर किसनजी उद्योग सचिव नै शिकायत कर दीन्ही। उद्योग सचिव री कांनी सूं नोटिस जारी हुयग्यो कै दस दिन में बिल जमा करावो, नीं तो फेक्ट्री रो ऑक्शन होय जासी।

जिंगाजी रै अैड़ा केई नोटिस आवै, सो बां गिनारो नीं कीधो। बात आई–गई हुयगी। अठीनै किसनजी पतो कीधो कै मंत्रीजी री एंटी पार्टी में कुण है जको कै

उद्योगपति है। पतो लाग्यो कै जायसवाल एंटी पार्टी रो है अर लाइमस्टोन री केई माइंसा रो मालिक है। किसनजी जायसवाल रै घरै पूगग्या। सगळी बात सुण'र जायसवाल थोड़ी देर तो चुप रैयो, पछै बोल्यो, ''आपनै के फायदो है जी ईं सौदा में?''

''कीं नीं सा। आवगी उमर ईमानदारी सूं नौकरी कीधी, पण अै मंत्रीजी म्हारी पूठ थपथपावण री जग्यां बेईमानां सारू म्हनै ईज देसनिकाळो देय दीधो, इसा लोगां नै औ तो ठाह पड़णो ईज चाईजै कै सत्ता दलाली सारू नीं हूवै।'' दूजै दिन दोपार पछै ऑक्शन री प्रक्रिया सरू हुयी। जिला उद्योग अधिकारी रै साम्हीं जायसवाल आपरी बिड राखी अर फैक्ट्री जायसवाल री हुयी। आ बात मंगळवार री ही।

बुधवार नै दोपार पछै अर दो-तीन गाडियां बिजळी विभाग रै कैम्पस में आयी। बै ईज मंत्रीजी हा। साळाजी जैपर ई गिया हा, पण कारवाई तो हुयगी।

''अरे भाई एईएन साब, जे कीं बात ही तो बात तो करता। तमाशो बणाय दीधो पॉलिटिक्स में अर फैक्ट्री जायसवाळ कनै गई परी। म्हारो विरोधी है बो अेक नंबर रो।'' मंत्रीजी रै मूंडै रीस अर बेबसी रा सेलाण हा।

''अरे सा, अव्वल तो म्हनै कांई ठाह कै आपरै साळाजी री फैक्ट्री है, दूजो जायसवाल नै तो म्हैं ओळखूं तकात नीं। म्हैं तो रूटीन विभागीय कारवाई करी ही। अठै सूं गिया कागज माथै कांई एक्शन हुयो, म्हनैं तो औ तकात म्हनैं ध्यान नीं। पछै आप जाणो सा कै म्हैं तो एइएन ठहरियो। म्हनै मिनिस्ट्रियां में कुण ओळखै।'' किसनजी लुळताई सूं कैयो।

मंत्रीजी थोड़ी जेज तो कीं नीं बोल्या। पछै निसासौ न्हाख'र पूछ्यो, ''अबै कीं होय सकै?''

किसनजी मन में कैयो, ''जीमियां पछै तो चळू हूवै'', पण सामी कैयो, ''सा ऑक्शन रुक जावतो तो ठीक हो, अब तो कांई होय सकै।''

मंत्रीजी, ''ठीक है भाई, सरकार तो असल में थे चलावो हो।'' कैय'र उठग्या। गाडियां कैम्पस सूं बारै नीसरगी।

''हैड बाबूजी, बढिया चाय बणवावो देखां।'' किसनजी मुळकता पुष्करणा नै हाक करी।

बीसेक दिनां पछै किसन रै ऑफिस में अेक भूरो लिफाफो भळै आयो राज रो। किसनजी री बदळी पाछी पाली जिलै में ईज होयगी ही। उद्योग सचिव सिफारिश करी ही कै ईमानदार अफसर है अर गृह जिलै में रीको रा नूंवा एरिया डेवेलेपमेंट मांय अैड़ा अफसर घणा सहायक सिद्ध हुवैला।''

◆◆

मदन गोपाल लढ़ा

कित्ता चौरावा

''आज ठंडै पाणी सूं ई न्हावणो पड़सी सगळा नैं। जद तांई गीजर नीं लागैला, तातो पाणी कोनी मिलै। गैस चूल्है माथै पाणी उकाळ'र देवण री सरधा कोनी म्हारी।'' म्हनैं पथरणा में जोड़ायत रा बोल सुणीज्या।

भोरानभोर औ नूंवो कौतक! रात वाळी सळटी कोनी अर दिनूगै आ नूंवी भळै मंडगी।

आ जबरी बात है भई! कांई ठाह लोग कींकर पार घालै। आपणो तो इण दोघाचींती सूं ई लारो कोनी छूटै। जातरा माथै निकळणो हुवै तो बस बनाम रेल रो पाणो मंड जावै। गाभा पैरणा हुवै तो कुरतो-पाजामा अर पैंट-बुशट रो पेच अड़ लावै। टीवी देखूं तो चैनल बदळण में ई घंटो टिप जावै। सोरै-सांस तो रेहड़ी सूं साग-भाजी ई कोनी खरीदीजै। जद देखो, साम्हीं दो डांड्यां तो लाधै ई लाधै। केई बार तो दो सूं ई कोनी सरै, ठेठ चौरावै पूग जावूं। अबै सोधो मारग, पूगो मंजल तांई। मारग चूक्यां ओळमो बट पर, मंजल लग पूग्यां जस लेवणियां केई आ जासी।

''इयां म्हारै सागै ई क्यूं हुवै?'' औ सवाल मगजी में उठै अवस पण पडूत्तर किण सूं मांगूं। सवालां रै कांटां सूं सुरड़ीजता थकां पैलां भोर वाळी बात मांडूं।

बियां बात, नीं बात रो नांव, पण म्हारी नींद तो बिडरगी।

ना जी, म्हैं कोई आडी कोनी अडावूं। सीधी बात है कै ठारी पड़णै रै सागै न्हावण सारू तातै पाणी री जरूरत लखावण लागगी। लारलै बरस तांई तो लोखंड रै बण्योड़ै हमाम सूं पाणी

ठिकाणो :
144, लढ़ा निवास
महाजन, बीकानेर
मो. 9982502969

तातो करता रैया पण अबकै दियाळी माथै जको घर भाड़ै लियो, उणमें हमाम बरतणै री जाबक ई गुंजायस कोनी। बियां ई सहर में लकड़ी–छाणो बपरावणो झंझट रो काम हो। नवै घर रो मालिक तो आगूंच कैय दियो, ''म्हैं हणै ई रंग–रोगन करवायो है, इण सारू देसी चूल्हो–हमाम कोनी चालैला। धुंवै सूं घर रो रूप–रंग बिगड़ जावै।''

चूल्है री ठौड़ तो कदेई गैस चूल्हो बपरा लियो, पण पाणी तातो करण रो काम अजै हमाम भरोसै ई हो। दादी थकां तो घरै हारो धुकबो करतो अर उण माथै टेक्योड़ी देगची में तातो पाणी त्यार ई लाधतो। दादी परलोक गई अर हारो गांव में रैयग्यो। नौकरी सारू स्हैर में गूदड़ा न्हाख्यां नै दस बरस बीतग्या। आं दस बरसां में तीन घर बदळ लिया पण भळै ई हमाम कांटो काढै हो। कीं कचरो–फूस घर सूं कढ जातो तो कीं लकड़ी–छाणो मोल ले आवता। इण चौथै घर में पूगतां ई हमाम रो बगत पूरो हुयग्यो। अबै गीजर बपरावणो पड़सी। गैस गीजर सावळ रैवैला का बिजळी वाळो। इण रो निवेड़ म्हारै सारू अबखो काम हुयग्यो। जोड़ायत अैड़ी बातां में मगज कोनी खपावै। ''थे जाणो, म्हनैं कांई ठाह'', फगत अेक ओळी सूं बा आपरो लारो छुडा लेवै। बियां बा म्हारो सुभाव ई जाणै। जे बा कीं बता ई देवै, म्हैं सोरै–सांस मानूं ई तो कोनी।

म्हैं जमानै रै ढंग–ढाळै मुजब गूगल बाबै री शरण लीवी। यू–ट्यूब माथै वीडियो देख्या। वीडियो बणावणियां रो ध्यान मूळ बात करता शेयर–लाइक–कमेंट माथै बेसी रैवै। आठ–दस मिनट गाळ्यां पछै ई बात रो नितार कोनी निकळै। कोई गैस गीजर नै चोखो बतावै तो कोई बिजळी वाळा गीजर नै सुरक्षित। अेक देवीजी तो आपरै यू–ट्यूब चैनल माथै दोनूं भांत रा गीजर बेचण री जुगत करती दीसी। म्हारै सारू सुरक्षा रो मापीणो जित्तो जरूरी हो, बित्तो ई महताऊ हो गीजर रो बजट। मील री मुनीमी में रासन–भाड़ै रो बंदोबस्त मस्सां हुवै। टाबरां री भणाई रो खरचो ई अबै बडो ठाम बणग्यो। कुल मिला'र धाको–सो धिकै। रात नै मोड़ै तांई आ अळोच चाली भळै ई मुकामसर कोनी पूग्यो। छेकड़ दिनूगै मील मालिक रै बेटै सूं सल्ला–सूत री सोची, जद जाय'र नीठ आंख लागी।

अगलै अेपीसोड रा निरदेसक सेठजी रा सपूत है जका दिल्ली सूं अेमबीअे री भणाई कर'र बावड़्या है अर अबै घर रो धंधो संभाळै।

''बाबू साब नूंवो मकान मालिक हमाम सारू साफ मना कर दियो। अब गीजर री आडी आप ई सुळझावो।'' म्हैं विगतवार सारी बात बता'र मदद मांगी।

आ फिलम सरू हुवतां ई गीजर वाळी बात तो बिसरगी अर अेक नूंवी घरळ–मरळ पोळाइजगी।

''अंकल आप घर रा कित्ता रुपिया भाड़ो देवो महीनै रो?'' बाबू साब पूछ्यो।

''पैलां सात हजार लागता अर नूंवै घर रो धणी आठ पर अड़ग्यो। बिजळी-पाणी रा न्यारा।'' म्हैं बतायो।

''आपनै इण सहर में आयां नै कित्ता बरस हुयग्या?'' बां नूंवो सवाल कर्‌यो।

''जद सूं गांव छोड्यो... मोटामोटी दस बरस मान लेवो।'' म्हैं मनोमन गिणती करी।

''आ ई गळती कर दीवी। जे अठै आवतां ई प्लॉट लेय'र घर मांड लेवता का कोई फ्लैट ले लेवता तो अजै तांई करजो उतर जावतो अर जायदाद रा मालिक ई बण जावता।'' बां हिसाब लगावतां कैयो।

''भाड़ो मस्सां भेळो हुवै बाबू साब, आपरो घर खरीदण सारू तो झोळो-खंड रुपिया चाईजै।'' म्हैं पीड़ परगासी।

''आजकल बैंकवाळा रुपिया लेय'र लारै भाजै, कोई लेवण वाळो चाईजै। भाड़ै री ठौड़ ईएमआई भर देवो। आप तो अबै ई इण बाबत विचार करो।'' बात पूरी कर'र बाबू साब तो आपरै काम में बिलमग्या, पण म्हारी अळोच सारू नूंवो मोरचो खोलग्या। कांई म्हनैं भाड़ै रै घर में भटकणै री ठौड़ आपरो घर खरीदणो चाईजै? स्हैर में खुद रै घर रो सुपनो बरसां सूं म्हारै मन में है। फगत म्हारै ई क्यूं, जोड़ायत अर टाबरां री आंख्यां में ई औ सुपनो पळै। केई बार औ सुपनो मूंडो काढै, पण म्हैं सुवांज नीं हुवण री बात गोखतां उण नै बीजी चिंतावां हेठै दाब देवूं।

बाबू साब री बात उण दिन लगोलग मन में गूंजती रैयी। आपरो घर तो आपरो घर हुवै। आखी उमर बोरिया-बिस्तर ठरड़णो कुण चावै। मन में आई कै ओखी-सोखी अबै हिम्मत कर लेवणी चाईजै। दोघाचिंती रो बिंदु औ हो कै घर सारू जमीन सोधणी चाईजै का फ्लैट।

जग-जाणीती बात है प्लॉट लेवणो दोरो अर उण माथै घर मांडणो तो सै सूं दोरो। दो कमरा-रसोई रै छोटै-सै घर रो चेजो पोळावां तो ई अेक साल में पूरो कोनी हुवै। कदैई ईंट, कदैई सिम्मट, कदैई बजरी तो कदैई सरियो, समान ढोवतां-ढोवतां आदमी आखतीज जावै। चिणाई रो मिस्त्री, टाइल रो मिस्त्री, पुट्टी रो मिस्त्री, बिजळी-पाणी फिटिंग रो मिस्त्री, लकड़ी रो मिस्त्री, बीस भांत रा मिस्त्री बुलावणा पड़ै। हरेक मिस्त्री सारू जिनसां बपरावणी पड़ै। बांनै परोटणा पड़ै। अेक मकान बणै इत्तै धणी री पीअेच.डी. सी हुय जावै। भूतल रै घर करता फ्लैट अमूमन कमती दाम में मिल जावै। मगजमारी तो जाबक ई कोनी करणी। सोसायटी रो मालिक चाबी सूंपै हाथ में। बियां तो फ्लैट रो चाळो इण स्हैर में नूंवो है। दसेक बरसां पैलां अेक सोलर कंपनी आपरै स्टाफ रै रैवास सारू स्हैर रै

बारलै पासै अेक चार तल्लै रो टावर बणायो। उणरै हरेक तल्लै माथै चार रैवास हा, मतळब अेक टावर में कुल सोळै रैवास। लारलै चार-पांच बरसां में अैड़ा केई नूंवा टावर त्यार हुयग्या। अब तो नामी ठेकेदार इण पेटै लूंठी योजनावां सागै आयग्या। नौकरी-पेशा लोग जमीन लेय'र घर घालण में रुचि कम लेवै। इणीज कारण नूंवै टावर रो पाइयो लागै, उणरै सागै आगूंच बुकिंग हुय जावै।

म्हारै मन में आई कै किणी चोखी सोसायटी में पेसगी देय'र सिर लुकोवण सारू छात रो बंदोबस्त कर लेवूं। जोड़ायत सूं बात करी तो बण सदां दांई ''थे जाणो'' कैय'र माळा म्हारै गळै में घाल दीवी। बापूजी रैया कोनी अर टाबर म्हारी दीठ में अैड़ी बातां सारू हाल टाबर ई हा। छेकड़ गांव में रैवण वाळा काकोसा सूं बात करी। बै पुराणा आदमी हा। फ्लैट आळो हिसाब बांरै भोगै कोनी पड़्यो, ''जमीन लेय'र मकान मांड बेटा। अै फ्लैट आपणै कांई काम रा? नीं धरती आपरी, नीं आभो। जमा पूंजी खरच'र अधबिचाळै टंग्योड़ा रैवो—चमचेड़ दांई।''

गतागम में उळझ्योड़ो अेक दलाल सूं बात कर लीवी। बण केई सौदा दिखाळ्या। अेक नूंवै बणतै टावर रो हिसाब-किताब म्हनैं सावळ लाग्यो। फेर तो बण नित फोन करणा सरू कर दिया, ''जोरदार मौको है भाईजी, चूको ई मत। कुल चौईस फ्लैट रो टावर है जिणसूं चवदै री तो आगूंच बुकिंग हुयगी। राज्य बजट पछै दस फीसदी कीमत बध जासी।''

म्हारी नींद गिगनारां जा चढी। मन री पाटी माथै मांडूं-डोवूं। कदैई बैंक-डाकघर में जमा अेफडी-आरडी री पूंजी नै जोडूं तो कदैई लोन रो हिसाब फळावूं। आपरै घर री बात सोच'र अंतस में झुरझरी-सी हुवै। नींद में घर रै नांगळ रा सुपना ई आवण लागग्या। फाडी फंस रैयी तो प्लॉट अर फ्लैट बिचाळै। कदैई लागै प्लॉट ठीक रैसी। मनमरजी सूं घर बणा लेसां। अेकर ढांचो खड़्यो हुय जावै, फेर टीका-टमका हुवता रैसी। कदैई लागै फ्लैट रो सौदो ठीक है। निरणै करणो महाभारत हुयग्यो। जियां कपड़ा रो दुकानदार आपरै साम्हीं बीस भांत रा थान खिंडाय देवै अर उणसूं अेक पोसाक रो कपड़ो छांटणो हुवै, ठीक वैड़ी ई गत। छेकड़ बसंत मास्टरजी चेतै आया। मास्टरजी कदैई म्हारै गांव री सरकारी स्कूल में भणावता। बै म्हारी गळी में ई भाड़ै रैवता। अबै बै राज री नौकरी पूरी कर'र इण स्हैर में बसग्या। गुरुजी ई म्हनैं सही राय दे सकै। गुरु में कोई चमत्कार हुवै जद ई तो उणरो दरजो भगवान सूं ऊंचो कथीज्यो है। म्हैं वार-तिंवार गुरुजी सूं फोन माथै पगां लागणा करतो रैवूं। इण बार म्हैं बां सूं बगत लेय'र अरु-भरु मिलण मत्तै पूगग्यो। म्हारी राम-कहाणी सुण'र बै केई ताळ मून रैया। म्हैं सोच्यो कै बै प्लॉट अर फ्लैट रै नफै-

नुकसाण नै फळावता हुवैला। जद बां आपरी मनगत परगासी तद विचारणा सारू अेक नूंवो बारणो खोल दियो।

''थूं क्यूं तो प्लॉट लेवै अर क्यूं फ्लैट। म्हैं थनैं स्हैर री ठावी ठौड़ चोखो मांड्यो-मंडायो घर दिराय देवूं।''

''कठै? कीमत कांई हुवैला?'' म्हनैं अचंभो हुयो कै कठैई मास्टरजी रिटायर हुयां पछै दलाली तो नीं सरू कर दीवी।

''जठै थूं अबार बैठ्यो है। हां, औ म्हारलो घर। कीमत बजार में ठाह कर लेसां। औ घर म्हैं ऊभो रैय'र बणायो है खुद सारू। ईंट-सिम्मट सगळी अेक नम्बर लागेड़ी है।'' बां कैयो।

''पण गुरुजी आप सात-आठ साल पैलां घर बणायो, अबै बेचो क्यूं?'' म्हारै कारण समझ में नीं आयो तो सीधो पूछ लियो।

''बेचूं नीं तो कांई करूं? बेटी ब्याह पछै आपरै सासरै गई अर बेटो हैदराबाद में नौकरी करै। बै बठै भाड़ो भरै। म्हैं डोकरो-डोकरी दो अठै रैयग्या। अठै जीव लागणो अबखो हुयग्यो। बेटो-बहू हैदराबाद बुलावै। पोतो-पोती रोज वीडियो-कॉल करै। छेकड़ली उमर टाबरां में रैवण रो मत्तो है, सो इण घर री बिकवाळी काढी है।''

''तो बेचो क्यूं? इणनै भाड़ै दे देवो अर थे बेटै कनै चल्या जावो।''

''भाड़ै देय जीव नै कांस मोल लेवणी है। जकै घर नै जीव दांई राख्यो है उणनै किणी नै भोळावणो जचै कोनी। बियां भाड़ै भरोसै तो लागत रो ब्याज ई कोनी मिलै। इण रा सावळ दाम उठ जावै तो बठै कोई घरू छात री बिध बिठावां। लूंठै नगरां में घर खरीदण सारू भारी बजट चाईजै। थूं लेवै तो पैल थारी, नींतर म्हनैं तो बीजो गिराक मिल ई जासी।'' बै बोल्या।

''ठीक है। म्हैं घरै सल्ला कर'र बतासूं।'' म्हैं बात नै निवेड़ण सारू कैयो।

पाछो घरै आवतां म्हारै मन में अेक नूंवी कथा सरू हुयगी। बापूजी ढाणी में कोनी रैया, गांव में घर घाल्यो। म्हैं गांव में कोनी बस्यो, स्हैर आयग्यो। कांई म्हारा लाडेसर इण छोटै स्हैर में जी धपावैला। कठैई दस-बारह बरसां पछै म्हनैं ई म्हारै घर री बिकवाळी तो नीं काढणी पड़ैला। जे इयां ई है तो भाड़ै रैवणो कांई माड़ो है।

आथण जीमण पुरसतां जोड़ायत फिलम नै पाछी सागण ठौड़ खींच लेयगी, ''बो गीजर कद आसी? थांरी जोड़-बाकी अजै पूरी हुई का कोनी? इयां कींकर पार पड़सी म्हारा रामजी! गीजर नीं तो बिजळी वाळी राड़ ई ला देवो, जको तातै पाणी रो सुभीतो तो हुवै।''

◆◆

डॉ. मनमोहन सिंह यादव

गायां रो गवाळियो

कासियो बरस पचासेक रो। काछ तांई धोती पैरै। माथै पर अबार अेक खाकी रंग रो बोदो अर बीत्योड़ो साफो। ओछी गोड़ी रो मिनख। मोडकी गाय हमेसा बैड़की लागै। ओछी गोडी रै कारण बीं री उमर नीं लखावै। डौळ सारू मूंछ्यां भी राखै, तो वार-तिंवार बां माथै बट भी लगावै। बोलण में तेज अर तरखर। पशुवां नै चरावण रो सागीड़ो कारीगर है कासियो।

चौमासै में जद भी आभै सूं पाणी बरसै अर धरती फूटण लागै तो गांव री गायां नै अेक ठौड़ भेळी कर'र चौपो बणा लेवै। चौपो गायां रो इसो टोळो हुवै जकै में गांव री सुवावड़ी अर बाखड़ी दोनूं तरां री गायां हुवै। साथै बीं चौपै में दड़ूकता-ढींकता दो-च्यार गोधा भी हुवै, जका टैमसर चौपै री गायां नै धीणै करै। सुवावड़ी गायां ई चौपै में दिनूगै आवै अर आथण नै आपरै धणी रै साथै जाय'र ठाण माथै खड़ी हो जावै। बाखड़ी गायां हमेशा चौपै में ई रैवै, जद तांई कै चौपो खिंडै नीं। अैसकै जम'र बिरखा हुई। सरबाळै मेह बरस्यो। धरती फूटतां ई गांव में चौपै रो हेलो होयग्यो। धरती माथै जद लीलोतरी बापरी तो चौपो ई सरू होयग्यो। पैलै दिन ई कासियो बण-ठण'र आपरै हाथ में तार सूं गूंथ्योड़ो लांबो सोट लेय'र चौपै रै बाड़ै कनै आय'र ऊभग्यो। बाड़ै री भींत माथै कुंकुं रो साखियो मांड्यो। अेक-दो दिन तो गायां री छीड़ ही, पण पांच-सात दिनां पछै चौपो आपरी पूरी रंगत में आयग्यो। ईं चौपै में अबार भांत-भांत री गायां है—सूधी अर स्याणी, मिजळी अर मरखणी, अचपळी अर अलाड़ी, हिरायवड़ी

ठिकाणो :
उदयरामसर
बीकानेर (राज.)
मो. 9460021851

 ISSN : 2320-0995

अर चिमकोर। आं गायां में कोई मोडकी गाय है तो कोई खुड़की। कोई बंडगी गाय है तो कोई मोटै सींगां री। केई गायां तो इसी है जकी आपरै थणां नै खुद ई चूंघलै। कासियो बां गायां रै मूंढै माथै छींकी बांध्योड़ी राखै, नींस तो आथण नै टोगड़िया-टोगड़्यां भाटै नै चूंघसी कांई? चौपै में इक्की-दुक्की इसी गायां भी है जकी भूखी नागण दांई सैंग दिन आपरी जीभ नै लपलपावती रैवै। ठावा मिनख बीं गाय नै सांपण री संज्ञा देवै। ईं चौपै री सुवावड़ी गायां सैर-अच्छेर दूध सूं लेय'र पांच सैर तांई अेक टंक रो दूध देवै। चौपै में अबार गोधा भी भांत-भतीला है। केइयां रा सींग मोटा है तो केइयां री थूही मोटी है। केई मरखणा है तो केई सीधा भी। गायां भी भांत-भतीलै रंग-बरण री है। काळी, कबरी, चितकबरी, राती अर धोळी। अबार ई चौपै में दो गोधा तकड़ा है। अेक काळियो गोधो है अर दूसरो रातियो। दोनूं गोधा घणखरी बार आपस में लड़त मांडलै।

कासियो गांव रो पुराणो गवाळियो है। आपरी आधी जूण ईं चौपै में ई पूरी कर दी है। हाथ में हरमेस लांबो सोट राखै, पण बो आज तक पशु री पीठ माथै अेक भी सोट नीं बाह्यो। मिजळै अर मरखणै पशुवां कानी डांग उबकावै जरूर है, पण बो आपरी तेज अर तरखर आवाज सूं ई कांटो काढ लैवे। बीं री आवाज इत्ती तेज है कै जद बो किलकारी मारै तो चौपै रा सगळा पशु चौकन्ना होय'र पलटण रै फौजी दांई अटेंसन में आ जावै। चौपै में पशुवां नै चरावतै कासियै नै अणबोल आणंद आवै। कासियो तो पूरो रो पूरो ई पशुवां में जाणै रमग्यो है। आं पशुवां खातर बो खुद नै जाणै अरपण ई कर दियो है। चौपै री गायां नै रिझावण खातर चौपै री गायां रा भांत-भंतीला नांव थरप राख्या है। किणी गाय रो नांव चम्पा है तो किणी रो चमेली। किणी रो नांव राधा है तो किणी रो रजिया। किणी रो नांव लैला है तो किणी रो मरवण। अै गायां इत्ती ट्रेंड होयगी है कै नांव लेवतां ई बै कासियै कानी ढींकण लाग जावै। पण सायरां कैयी है कै अेक मिनख रो अणबोल आणंद दूजै मिनख नै नीं सुवावै। जको मिनख आपरै मन रै आभै में हाथ लगावण री खेचळ करै, बीं मिनख नै दूसरो मिनख आपरै पगां में लेवण री कुबध सरू कर देवै।

अबार कासियै रो आंणद भी बीं रै पाड़ोसी धरमियै रै खातर मोटी अबखाई बण्योड़ो है। बींनै देख'र बो मांय रो मांय भुसळीज रैयो है। ईसकै री आग में भुसळीजतो धरमियो छैकड़ गांव रै अेक खोटै अर खोड़ीलै पंच मुगनीराम कनै जाय'र बोल्यो, ''पंचां! कासियै नै पशु चरावतां बो'ळा दिन होयग्या है। अबै म्हनै ई मौको देवो। म्हैं थांरी गायां नै मुफत में चराय देसूं। चौपै नै चरावतां गांव री रोही में जे कोई रुळी-खुली गाय मिलगी तो बीं गाय नै लाय'र थांरी बाखळ में बांध देसूं। पण अबै कासियै रो पाप काटो अर म्हनै चाकरी करण रो मौको देवो। म्हैं तो थांरो दास हूं, थांरो चाकर हूं।''

मुगनीराम बोल्यो, ''थूं फिकर मत कर, केई दिनां सूं म्हारै मगज में ई आ बात आयोड़ी है। जे लय लागी तो सवारै बींरो डोरो कर देसूं।''

आगलै दिन दिनूगै ई मन सुवावतो बायरो बाजै हो। पूरबली पून रै फटकारां सूं कासियै री काया हरी हुवै ही। बीं री काया रै रूं-रूं में सोराई बापरगी। हाथ में लांबी डांग लियां बागड़्यां रै बाड़ै री फाटक रै बारै ऊभो बीड़ी खींचै हो अर चौपो उछेरण री बाट में हो। इत्ती ताळ में अचाणचक सींगां में जेवड़ी घाल्यां मुगनीराम अेक गाय नै लेय आयो। कासियो जद बीं सूं रामरमी करी तो बो बोल्यो, ''सुवावड़ी गाय है। आथण नै लेय जासूं।''

कासियो बोल्यो, ''ठीक है सा, पण थांनै ठा हुवैला कै सुवावड़ी गाय रा दोय सौ रुपिया है, महीनै रा।''

मुगनीराम बोल्यो, ''रुपियो तो म्हैं थनै अेक ई कोनी देऊं।''

कासियो बोल्यो, ''मालकां, आ कांई बात करी? म्हारै ई लारै टाबर है, बांनै भी भूख लागै?''

मुगनीराम बोल्यो, ''बांनै भूख लागै या तिस्स, बा थूं जाणै। म्हैं तो थनै अेक कोडो ई देवाळ नी हूं। गांव री आखी जमीन म्हारी अर म्हारै बाप-दादां री है। थनै झख मार'र ईं गाय नै चरावणी पड़सी।''

कासियै नै झाळ तो घणी ई आई, पण मांय रो मांय बीं झाळ नै पीवतो बोल्यो, ''ठीक है मालकां, थे जमीन रा धणी हो, ईं सारू आपसूं अेक कोडो भी नीं लूं, पण आथण नै गाय नै लेय जरूर जाया।''

आपरी गाय रै सींगां सूं जेवड़ी काढतो बो बोल्यो, ''कासिया, ध्यान राखजै! जे गाय रै हाथ ई लगा लियो तो थूं थारी चंदरमा सोच लियै। म्हैं दूसरै खाखै रो मिनख हूं। सावचेत रैयी। नीं तो धंधै सूं हाथ धोय बैठैलो।''

मुगनीराम री बात सुण'र कासियो कीं नीं बोल्यो। मनोमन सोच्यो—स्यात घरआळी सूं लड़'र आयो है। हरि-सुमरण रै टैम भी कब्बो अर कुसरो बोलै। मगनीराम रै गयां पछै कासियो बीड़ी सिळगाई अर बींरो धूंवो काढतो चौपै नै उंछेरियो ईज हो कै अेक गाय अचाणचक चौपै सूं अळगी छिटक'र भाजण लागी। बीं गाय नै भाजती देख'र बो ई लारै भाज्यो अर आडफेर देय'र बीं गाय नै पूठी चौपै में घाली। बस्ती सूं बारै निकळ'र चौपो जद गांव री गोचर में पूग्यो तो सगळा पशु जमीं माथै मुंह मारण लाग्या। गोचर में भांत-भंतीलै घास सूं जबरी लीलोतरी बापरोड़ी ही, पण अणंत में पसर्‌योड़ै गंठियै घास री लीलोतरी तो इण लोक सूं परबारै री लीलोतरी लागै ही। ईं गंठियै में ऊभा च्यार-पांच

 ISSN : 2320-0995

गधा ढेंचू-ढेंचू करता टिडक्या करै हा। पण जद चौपै नै नैड़ो आवतो देख्यो तो बै मत्तै ई परियां सिरकग्या अर मनोमन बोल्या, ''आवो मालकां, ईं गोचर में पैल थांरी है, म्हांरी गिणती तो थानिया-भगानिया में ईज हुवै है। चौपै रा पशु निरवाळा होय'र जद लीलै में मुंह मारण लाग्या तो अेक झाड़ रै कनै बैठ'र कासियो सिरावण करण लाग्यो। रोटी रो पैलो कवो ई लियो हो कै बीं देख्यो, दो रतौर झाड़ मांय सूं लड़ती-झगड़ती बारै निकळी। जद बै केई देर तांई गुत्थमगुत्थी करता रैया तो कासियो मुळक'र सोचण लाग्यो—लागै है, आज दिनूगै-दिनूगै ई महाभारत मांडली है। सिरावण करतो-करतो बो केई ताळ बांरी लड़ाई देखतो रैयो। छैकड़ हार-थक'र बै दोनूं जोधा पूठा ई झाड़ में बड़ग्या। सिरावण कर्‌यां पछै कासियो चौपै नै आगीनै टोरण लाग्यो। जद चोपो गांव री ओरण में पूग्यो तो बठै पशुवां नै फुरवां अर टाळवा जीमण मिलण लाग्या। बैकर, लांपड़ी, भुरट, कांटी अर बांठां-झाड़ां रै बिचाळै ऊभी सैवण अर धामण घास री पसरती लूबर भी मिली। आ लूबर डांगरां खातर रसगुल्ला अर रसमळाई ईज है। पेट में आधार आयां पछै धरती रा सै जीव चेतन होय जावै। अेक गोधो अेक ठोड़ ऊभो-ऊभो ई जोर सूं दड़ूकण लाग्यो हो। जद बो केई ताळ तांई दड़ूकतो रैयो तो कासियो बीं रै कनै जाय'र बीं रै पूठै माथै जोर सूं आपरो हाथ मार्‌यो। गोधो अचाणचक इयां शांत होयग्यो जाणै उबळतै दूध में ठंडै पाणी रो छींटो मार्‌यो हुवै। धूंवै दोपारै रै टैम अेकै कानी काळियो अर रातियो दोनूं गोधा अेक-दूसरे रै साम्हीं तण'र खड़्या हुयग्या अर खेंरू करण लाग्या। साथै ई अेक-दूसरै नै देख'र जोर सूं दड़ूक्या। बां दोनां री पैलवानी नै देख'र कासियो सोच्यो—ईं दारासिंघ अर किंगकांग दोनां नै शांत करावणा पड़सी, नीं तो चौपै रा सगळा पशु रैफरी बण जासी। बां दोनूं गोधां रै बिचाळै जाय'र कासियो अेक-दूजै कानी सोट उबकायो अर बांनै बठै सूं अळगा कर्‌या। बां दोनां नै ठौड़सर कर'र कासियो चौपै नै तळाब कानी टोर दियो। गोसाणो तळाब पाणी सूं काठो भर्‌योड़ो हो। पालर पाणी नै देखतां ई पशु आप-आपरा मोरचा संभाळ लिया। केई पशु पाणी में ऊभा-ऊभा ई सुस्तावै हा अर केई तळाब रै कनै ऊभा रूंखड़ां री छिंयां में जाय बैठा। घणी ताळ पछै सुस्तावतै पशुवां नै उठाया अर बांनै चौपै रै दूजै पशुवां रै साथै गांव कानी टोर दिया।

बावड़ती बगत अचाणचक मुगनीराम री गाय पुनमै किसान री पौळछ में कूदगी। बीं गाय नै पौळछ में देख'र पूनमो जद बींनै घेरण लाग्यो तो बा साम्हीं सींग कर्‌या। बीं रै सींगां सूं बचतो पूनमो पसवाड़ै हुयो अर पछै गाय रै लारै भाज'र अेक सोट बीं रै मौरां पर बरपायो, जणै कठैई जाय'र बा गाय खेत सूं बारै निकळी। ईं रण नै देख'र कासियै रो माथो ठणकग्यो। बो पूनमै नै कैयो, ''लागै, आज तो राड़ होसी। म्हनै लागै मुगनीराम ई

गाय नै चौपै में पाटी पढा'र ई भेजी है। कै पैलां थूं कुबध करसै, पछै म्हैं देख लेसूं। थनै ईं रै सोट नीं मारणो हो भला मिनख।''

बो बोल्यो, ''जे नीं मारतो तो आ पूठी फिर'र म्हनै सींगां में पोय लेंवती। जे आज बात उठी तो म्हैं मुगनीराम नै कैय देसूं कै सोट म्हैं मार्‌यो है।''

पूनमै सूं बात कर'र कासियो अणमणो होयग्यो। बो होळै-होळै चौपै नै गांव कानी टोरण लाग्यो। सोट रै फिकर में केई बीड़्यां ई फूंक दी ही। आथण नै जद सूरज बिसूंजण में बिलांद-अेक रैयग्यो तो चौपो रुणझुण-रुणझुण करतो गांव पूग्यो। गांव बस्यां सूं पैलां ई मंगता आ जावै, बियां ई चौपै रै पूग्यां पैलां ई मुगनीराम बागड़्यां रै बाड़ै कनै रासण-पाणी लेय'र ऊभो हो। बो आपरी गाय नै अैडी सूं लगा'र चोटी तांई देखी। छैकड़ बीं रै मनचींती होयगी। गाय रै मोरां माथै सोट री लील पाधरी निगै आवै ही। गाय रै मौरां माथै सोट रो सैनाण आंधै आदमी नै ई दीखै हो। बीं चोट नै पंपोळ'र मुगनीराम बोल्यो, ''कासिया! थूं तो थारली कर ली नीं? म्हैं थनै पैलां ई बरज्यो अर बकार्‌यो हो कै म्हारी गाय रै हाथ ना लगायै, पण थूं तो हाथ कांई, ईं रा हाड ई तोड़ नाख्या। म्हारै सूं खेबी करणी थनै घणी मूंघी पड़सी। थूं गवाळियो है कै कसाई?''

कासियो गिड़गिड़ायो, ''मालकां, म्हैं म्हारी आस-औलाद री सौगन खाय'र कैऊं कै म्हैं थांरी गाय रै मौरा पर सोट नीं मार्‌यो। थांरी गाय जद पूनमै बेलदार री पौळछ में कूदी जणै बो सोट री मारी। थांनै ठा है, आज पैलो दिन हो। जे थे म्हनै बताय देंवता कै म्हारी गाय हिरावड़ी है तो म्हैं बींनै बिचाळै राखतो अर बीं रै गळै में टोकरी भी घालतो। आगै सूं थांरी गाय रो पूरो ध्यान राखसूं।''

मुगनीराम बोल्यो, ''अबै आगै सूं तो ध्यान थूं कांई, थारो कोई और भाई ही राखसी।'' लाल-पीळो होय'र मुगनीराम बठै सूं आपरी गाय रै सींगां में जेवड़ी घाल'र आपरै साथै लेय ढळ्यो।

रात नै गांव रै गवाड़ में पंच भेळा हुया। बठै कासिये नै भी बुलायो। बठै बैठ्या सगळा पंच मुगनीराम रा पट्ठा हा। मुगनीराम बोल्यो, ''सुणो पंचां! म्हैं आज ई म्हारी सुवावड़ी गाय नै चौपै में घाली ही अर आज ईज कासियो चानणो कर दियो। म्हैं ईं नै घणो ई पाल्यो, घणो ई बरज्यो हो कै म्हारी गाय रै हाथ ना लगायै, पण पैलै ई दिन औ म्हारी गाय रै मौरां माथै सोट मार'र बापड़ी री चामड़ी उधेड़ नाखी। पीपळ रै गट्टै कनै गाय ऊभी है, जे किणी पंच नै संसै है तो गाय रै मौरां माथै हाथ लगा'र देख लो। हाथ कंगन को आरसी क्या अर पढ़े-लिखे को फारसी क्या?''

अेक पंच बोल्यो, ''बोल भाई कासिया! कांई बात है?''

 ISSN : 2320-0995

बो बोल्यो, ''मालकां, म्हनै बीस साल होयग्या चौपै री गायां नै चरावतां, आज तांई अेक भी ओळभो नीं आयो। बीस सालां में आज पैली बार ओळभो आयो है। म्हैं माफी चाऊं, पण आंरी गाय रै सोट म्हैं कोनी मार्‌यो। पूनमै बेलदार रै खेत में जद आंरी गाय कूदी तो बो सोट री मार दी। आंरी गाय हिरावड़ी है। जे अै म्हनै पैलां कैय देंवता तो म्हैं आ नौबत ई नीं आवण देंवतो...।''

मुगनीराम बिचाळै ई बोल पड़्यो, ''कासिया! थूं तीसरै घरां राड़ मत घला। चौपै में गाय घाल्यां पछै जिम्मेदारी थारी हुवै। म्हैं ना तो पूनमै नै जाणूं अर ना किणी और नै, सरासरी गळती थारी है। इसो काम तो कसाई ई कोनी करै।''

पंच पूछ्यो, ''मुगनीराम, अबै थूं कांई चावै?''

बो बोल्यो, ''म्हैं तो चाऊं कै काल सूं कासियो चौपै में नीं जावै, बस।''

पंच बोल्या, ''बोल भाई कासिया, अबै कांई करणो रैयौ? कसूर तो सगळो थारो ई है।''

कासियो बोल्यो, ''म्हैं कांई बोलूं मालकां, जद पंचां री पंचायत म्हनै ईज कसूरवार मान लियो है तो काल दिनूगै सूं कोई दूजो काम पकड़सूं।''

पंचां री मून हामळ रै पछै कासियो बठै सूं उठ'र ब्हीर हुयग्यो।

दूसरै दिन कासियै रै बिना चौपो मोड़ो उंछर्‌यो अर आथण नै जद गांव में पूग्यो तो आखै गांव में चौपै री खराब हालत री खबर लागी कै आज चौपै रा सगळा डांगर डावांडोल हुयग्या हा। किसानां री पौळछां में दिनभर कूदता रैया। दो गोधा तो आपस में इसा लड़्या कै बीं लड़ाई में अेक गोधै रो सींग ई टूटग्यो।

अब गांवआळां नै ठा लागग्यो कै आं लखणां तो औ चौपो ज्यादा दिन नीं चाल सकै। जद ईं बात रो ठा गांव रै मुखियै मास्टर मातादीन नै लाग्यो तो बो कासियै नै बुलायो अर बीं सूं सगळी बात पूछी अर पछै बोल्यो, ''थूं तो सवारै सूं चौपो संभाळ। जकै मिनखां नै मूंढो धोवण रो सऊर नीं है, बै ई गांव में पंचायती छमकै? गांव में बांदरा नीं, मिनख भी बसै। अबै देखसूं कै ईं गांव में इसो–किसो भीम है, जको थारो हाथ झाल'र थनै चौपै सूं बारै कर देसी!

◆◆

ललित शर्मा

चुगली रो चक्कर

अेक गांव में लुगायां अनाज उगावण तांई खेतां में मोकळी मैणत करती। बै खेत में हळ जोतती, ट्रेक्टर चलाती, खाद गेरती। खेतां नै कीड़ा-मकोड़ा अर जीव-जिनावरां सूं बचावण नै, चोरां सूं बचावण नै मोकळी हाजरी बजाया करती। कणै-कणैई खेतां में रात नै रुक भी जाया करती। चौका-चूल्हा रो सगळो काम सलटा'र, घर रो सगळा काम निवेड़्यां पछै बै खेतां में बैठी अनाज री कमाई रो मोकळो हिसाब करण में बावळी हुयोड़ी रैवती। बै ईं काम वास्तै न तो मजूर राखती अर न अनाज उगावण में चोखी सलाह लेंवती। बांनै न अनाज उगावण रो अनुभव हो अर न खेतां री सलाह लेवण नै कठैई आवती-जावती। रुपिया बचावण रो, रुपिया भेळा करण रो पण बांनै मोकळो ग्यान हो। बस, कमाई सारू रात-दिन मोदीज्योड़ी रैवती। अेकली काम में लाग्योड़ी रोजीना गांव में पईसा बचावण री दुंडी पीटती रैवती।

बीं गांव में अेक बापड़ो बूढो गरीब आदमी रैवतो। बीं नै खेतां में अनाज उगावण रो मोकळो ग्यान हो। बो आपरी सलाह बिना पईसा दिया करतो। सलाह देवण री कोई फीस भी नीं लेंवतो। बो ईं काम सारू हमेस त्यार रैवतो। लोगां रा खेतां में आया-जाया करतो। बीं री नेक सलाह सूं खेतां में लोगां रै मोकळो धान हुंवतो। अबै बो खासो बूढो हुयग्यो हो, पण फेरूं ई लोग बीं सूं सलाह लेंवता। पण गांव री बै लुगायां बीं सूं कदैई सलाह लेवण नै नीं आई। बै बीं नै कीं कोनी समझती ही। जदकै सरकारी अर गैर सरकारी संस्था में बो अेक अनाज उगावण रो चोखो सलाहकार मानीजतो हो। सगळा अधिकारी तकात बीं री

ठिकाणो :
Borpukhari Road
Khalihamari
Dibrugarh-786001
(ASSAM)
मो. 9435032650

 ISSN : 2320-0995

बात नै मानता। दूजै प्रदेसां रा लोग भी बीं नै बुलावता हा। बो बिचारो अनाज उगावण रा नुस्खा भोत आछै तरीकै सूं समझावतो। बीं री बातां में दम हुंवतो। बंजर भूमि में भी अनाज उगावण री विधि उण कनै ही। इणसूं केई बंजर भूमिवाळा ई बीं री सलाह सूं अनाज उगावण लागगग्या। बो सलाह देवण रो टक्को ई नीं लेंवतो। सागै ई खेतां में पौधरोपण ई सलाह देंवतो।

गांव रा कीं चुगलखोर लुगायां नै बीं बूढै रै बारै में भड़का दियो। अेक दिन बै सगळी लुगायां बींनै बुला'र पूछण लागी, पण बूढो बिचारो कीं नीं बोल्यो। बो मून धार्‌यां सो-क्युं सुणतो रैयो। आपरी नाड़ नीची कर्‌यां राखी। बीं टैम ई खेतीबाड़ी रा पुरस्कार देवणिया गांव में आयोड़ा हा। बांनै बेरो पड़्यो तो बै आया अर बोल्या, ''चुगली रै चक्कर में खेतां रा बंटाधार हो रैयो है, इब तो बचो! अै बूढा कोनी, खेती रा विद्वान आदमी है। आंनै पूजो। चुगलखोरां नै पूज्यां तो घाटो-घड़ियो ई रैवैलो। पेड़ उगायां बिना खेतां में चोखो अनाज होय ई नीं सकै।''

अबै बां लुगायां नै अक्कल आई। बै बीं बूढै मिनख आगै हाथ जोड़'र बिलखती बोली, ''म्हांनै माफ करो। म्हे तो विद्वान आदमी री कदर करणी ई छोड दी। आपरै कारण आपणो गांव दुनिया में आपरो नाम राखै। म्हैं म्हारो खूंटो ऊंचो राखण नै चुगळी-चाळा वाळां रो सागो दियो। पण अब म्हांनै चेतो हुयग्यो है।''

अबै रूंख लगावण अर ग्यानी आदमी री सलाह सूं बां लुगायां रै खेतां में भी मोकळो अनाज निपजण लाग्यो।

सेठजी रो त्याग

अेक सेठजी नै कोरी कमाई चोखी लागती। जे कारोबार में मुनाफो नीं हुवै तो बिसै काम कानी बै झांकता ई कोनी। रुपियां रै वास्तै सारी-सारी रात जागता रैवता। लालच में बावळा-सा इन्नै-बिन्नै डोलता फिरता। अेक दिन सेठजी अेक गुरुजी री कुटिया में गया। गुरुजी री धोक खाय'र बांरी सेवा करी अर आसीस लीनी। गुरुजी भोत राजी हुया। सेठजी, गुरुजी नै खुद रै व्यापार री अर कमाई री सारी बातां बताई। गुरुजी भी सेठ री बातां सुण'र भोत राजी हुया। बै बोल्या, ''समै रै गेल थारै मोकळी कमाई होसी। चोखो चालसी थारो व्यापार। थूं चिंता मत कर। म्हैं भी भगवान सूं अरदास करसूं कै तन्नै चोखी कमाई देवै।'' पछै गुरुजी चुप्पी साध ली।

सेठजी गुरुजी री बातां सुण'र भोत राजी हुया। बीं टैम सेठजी री निजरां कुटिया रै मांय पड़ी। सेठजी पूछ्यो, ''गुरुजी, कोरो अेक कमंडळ, अेकचटाई, अेक रुद्राक्ष री

माळा! आ के जिंदगी जियो हो थे ? थांरी कुटिया में बरसात रो पाणी नीं टिकै, घर टपकै। सोध्यां जीमण नै चार बरतन थांरै कनै कोनी लाधै। पण थे चिंता ना करो गुरुजी, म्हैं आपरै सुखद जीवण री सगळी व्यवस्था कर देस्यूं। थे तो म्हनै कमाई री नूंवी-नूंवी बातां बतावता रैया, जिणसूं कै म्हारो जीवण संवर जावै।

गुरुजी बोल्या, ''बेटा, ईं ग्यान रै वास्तै थनैं थोड़ो धीरज धारणो पड़सी। थनै कमाई चाईजै तो अेक काम और करणो पड़सी। ईं सूं थनैं भोत सुख मिलसी। रुपियां ऊपर सोवण री व्यवस्था हो जासी। रुपियां री परत बिछ जासी। पण ईं सारू थनैं अेक बरस तांई मोकळो त्याग करणो पड़सी। म्हारै जियां ई रैवणो पड़सी। थूं कर सकै तो सोचलै।'' पछै सेठ नै कनै बुलाय'र गुरुजी कैयो, ''म्हारै कनै अेक मंतर है, बीं नै जपण सारू थारै कनै सोनै-चांदी अर हीरा-मोती री सागै नगदी री भरमार हो जासी। कोई चीज री कमी नीं रैवैली।

सेठ बोल्यो, ''इसो मंतर तो म्हनैं अबार रो अबार बतावो गुरुजी।''

सेठ पईसा रो लालची हो। गुरुजी कनै रैवण रो धरम तो निभा लियो। केई महीना बीतग्या। गुरुजी भी सगळा मंतर सेठ नै बता दिया अर बीं नै कैयो, ''अबै थारो काम बणग्यो, थूं जाय सकै है।''

सेठ री आंख्यां में आंसू आयग्या। गुरुजी री आग्या पछै सेठजी बोल्या, ''गुरुजी, म्हैं रुपियां रै चक्कर में जिंदगी रो रिश्तो भूलग्यो। परिवार-समाज नै त्याग दियो। पण म्हनै थांरी कुटिया में अेक बरस भोत सौरी नींद आयी। म्हनै रोजीना धन-संपत्ति अर रुपियां री हायतौबा कोनी चाईजै। म्हारी तो जिंदगी थांरै पाण बदळगी। म्हैं तो बच्योड़ी जिंदगी आपरी सेवा में लगा'र ई आनंद लूटसूं।''

सेठजी अबै धन-माया रो मोह छोड'र आपरै आनंद री बातां सगळां नै बतावण लागग्या हा। गुरु-कुटिया में रैवण सूं बांरी जिंदगी सफळ होयगी।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

कमल कपूर

उल्थो : विमला नागला

चार लघुकथावां

करवा चौथ

करवा चौथ रा पैलाणा दिन, म्हे सगळी भायल्यां गवाड़ी रै बिचाळै बैठी उणनै उडीकै ही। आज रै दिन बा हर साल घुड़लियो भर'र अैड़ी रूपाळी-रूपाळी, सुनहरी काच री चूड़्यां, मैन्दी, अेकदम चटक लाल सुर्ख सिंदूर री डब्बी अर सुहाग-भाग रो घणकारो सामान लावती अर कोई घंटा-आधघंटा मांय ई बेच'र राजी-खुसी सगळां नै आसीसती थकी खाली घुड़लियो लेय'र पाछी बावड़ जाती।

वाह! उणरो ठसको भी सरावणजोग हो। अैड़ो गैरा रंग रो चमकणिया छींटदार घाघरा-पोलका पर गोटादार ओढणी ओढ्योड़ी, हाथां मायं पुणचा-सूदी रंगीन चूड़्यां खणखाती, सांवळा चौड़ा लिलाड़ पर आ चवन्नी जैड़ी लूंठी टीकी लगा'र पूरी मांग में सिंदूर भर'र पान सूं रंग्योड़ा होठां पर मुळक बिखेरती, पगलियां में पाजेब झणकाती जियां ई आवती, उणनै देखतां ई म्हे सगळी हारसिंगार जियां खिल जावती ही।

उणरो नांव भी तो अैड़ो रसीलो हो कै मूंडै पर आवतां ई मिसरी ज्यूं मूंडे में घुळै हो। पण बा अबै तांई आई क्यूं कोनी? सगळा रै मूंडै पर औ ईज सवाल हो, जिणरो पडूत्तर गळियारा में खिलता टाबरां रा हाका-हेला—''भागभरी आयगी! भागभरी आयगी!'' अर इत्तै में तो बा नेम साम्हीं ई आयगी।

ठिकाणो :
**15, दिव्यांशालय
राजपुरा रोड, केकड़ी
(अजमेर) राजस्थान**
मो. 9214960689

पण औ कांई! म्हारा तो पगां तळां री जमीं ई सिरकगी। काठी धूजगी म्हैं। अेकदम मैली-सी काळा पाड़ वाळी साड़ी पैरियोड़ी, बिना बोरला रो माथो अर सूनी मांग, रीता हाथां उज्योड़ी-सी भागभरी साम्हीं ऊभी ही।

हे रामजी! कठै गई परी म्हारी ऊजळी चांदणी-सी भागभरी। म्हैं तड़फती थकी पूछ्यो, ''यो कदी अर कियां हुयो भागभरी?''

अेकदम फीकी फट मुळक सागै बा बुझ्योड़ै सुर में बोली, ''सुगनां री बेळा मांय कांई भी मत पूछो बाईसा, आओ बाइयां! चूड़्यां पैरो।'' पण म्हारै अलावा कोई भी उणसूं कांई कोनी लियो। थां सगळां रो सुहाग भाग अमर रैवै री आसीस सागै बा भरियो घुड़लियो अर रीतो मन लियां गई परी बठै सूं।

उणरै जावतां ई सुधा जीजी तो म्हां पर बरस ई पड़ी, ''थारो भेजो तो खराब कोनी होयग्यो जया? झट सूं पैरली चूड़्यां उणसूं? अरे बा कुसुगनी है।''

''बस जीजी, थे अबै आगै कांई मती बोलज्यो। भणिया-गुणिया होय'र भी अैड़ी ओछी सोच है आप सगळां री। ठाकुर जी सूं तो डरपो। छोडो था लोगां सूं बहस करणो तो नेम बेकार है।'' उणरी बात नै म्हैं रीस में काटती दुखी मन सूं बठै सूं आयगी।

करवा चौथ री सांझै म्हैं इणरै सागै बाजार में फळ-फूल, मिठाइयां अर सामान खरीदबा सारू पुराणी बड़ी बजरिया गई तो अेक ठौड़ घणकारी लुगाइयां रो झूमको देख'र उतावळी-सी भीड़ नै अेकै कानी करती अगाड़ी बधी तो जाणै अेक सुख भरिया बायरिया री वैर हियै में बापरगी। जमीं पर बिछ्योड़ो अेक चादरा पर करवा अर सिणगार रा सामान सज्योड़ा पड़्या हा। लाल फाल री पीळी साड़ी पैर्योड़ी, लिलाड़ पर चवन्नी रै आकार री लाल टीकी लगायोड़ी, पान चबाती थकी मुळक-मुळक'र अेक बाई नै चूड़्यां पैरावै ही भागभरी।

मॉडर्न

च्यारूंमेर फगत आ ईज बात ही कै अभय जी रा घरां घणी भणी-लिखी बीनणी आय री है, देखज्यो नौ-नौ ताळ नचासी। ...अर फेर बा टैम भी आयगी जणां नूंवी बींदणी आपरा बींद सागै अभयजी री डेली पर ऊभी ही सामां लेवण सारू।

अभयजी री घरवाळी उणनै लाड लडावती बोली, ''लाडली! इण कळसिया नै ठोकर सूं पटकती थकी आपरा पगलियां नै इण घुळ्योड़ी कूंकूं में भिगो'र जमीं पर उघाड़ती थकी मांयनै आयजा। जणां ईज अठै री माटी थनैं अपणासी।'' पण बीनणी आपरी गाबड़ सूं साव नटगी अर माथो हेठै कर लियो।

''तान्या! मम्मी कैवै जियां करो।'' बींद उणरो हाथ दबावतो थको मीठा-मुंदरा सुर में बोल्यो। पण बा तो नेम अगाड़ी ई कोनी बधी। अबै तो जाणै बायरै में बध-बध'र बातां उछळबा लागी।

''म्हैं तो पैलां ई कैयो हो कै छोरी घणी भणी-लिखी अर मॉडर्न है। आ तो जो न करै बो थोड़ो है।''

''अबार ई इसी है तो पाछै तो राम ई रुखाळो है।''

''बींदणी! म्हैं थांनै जो कियो, बो करो।'' अबै सासूजी नामेक तीखा अर ऊंचा सुर में कैयो, पण बा तो जाणै अंगद रा पग जियां ठाम रो ई राछ होगी।

अबै तो बींद भी थोड़ो रिसाळू हुंवतो बोल्यो, ''तान्या!''

जणां बा आपरी मून तोड़ती मिठास सूं बोली, ''मम्मीजी! इण कळसिया माथै गणेशजी मंड्योड़ा है, जका आपणा सैसूं पैलां पूजीजण वाळा देवता है अर इणरै मांय भर्‌योड़ा धान में अन्नदेवता बिराजै है। पाछै म्हैं इणनै ठोकर कियां मार सकूं हूं अर जे आ कूंकूं पाणी रै मांय घुळ्योड़ी है, बा म्हारी मांग मांय भी भर्‌योड़ी है। पाछै म्हैं इणमें पग कियां घालूं, मम्मीजी आप ई बताओ सा?''

नामेक ताळ तांई बठै मून पसरगी कै छोरी नूंवै जमानै री मॉडर्न तो है, पण इणरी सोच समझ कित्ती ऊंडी अर गैरी है!

हीरा री कणी

''म्हैं तो घणी ई राजी हूं वीनू, थारी पसंद तो अैड़ी फूठरी है जाणै चांदा रा देस सूं ई उतर'र कोई परी आयगी व्है आपणै घरां अर नांव भी तो कितरो मोवणो है—शैफाली। इण रो मतलब तो हारसिंगार रा फूल होवै न।'' मां उण माथै निछरावळ हुंवती थकी कैवै ही, तो लाज सूं लजावती-मुळकती शैफाली झट सूं उणरै पगां लागगी।

''लाडली, थूं आ मती समझजै कै इणां नै कीं लोभ-लालच है... यूं ई पूछ रैयी हूं कै थारी तनखा कितरी है।'' शैफाली ने लाड सूं कनै बिठावती पूछ्यो बा।

''जी, पैंतीस हजार।'' अेकदम धीमा-मुंदरा भाव सूं बोली ही बा।

''पैंतीस हजार?'' अचाणचक बा चमकगी, ''पण वीनू, थूं तो कैवै हो कै पच्चीस हजार ई है। झूठ क्यूं बोल्यो रे थूं?''

''हो सकै, म्हैं गळती सू कैय दियो होऊंला या आप गलती सूं सुण लियो हुवोला।'' होचपोच हुंवतो वीनू कैवै हो तो बिचाळै ई झट सूं शैफाली बोली, ''हां सा, साची बात तो आ है कै ब्यांव सारू फगत म्हैं अेक सरत राखी ही कै म्हैं आपरी मां नै हर

महीनै दस हजार रुपिया देस्यूं, स्यात इणी वास्तै म्हारी सैलेरी कम होसी, विनय जी। पण म्हैं झूठ री नींव माथै आपरा घर री नींव कोनी बणा सकूं, मम्मीजी इणी वास्तै...''

''क्यूं देवैला थूं दस हजार रुपिया थारी मां नै?'' वीनू रा पापा उणरी बात पर कतरणी चलावता थका बोल्या, ''कांई थूं जाणै कोनी कै ब्यांव रै पछै छोरी री कमाई पर उणरै पीहर वाळां रो नीं, सासरै वाळां रो हक होवै... थूं... ?''

''हां सा, जाणूं हूं, पण म्हैं जद चार बरस री ही, उणी टैम म्हारा पापाजी रामजी रै घरां परा गिरा अर म्हारी मां म्हनै किण भांत पाळ-पोस'र, पढा लिखा'र योग्य बणाई, आ कोरी म्हैं ईज जाणूं हूं। अबै म्हारी टैम है। म्हैं चाऊं कै अबै बा काम नीं, फगत आराम ई करै। अेकली टाबर हूं म्हैं उणरी अर बा अबै म्हारी जिम्मेवारी अर फरज है।'' अेकदम ठीमर अर हर आखर नै नापती-तोलती बोली ही बा।

''अर जे म्हांनै थारी आ सरत मंजूर नीं हुवै तो?'' सीधैसट सुर मांय पूछ लियो पापाजी।

''तो पछै म्हैं औ ब्यांव कोनी कर सकूं।'' अेकदम अंगद रा पग जियां अडोल हो शैफाली रो सुर।

नामेक ताळ तांई मून पसरगी। जे सींवणी भी पड़ जावै तो उणरो भी धमको सुणीजै बठै। नेम सून्याड़ बापरगी, जिणनै तोड़ती उणरी मम्मी बोली, ''वीनू रा पापा, म्हैं चावै ही नीं कै बीनणी रै रूप माय म्हनै अैड़ी बेटी मिलै, जिण रा पगलिया घर री डेळ माथै पड़तां ई रोशनी सूं घर चमक जावै।''

''हां-हां, जाणूं हूं। हीरा री कणी चावै ही। हीरा री कणी चावै रो गीत तो थूं बरसां सूं गावै ही।

''हां, अर बा हीरा री कणी म्हनै मिलगी जी।'' शैफाली नै आपरी बाथां मांय भरती घणै हरख सूं मां बोली अर पापाजी भी झट सूं अगाड़ी बध'र उणरै माथै आसीस रो हाथ मेल दियो।

रोसनी रो घाट

आज पूरो महीनो-भर होयग्यो मम्मीजी नै गियां, पण मनड़ै री पीड़ जाणै कम ई कोनी होवै ही। मम्मी तो अनुपम रा हा, पण म्हारै सारू तो जामण सूं भी बत्ता ईज हा। उणां रै जिसी मिठबोली अर नेम ठीमरपणै री साव सीधी सासू तो म्हैं कदैई देखी ई कोनी अर न ई किणी री सुणी।

म्हैं आ भी कोनी कैय सकूं कै ठाकुरजी उणां नै घड़'र बो संचो ई तोड़'र फेंक दियो, क्यूंकै उणां री लाडली म्हारा नणदल बाईसा भी सेम-टू-सेम उणां री टू-कॉपी हा अर म्हारी दोनूं बाइयां भी उणां री भांत ई बणती जावै ही।

 ISSN : 2320-0995

म्हैं पापाजी नै तो कदैई कोनी देख्या, पण मम्मीजी अर रिस्तेदारा सूं सुण्यो हो कै अनुपम तो सेम उणरी ई मिरर कॉपी हा। साची कैऊं तो म्हैं घणी भागवती हूं, जो इण घर में आई। मम्मीजी म्हनै घणा लाड लडाया।

अनुपम अर अवनि जीजी जणां साव छोटियाक हा, उणां रा पापाजी रामजी रै घरै गिया परा। अेक दिन म्हैं उणां सूं पूछ लियो, ''मम्मीजी,जद पापाजी कोनी हा अर थे साव अेकला हा, पाछै थांरा टाबरा री इतरी चोखी परवरिस कींकर करी?''

''बेटा, म्हैं हमेस उणां री ओळयूं नै आपरी ताकत बणाई ही, कमजोरी नीं।'' बै मुळकता थका बोल्या।

मम्मीजी लारला नामेक दिनां सूं अणमणा रैवण लागग्या। जणां म्हैं उणां नै घणी जोरी करती थकी इणरो कारण पूछ्यो तो बै नेम मंदरा सुर सूं बोल्या, ''साची कैऊं तो विभा बेटा, अबै म्हैं भी थारै पापाजी रै कनै जावणी चाऊ।''

...अर पछै बै अेक दिन चोखी तरिया सूत्या अर पाछा कदैई कोनी उठिया।

घणा दुखी मन सूं उणां रो सगळो काज-किरियावर समाज री रीत-रिवाज मुजब निपटायां पछै उणां रो सामान जमावै ही कै अचाणचक उणां री अेक डायरी हाथां लागी। म्हैं औ तो जाणै ही कै बै कदै-कदैई डायरी लिखता हा, पण म्हारै मांय इतरी तो ईमानदारी ही कै कदैई उणां री डायरी नै कोनी पढी, पण आज खुद नै रोक कोनी सकी, क्यूंकै बा अबै फगत अेक डायरी ही कोनी ही, उण पूरी जूण री कहाणी ही, जकी मम्मीजी-पापाजी रै सागै अर पाछै जीवी ही।

आंख्यां में आंसूड़ा भर्‌योड़ी म्हैं जद उण डायरी रा लारला पाना नै भणियो, जिणनै बै आपरी मौत सूं ठीक अेक दिन पैली ई लिख्यो हो... सुणो सा—

म्हैं औ तय कोनी कर सक रैयी हूं कै म्हैं अठै रैवूं कै थांरै कनै आ जाऊं? अठै तो आपणा अनु, विभा, अवनि अर टाबर है, पण बठै तो थे अेकला ईज हो, साव अेकला। अबै म्हनै ई थांरै कनै आय जावणो चाईजै। अठै तो आपणी विभा घर संभाळ लेसी, बा घणी हुंसियार अर स्याणी-समझणी है। डायरी रै इण छेहलै पानै रै अगाड़ी में दोय ओळ्यां मांड्योड़ी ही :

दूर धरा सूं गगन पै, रोसनी रो अेक घाट।
बरसां सूं बैठ्या बठै, थे जोय रह्या म्हारी बाट।।

म्हैं म्हारा आंसूड़ा नै बेवण दिया अर उठ'र मां री तस्वीर रै साम्हीं जाय'र ऊभी होयगी अर हाथ जोड़'र बोली, ''मां! म्हारै सारू तो रोशनी रो घाट थे ईज हो अर हमेस ई रैस्यो। कठै ई कोनी गिया आप। आप अठै ईज तो हो म्हारै कनै। म्हां सगळा कनै। म्हैं अगाड़ी बध'र झट सूं तस्वीर पर चढ्योड़ी माळा उतार दी।

◆◆

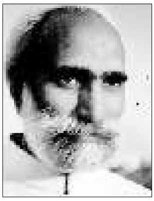

मनोहर सिंह राठौड़

मुथरा राम

अेकर आप सोच सको, औ कांई अपरोघो नांव हुयो—मुथरा राम ? पैलपोत सुणै जकै नै अपरोघो लाग सकै। जका रोजीना औ नांव सुणै बांनै अपरोघो नीं लागै। आ साची बात कै जिण घर में टाबरां री ओछत हुवै बठै अैड़ा बांका-डोढा, बेमतलब रा नांव राखीजै। हरेक नांव रो कीं अरथ नीसरै। कीं नांव अैड़ा हुवै जकां रो कीं मुंह-माथो नीं हुवै। बस, टोटका रै रूप में राखीज जावै। होळै-होळै घर-गुवाड़ी अर गांव में बो नांव चावो बण जावै। हरेक री जबान माथै चढ जावै। बियां ई मुथरा रो नांव म्हारा आठ-दस गांवां में जाणीजतो। बां दिनां कमती साधन अर कमती ई पईसा हा। अठी-उठी जावण में आदमी पांच बार सोचतो। जेब रै हाथ लगावतो। गांव में ई रैवतो। पण अपणेस अणूतो हो।

मुथरा नै साथी-संगळिया अर गांव रा कीं लोग घणी मसकरी री बगत मथुरा-कासी आओ! इयां कैय बतळावता। बो हंसोड़ सभाव रो हो। हांसता थकां कैवतो, "अै आया सा, लेवो तीरथां रा दरसण कर लेवो।" हंसोड़ तो पैलै नंबर ई हो। हांसती बगत मूंडो खिल जाया करतो। बुगला री पांख्यां जैड़ा धोळाधप्प दांत, गुलाबी मसूड़ां ऊपर चिमकता कोलगेट रा सांतरा विज्ञापन रा मोट्यार री याद दिराय देंवता। चौड़ो ओपतो मूंडो, सावळ संवार्‌योड़ी मूंछ्यां, कानां में सोनै री मुरक्यां। माथै धोळो साफो। कान, नाक, होठ मोटा-मोटा अर मोटी चामड़ी रै प्याला जिसी सांतरी हांसती आंख्यां। उभर्‌योड़ी चौड़ी छाती, पैलवान रै जियां कसीज्योड़ा बूकिया। चौड़ी कळाई रै बांध्योड़ो मोटो काळो डोरो। ओपती जाडी

ठिकाणो :
421-ए, हनुवंत-ए मार्ग-3, बीजेएस कॉलोनी, जोधपुर 342006
मो. 9829202755

ISSN : 2320-0995

हथेळी। गोळगट पग खंभां री जियां अर धोती सूं कस्योड़ी गेहुंवां री बोरी जैड़ी कमर। कुल मिलाय'र पैलवानी पळका रो मुगदर जैड़ो मोट्यार। तीस री ऊमर में गबरू जवान। औ म्हारै गांव री स्यान हो। अेकर देखतो जको देख्यां ई जावतो। बां दिनां रै हिसाब सूं टाबरपणै में ई ब्यांव कर दियो पण बारगांव सूं कोई सगो-गिनायत आवतो तो बो डोढी निजरां सूं निरखतो थको अेकर इण बाबत पूछतो जरूर।

मुथरो भारी भाटा रो मालो दिया करतो, जाणै पंसेरी उठाई हुवै। कबड्डी-कुश्ती में इणनै जीतबा री मनस्या कोई नीं कर सकै हो। अेकर नागौर रा माही मेळा में भार उठावण अर माला देवण में पैलै नम्बर आयो। अेस.पी. साब इनाम देंवती बेळा इणनै कैयो, ''जकै दिन पुलिस में भरती व्हैणो हुवै, सीधो म्हारै कनै आ जाईजै। थारी परीक्षा, टेस्ट हुयग्या समझ लै।'' पण मुथरो कदैई गांव छोड'र जावण री नीं सोची। अेकाअेक बेटा नै मां गरीबी में झूलती घणो दौरो पाळ्यो हो। बाप इणनै तीन बरसां रै बाळक नै छोड'र सुरग सिधायग्या हा। औ आखी ऊमर गांव में ई खिलका कर्‌या।

मुथरो मां रो पक्को भगत। सदीव मां रै आसंग-पासंग ई रैवणो चायो। मैणत-मजूरी में मुथरा नै सगळा कोड कर'र लेय जाया करता। हांसतो-बोलतो। न खुद ठालो बैठतो नीं दूजा मजूरां नै बैठबा देंवतो। इणरै मीठै-सांतरै सभाव सूं मंतरीज्योड़ा घणकरा मोट्यार मुथरा रै साथै ई मजूरी माथै जावणो तेवड़ राख्यो हो। बीं रै साथै आसंग-पासंग रैयो बीं नै बोलबा री दरकार नीं ही। बस, सुण्यां जावो, मुळक्यां जावो। मौज मनायां जावो।

कमठा में काम करती बेळा मुथरा राम आपरै घर सूं ल्यायोड़ी मोटी तगारी भर-भर'र उठाया करतो। आं दूजी तगार्‌यां नै तासळी-बाटका समझतो। इयां समझो कै बेमाता इणनै घड़ीखंड नेठाव सूं घड़्यो हो। म्हारै गांव में चार-पांच खावता-पीवता चौधर्‌यां री गुवाड़्यां ई ही, पण नांव तो मुथरा रो ई बोलीजतो। बीं बगत काण-कायदा घणा हा। छोटा-बडां री बोल-बतळावण, बैठ-ऊठ में पूरो-पूरो ध्यान राखीजतो। पण इण पांगरता मोट्यार रो नांव सगळां री जबान माथै हो। घणी पूछ ही। औ ई बडां रै आव-आदर रो पूरो ध्यान राखतो।

गांव सूं बारै गांवतरा करणै रो नंबर कमती ई आवतो। जकै में कठैई जावण में टाबरां रा नंबर मुस्कलां ई पड़ता। मुथरो आपरै घर रो अेकाअेक मोट्यार। इणनै घणा गांवतरा रा मौका मिलता। सगाई, ब्यांव, भात कै कोई गमी में मोकाण बैठबा जावणै में मुथरो ई जावतो। बीं नै कीं अठी-उठी आव-जाव रो सोख ई अणूतो हो। मिनख्यावड़ो मिनख हो। दोय-चार जणां रै बिचै बोल-बतळाय राजी हुवणै रो सभाव हो। सूमड़ो-सो बैठ्यो बीं नै चोखो ई नीं लागतो। जे कोई आपसरी रा झोड़-झपड़ में बात उळझगी हुवै अर लोग आंवस्योड़ा बोलबाला बैठ्या हुवै, मुथरा रै बठै पूग्यां उळझाड़ नदी में बैयग्यो

समझो। कोई हांसी-ठट्ठा री बात पोळाय बात निवेड़ दिया करतो। गांव रा मिनख पाछा नदी रा पाणी जियां बगता, बतळाता, आप-आपरै हीलै लागता।

गांव में कोई साधू-जती, ख्याल-तमाशा दिखाबाळो कै सौदा-सुलफ बेचबाळो आवतो, मुथरो कनै जाय बैठतो। बीं अणपढ नै सगळी जिनसां रा मोल-भाव रो ठाह। खेल-तमाशा री आंट-अटकळां, बाजीगरां री चालबाज्यां, कठपूतळ्यां नचावण वाळां री आंगळ्यां री कारीगरी, खेस-पटिया बेजा पर बणावण वाळां री लकब अर नाटक-रामलीला दिखावण वाळां री कलाकारी, बांरा घणकरा डायलोग मुथरा नै याद हा। बो गांव में रैय'र अेक सांतरो, सोझीवान, स्याणो, समझदार शहरी मिनख री जियां हरेक काम री लांक-लकब जाणतो। नूंवै सूं नूंवा काम नै सीखबा री लगन, हूंस अर सामरथ ही मुथरै मांय। जद ई अेकर जकै काम नै आंख्यां बारै काढ लियो, पछै आपैई सावळ-सी करबा लाग जावतो। बीं रा हाथ तो काम वास्तै ई बण्या हा। हर बगत काम चाईजतो बीं नै। बिना काम बैठ्या मिनखां वास्तै बीं रो कैवणो हो—"कांई मुरदा रै जियां पसर्‌या पड़्या हो। मिनख रो कांई प्यारो, काम प्यारो हुवै।" साच्याणी बो काम रो तो कीड़ो ई हो। खात्यां री खतोड़ में गयां, बै चिलम पीवता, जित्तै मुथरो बसोलो लेय'र पाटिया छोलणा सरू कर देंवतो। नीं जणां हथौड़ी उठाय कीलां रै ठाक-ठक, ठबका ठोकणा सरू। कमठा, लकड़ी रो काम, मांचा बणना, रंग-रोगन, कै खेती-पाती रा काम, गाय-भैंस नै चरावणी, पाणी पावणो, अैड़ा कांई ठाह कित्ती भांत रा काम तो बीं रै हाथ में ओपता। कोई काम बीं सूं छानो नीं हो। जकै काम नै पोळावतो, इयां लखावतो जाणै बरसां सूं करतो हुवै। बीं रा काम री ओप, सफाई, लांक-लकब न्यारी ई ही। जे बोझ-भार उठावणो हुंवतो, बीं में बीं री बराबरी कोई नीं कर सकतो। अैड़ो जबरो कारीगर, मैणती, बिना टोक्यां काम में हर बगत माथो दियोड़ो राखण वाळो, स्याणो, मनमेळू मिनख नै ठालो कोई नीं रैवण देंवतो। कामवाळा नै रुजगार घणा अर रुजगार नै काम करण वाळा घणा। बीं बगत तांणी नरेगा-नरूगा योजनावां चाली कोनी ही। जको ई कोई काम वास्तै मजूर नै लेय जावतो, मजूर ई सांतरो काम करणै री सोचतो कै घरधणी रो ओळमो नीं मिल जावै। दूजो डर औ कै ऊपर रामजी तो देखै है!

मुथरा नै बडा-बडेरा तो चांवता ई हा, टाबरां रो ई वो चहेतो 'हीरो' हो। टाबर ई बीं रा बूकिया, लांबी-चौड़ी देही, कुश्ती-कबड्डी अर सांवठो बोझ-भार उठावण वाळो फिल्मी हीरो ई मानता। इत्तो तगड़ो मोट्यार हो, पण कोई टाबर रै पड़ता पाण भाज'र उठाणो, रोवता टाबर नै हंसाणै रा टोटका ई जाणतो। मरद-लुगाई सगळा बीं सूं बात करबा सारू उडीकता। केई बीं नै गोपियां रो किसन-कन्हैया ई डोढ में कैवता। पण बो ऊजळै चरितर रो हो। बां दिनां गांव री बैन-बेटी, परिवार री बैन-बेटी ई मानीजती। कोई दूजी ठौड़ छेड़छाड़ री अपरोघी-ओछी बात कदै सुणबा में आवती जद आखो गांव थू-थू ई करतो।

जे मुथरा नै गांव री कोई बैन-बेटी, लुगाई अेकला सूं बतळाय लियो तो बो सरमीज जावतो। कैवतो, ''म्हैं पछै घरै आय'र काका सूं मिल लेसूं, थांरै काल मजूरी माथै आय जासूं।'' अैड़ै ऊजळै चरितर रा मिनख नै कुण कोनी चावै। केई कुटीचर, दोखी ई हा। बै मन-मन में ईरखा राखता। म्हारै गांव रा बीं बळकारी भीम रै कांई परवाह ही। हाथी लारै कुत्ता भुसता रैवै, इत्ती-सी गिनार ई करतो। होळी रै दिनां में कै कदैई कबड्डी री बगत कुश्ती रा पाळा मंड जावता। बीं सूं कुश्ती में मोटा-मोटा मोट्यार ई आंटाचित व्हैता। कदैई दोय जणां सूं अेकण साथै कुश्ती कर पछाड़ खुवाय दिया करतो। फिल्मां में दारासिंह रा दांवपेच देख'र केई जणां आपणो दारासिंह ईज कैवता।

जको कीं न्यारो अर करामाती हुवै, बीं री बातां तो बतळाइज्या ई करै। मुथरो जठी कर निसरतो, टाबर-लुगाई-मोट्यार बीं नै मुड़-मुड़'र देखता रैवता। कोई आपरै काम री गरज सूं, कोई इण री ताकत री करामात सूं, कोई लाड में थुथकारो न्हाख'र इणनै निरखता। पछै खासा ताळ इण बाबत ई बातां बतळाईजती। म्हनैं औ नजारो देख'र म्हारा टाबरपणां सूं आगै बधती ऊमर में घणो इचरज व्हैतो रैयो। म्हे इयां हरखीजता कै औ पैलवान छाप हीरो म्हारै गांव रो है। डील में कीं तंत अर सरो मिनख हुयां हौसलो ई बधीक हुया करै। मुथरो गांव में आयोड़ा अेलकार, अफसर, कै कोई नूंवा आयोड़ा मिनख सूं झट बतळाय लिया करतो। जद कै बीं री ऊमर रा दूजा लोग, अैड़ै बगत में लारै-लारै सिरकता, सरमावता।

गांव रा कोई वार-तिंवार, खेल-तमाशा, उच्छब, होळी-दिवाळी में अगाऊ होय छोटा-बडां री मंडळी में त्यार लाधतो। बीं उच्छब रो रंग खिल जावतो। होळी रा दिनां में चंग-डफ लियां आधी रात तांई नाच-नाच गावण रो रसियो, तिंवार अर गांव री रोनक बण जाया करतो। सगळी ठौड़ मुथरै री पूछ अर पंच-पंचायती चालती। हां, बडेरा मिनखां रो पूरो-पूरो आव-आदर ई बरततो जद इयां लखावतो कै इणरै जबान है के कोनी? बां साम्हीं मुळक'र रवानै। मुथरा राम जाबक थाकल घर में जलम लियो पण आपरी अक्कल, ऊरमा सूं सांतरी दाळ-रोटी रो सरजाम कर लियो। सगळां रो लाडको बणग्यो। भागी मिनख हो। इण धरती माथै जीव आपरा सांस गिणती रा लेय'र ई आवै। कुण कद रवानै, औ ठाह नीं पड़ै। अर्जुन-भीम, आल्हा-ऊदल अर आपां रै बगत में जापान रो ब्रुशली संसार रा नामी करामाती ई कोई ओळावै दुनिया छोडग्या। ठाह ई नीं पड़्यो। बियां ई भरी जवानी में गुलाबी आभा रो मुथरो आपरा खेत में अेक रात सूतो ई रैयग्यो। कीं दुख्यो, न पाच्यो। बो चल्यो गयो। बठै धरती माथै कीं लीकट्यां ही। बीं रै जींवता सदा चरचा चाली। बीं ढंग-ढाळै बीं रै सुरग सिधायां भी चरचा चालती रैयी। आखो गांव महीनां तांई इचरज कर्‌यो कै मुथरा रै कांई हुयो?

◆◆

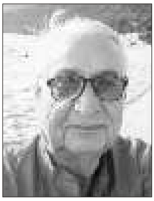

श्याम जांगिड़

म्हारी दादी

म्हारी दादी निरमळ हिड़दै री लुगाई ही। भोळपण इतरो कै नीं कैवण आळी बात सीधै मूंडै कैय देंवती। मिसाल रै तौर थांनै अेक किस्सो बताऊं। म्हारा चाचोजी जिका कवि हा, आपरै अेक एस.पी. बेली नै दादी कनै बाजरै री रोटी, सक्कर, घी अर फळियां रो तीवण जीमाबा तांई ल्याया। दादी बाजरै री रोटी माथै सक्कर-घी घाल थाळी लेय आई। फळियां री सब्जी साथै ही। एस.पी. साब गंऊ-चावळ खावणियां मिनख हा। सो बांनै ठा कोनी हो कै बाजरै री रोटी साथै सक्कर-घी कियां खायो जावै। चाचोजी आपरी थाळी न्यारी लियां बैठ्या हा। दादी एस.पी. साब नै भाळै। बै रोटी रो टुकड़ो लेय सक्कर रै चोपो-सो देवै। दादी सूं रैयो कोनी गयो। बोली, ''मरज्याणा, थनैं रोटी जीमणै रो ई ठाह कोनी!'' अर वा रोटी अर सक्कर चूर'र बोली, ''अबै खा!''

एस.पी. नै 'मरज्याणा' कैवण सूं चाचोजी धोळा होयग्या। मां औ कांई कैय दियो! पण एस.पी. साब बांरो गोडो दाब्यो। मतलब थे फिकर मती करो, माईत इयां ई बोल देवै। अैड़ै सुभाव री ही म्हारी दादी।

म्हारा बूढा दादा-दादी कुवै माथै बण्योड़ी कोठी में रैवता। कुवो चूरू स्हैर सूं अेक कोस दूर हो। दादी परिवार तांई गायां रो धीणो सदीव राखती। म्हे टाबर-टीकर छुट्टियां में दादी कनै ई रैवता। दादी रो नांव पूरणा हो। उणरै सुभाव नै भाळतां वा साख्यात अन्नपूरणा ही। म्हारो कुवै आळो खेत ढाढर-बूंटियो आद गांवां रै रस्तै माथै है। ईंकर कोई भी गेलारथी दादी कनै आय'र रोटी

ठिकाणो :
पाणिनि कुटीर
डालमिया स्कूल रै कनै
न्यू कालोनी, चिड़ावा
जिला-झुंझुनूं (राज.)
333026
मो. 929588494

 ISSN : 2320-0995

मांगबा आय जावतो। जे ठंडी-बासी नीं हुंवती तो दादी उणनै ताती रोटी सेक देंवती। अेकर म्हारै कुवै सूं उतराद कानी आळै खेतां में अेक जणो जांटी छांगबा आयो। अै फागण रो दिन हा। आं दिनां खेतां में भोत कमती लोग आवै। जांटी छांगणियो अेक स्कूल रो मास्टर हो जिको खुद ई जांटी छांगण आयो हो। दुपारी खातर बो चटणी-रोटी अेक न्यातणै में बांध'र ल्यायो हो। बो भातै रो न्यातणो अेक जांटी तळै मेल'र जांटी छांगणी सरू कर दीनी। दोपारां जद भूख लागी तो बो उण जांटी हेटै गियो, जठै बो न्यातणो मेल्यो हो। न्यातणो बठै हुवै तो लाधै! असल में बो रोटियां रो न्यातणो कागडोड लेयग्यो हो। इन्नै-बिन्नै ख्यांत्यो तो न्यातणै रो चीरड़ो पड़्यो। बो समझग्यो कै रोटी तो कागडोड खायग्यो। बो माथो पकड़'र बैठग्यो। भूख मरतै रा आंतड़ा कुरळावै।

संजोग सूं पासै आळै खेत रो पाड़ोसी आयग्यो। बो बोल्यो, ''मास्टर, आज इयां कियां बैठ्यो है?'' तद मास्टर उणनै रोटी कागडोड रै खावण री बात बताई। आ सुण'र बो पाड़ोसी बोल्यो, ''थूं इयां कर, दिखणाद कानी हरखाराम रो कुवो है, बठै उणरी मां मिलैली। थूं उण दादी नै कैय देयी, बा थनैं रोटी देय देवैली।''

बो संकावतो बोल्यो, ''यार, इयां कियां चल्यो जाऊं? सरम आवै।''

पाड़ोसी बोल्यो, ''रे, रोटी में क्यांरी सरम? थूं जा तो सरी। दादी थनैं रोटी जीमा देवैली।''

छेवट मजबूरी में मास्टर दादी कनै पूग्यो। बरामदै में जाय'र बैठग्यो। दादी बैठक सूं बारै निसरी। मास्टर रामरमी करी। दादी उणनै पाणी पायो। पण पाणी उणनै थोड़ो-सो भायो। बो बोल्यो, ''बस, दादी।''

दादी उणरै मूंडै कानी भाळ्यो। बोली, ''मरतो मरै दीसै, क्यूं?''

तद मास्टर आपरी विगत बताई... म्हारी रोटी कागडोड लेयग्यो।

दादी बोली, ''बैठ।''

बो बैठग्यो। दादी कनै ठंडी रोटी तो पुरसल ही कोनी। ईंकर बा हाथूंहाथ ताती रोटी सेकी। ता-पछै मास्टर नै ताती रोटी अर तीवण ल्याय'र पुरस दियो। दादी उणनै दोयबर न्यौरा कर'र धपाऊ रो जिमा दियो। मास्टर गळगळो होयग्यो।

अेकर बो मास्टर म्हारै चाचोजी नै आ घटणा बताई। म्हारा चाचोजी भी बठै ई मास्टर हा। बो बोल्यो, ''माधव जी, चूरू रै अगूणै पासै अेक कुवो है, जठै अेक डैणती रैवै। राम हाजर-नाजर, म्हैं अैड़ी लुगाई जिनगी में कोनी देखी। बा म्हनैं भूखै नै ताती रोटी सेक'र जिमायो। बा देवी सूं बध'र है।''

उणरी बात सुण'र म्हारा चाचोजी हांस्या। बोल्या, ''अरे भाया, बा म्हारी मां है।''

बो हाकबाक रैयग्यो, ''...माधव जी, बा थांरी मां है! ...धिन्न है उण माता नै।''

इयां म्हारीदादी अन्नपूरणा ही।

दादी गेलारथी नै बणाय'र चाय पाय देंवती। रोटी-पाणी रो पूछती। 60 बरस सूं ऊपर उमर हुंवता थकां दादी में फुरती ही। स्यात इण री वजै उणरी गाय-सांसरां री खेचळ अर सादो भोजन हो। म्हारी दादी कदैई मैला गाभा कोनी पैहर्‌या, नीं कदैई बासी रोटी खाई।

मूळ रूप में म्हैं कैवूं तो दादी रो अेक ईज काम हो—रोटी जिमावणो। म्हे टाबर जद बठै जावता तो बा आ ईज पूछती, ''रोटी जीमी के नईं?'' जद बदमासी करतो तो कैवती, ''मानो कोनी के सापखादिड़ो!'' लाड करती तद कैवती, ''आव गैला! थनैं दही-रोटी जिमाऊं।'' म्हारै सूं छोटो भाई सरोज तो दादी कनै ईज रैवतो। बो ममताळू दादी रा हांचळ चूंघतो। इण बडेरी उमर में भी ममता सूं उणरै दूध सांचरतो।

दादोजी अर दादी में पंदरै बरसां रो बेछो हो। म्हारी दादी लाडी आयोड़ी ही। दादोजी जद घणा थाकग्या तो दादी बांरी घणी सेवा करी। बांनै पधेड़ियां लेय'र बाड़ै में लेय जाय'र झाड़ां करवाय'र लावती। मिंट-मिंट में बांरी हाजरी बजावती। दादोजी रो सुभाव आकरो हो। जे थोड़ी-घणी देर हुय जावती तो बै रोळा मचावण ढूकता।

दादोजी 82 बरस री उमर में रामसरण हुयग्या। ईंकर मजबूरी में दादी नै चूरू आळी हेली में सोग माथै बैठणो पड़्यो। उणनै दादोजी रै जावणै रो तो दुख कमती हो अर कुवै माथै बंधी गायां री फिकर बत्ती ही। बा पूछबो करती, ''अे बीनणी! गायां कनै कुण है? कुत्तर नीं सांपड़ जावै, देखजै!''

मां कैवती, ''थे बैठ्यो रैवो, सो-कीं होय जावैला।''

सोग रै दिनां में अेकर मां बोली, ''मां'जी लुगायां जद बैठण आवै तद थे भी रोया करो।''

दादी बोली, ''म्हासूं कोनी रोयो जावै। अेकर रोय लीनी। जावण आळो चल्यो गयो। राम रै आगै कीं रो जोर? अर अै आवण आळी रांडां तो फेकट करै, आंरो कुण मरग्यो?'' इयां म्हारी दादी, पवीत हिड़दै री भोळी-ढाळी लुगाई ही।

दादोजी गयां पछै दादी कुवै माथै अेकली रैवती। म्हे अेक-दोय टाबर रात रा उण कनै जाय'र सोवता। कदैई जद कोई नीं पूगतो तो भी दादी नै किणी रो भौ कोनी लागतो। उणरी दकाल इतरी भारी ही कै अेक कि.मी. दूर डाबला ढाणी तांई सुणीजती। बियां उण दिनां किणी तरै रो डर-भौ हो ई कोनी। दादी तो किंवाड़ जड़'र सूय जावती। सुंवारै चटकै ई उठ'र गाय-सांसरा रै हीड़ै में लाग जावती।

 ISSN : 2320-0995

दादी रो पीरो रामसीसर हो। चूरू सूं मोलीसर टेसण तांई रेल में जावणो पड़तो अर आगै तीन कोस पैदल रो पैंडो। म्हैं दादी रै साथै जावतो। गाडी रात री बगत दोय बज्यां मोलीसर पूगती। दादी गाडी सूं उतरतां पाण रवानै होय जावती। डर–भौ दादी नै लागतो कोनी। कदैई साम्हीं सूं आवतो कोई ऊंटवान मिलतो तो बो चिमक'र हेलो करतो, ''अरे कुण है?''

दादी जोर सूं बोलती, ''रामसीसर रै बचनै री बैन हूं... थूं कुणसै गांव रो है?''

फेरूं बो ऊंटवान आपरो गांव बतावतो। म्हैं अणभव कर्‌यो कै लुगाई चावै कितरी भी उमर लेय लेवै, पींरै रो मोद कदैई कम नीं हुवै। दादी हर साल पींरै जावती अर दोय–चार दिन रैय'र आवती।

दादी इकाणवैं बरस री होयगी तद सै घरआळा तय कर्‌यो कै दादी नै अबै खेत में नीं रैवणो चाईजै। बियां बांरो डील निरोगो हो। फेरूं भी बै घरै रैवै लागा। म्हारी मनस्या ही कै म्हैं दादी नै म्हारै कनै राखूं, सो म्हैं बांनै चिड़ावा लेय आयो। आ 1984 री बात है। उण बगत म्हैं अेक बिरामणां रै मकान में भाड़ै रैवतो। दादी कांई आई, बिरामण दादी अर उणरै कुणबै नै अेक रमतियो हाथ लागग्यो। सै लुगायां अर मोट्यार दादी री भोळी अर पटाफोड़ बातां रा मजा लेंवता। अठै दादी सै बिरामण्यां री भायली जैड़ी होयगी। कथा–भागोत अर मिंदर जावती।

दादी नै निकमो बैठणो कोनी सुहावतो। म्हांनै कैवती, ''भाया, अठै कीं काम न धाम, बस बैठ्या–बैठ्या खाओ।'' दादी सदीव दोय टंक रोटी जीमती। अठै आयां पछै म्हारी जोड़ायत उणनै सुबै सिरावण करवाती, फेरूं दोपारो अर ब्याळू। इयां तीन बगत अरोगणै सूं दादी रो बजन बधग्यो। ऊपर रो डील भारी होयग्यो, जीं सूं गोडा में कीं दरद रैवै लाग्यो। पण दादी गिनार कोनी कर्‌यो।

बठै अेक बूढा पंडत बिरमानंदजी हा। बै रोज दिन उण गुवाड़ी में आवता। आय'र दादी नै कीं न कीं पूछता। अेक दिन बोल्या, ''दादी, श्यामजी थांरी सेवा करै का नईं। जे नीं करै तो म्हनैं बतायो, म्हैं उणनै खींच देऊंला।''

दादी बोली, ''ना भाया, श्यामो अर उणरी बऊ घणी ई सेवा करै। घणा चोखा है।''

पंडत हांस'र बोल्यो, ''तद ठीक है। म्हारो तो पूछण रो फरज है। थे तो म्हारा माईत हो।''

इयां इण गुवाड़ी में दादी री भोळी–भोळी बातां रा आणंद लेंवता। निरमळ हिड़दै री दादी बांनै घर री सै बातां बता देंवती। कुणसी बीनणी चोखी है, कुणसी चोखी कोनी। श्यामै री मां चोखी है अर भोळियै री मां बदकार है।

दादी री आंख्यां रो ओपरेशन करावणो हो। म्हारो बडो बेटो लोकेश दादी नै पिलाणी अस्पताळ ले जाय'र जांच करवाई। म्हैं चूरू गयो हो। आयो तद दादी पूछ्यो, ''तेरी मां के कैयो है?''

म्हैं कैयो, ''मां तो कैयो है कै ओपरेशन चूरू ई करावणो है।''

तद दादी बोली, ''भाया, तेरी मां कैयो है, बो ई करस्यूं।''

दादी चूरू खातर बिदा हुई तो दादी समची बूढी भायल्यां सूं मिल'र रोई, ''... बाई, नीं जाणै कीं जलम री थे बैनां ही म्हारी। थे म्हारो घणो मान राख्यो। थांरी ओळ्यूं सदीव म्हनैं रैयसी।''

दादी 92 बरस री उमर में घोड़लिया हांक्या। बोलती-बोलती गई। जावणै सूं पैली सै नै पूछ्यो, ''भाया, रोटी जीमली कांई?''

सै जणा हां भरी तद दादी सरीर छोड'र हर रै हिंडोळै चढगी। जिको भी सुण्यो, बो आ ईज कैयी, ''भई, दादी घणो ई धरम कर्‌यो, बा क्यूं दुख पावै ही, चटकै ई चली गई।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

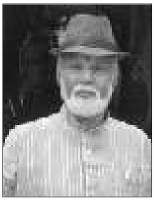

छत्र छाजेड़ 'फक्कड़'

चौपाळ

मिनख री देह में जियां काळजो होवै बियां ई गांव में चौपाळ होवै। टाबर सूं लेय'र बूढा-बडेरां तांई आप आपरी चौपाळ जमावै। अै चौपाळां इयांकली जग्यां होवै, जियां कै पींपळ-गट्टे पर, कै गांव रै बिचूक नुक्कड़ पर। अठै सगळां खातर दरूजा खुला रैवै। अठै जात-धरम री कोई पाबंदी कोनी, न अठै अमीर-गरीब रो भेद, सगळा इकसार ई गिणीजै। जुगां-जुगां सूं चालती अै चौपाळां ई निरपेखता रै चलतै ईज जींवती है। म्हनैं लागै, अबै रा संविधान बणावणियां रो मन आं चौपाळां सूं ईज सीख लीन्ही ही। अठै बैठै तो सगळा बरोबरिया ईज है, पण दस-पांच बरस रै आंतरै वाळा भी आय सकै, बस चौपाळां री मरजाद नीं तोड़ सकै। संसद री दांई अठै चौफाळिया नीं हो सकै। संसद री दांई आं चौपाळां रा बगत भी पुख्ता रैवै। अठै सै अेक निजर सूं ई बरतीजै। बगत कदैई इकसार रह्यो कांई, अबै बदळतै बगत में स्हैरां री लूंठी कॉलोनियां रै पार्कां में चौपाळां जमै।

जियां सांस आवै जित्तै ईज शिव है, नीं जणां शव गिणीजै, बियां ई मिनख बापरै जित्तै ईज चौपाळां जमै अर बित्तै ई गांव-स्हैरां री सोभा है। आं चौपाळां ऊपर ग्यान री गंगोतरी दड़ाछंट बैवै। इस्यो कोई विसै नीं जिकै री अठै चरचा नी हुंवती होवै। घर-विध सूं लेय'र जात-धरम सूं हुंवती थकी राजनीति तांई पूग जावै अर अठै अेक सूं अेक जाण्या-अणजाण्या रहस्यां पर सूं पड़दा उठै। अठै आवणियां री जाणकारी आज री सीबीआई/ईडी नै फेल करै। चौपाळां री मजेदारी आ कै अठै सीबीआई अर ईडी

ठिकाणो :
बी-76, आनंद विहार
दिल्ली-92
मो. 9350051179

री दांई हाथ नीं बंध्या होवै, अठै रा जासूस तो अेकदम खुल्ला खेलै—खेल फरूखाबादी। छोटो-बडो किसो ई घर रैवै, सगळां रै अंदर रै भीतर री मांयली खबरां अठै पुरसीजै। छोटी-छोटी बातां जियां कै किणरै घरां आज कुणसी तरकारी बणी है, कै छाछीती छमकीजी है, सगळां रा परचा अठै बंटै। गळी-गुवाड़ में कुण आयो तो कुण ब्हीर होय'र परदेसां लंघग्यो, किणरै अठै पांवणा बापरया है। आ भी ध्यान रैवै कै कोई ओपरो गळी रा गेड़ा तो कोनी काटै है नीं। भांत-भांतीली खबरां अठै चौपाळ री बही में दरज रैवै।

बूढा-बडेरा, सेवानिवृत-सा भला माणसां री सगळां सूं चहेती ठौड़ होवै चौपाळां, क्यूंकै घरां रै मांय तो आंरी कोई सुणै कोनी, और तो और, घरनार भी आं परां तूठ'र भाव देवै कोनी... आखै दिन सांवठा थोक सुणावती ई रैवै। चौपाळ पर आवै तो लागै कै पैरोल पर छूट'र आया होवै। अठै ना तो किणी रो डर, ना भय, खुल्लम-खुल्ला आप-आपरा शौक पुरावता-सा मन री काढै।

सौक पुरावता कोई सिगरेट रा सूट्टा सारै तो कोई आपरै ब्रांड री बीड़ी सुलगावै। शिवलो कलकत्ता बीड़ी आंगळ्यां में भींच, आंख मींच'र जोर की खैंचै, जाणै गाडी री चेन खींची होवै। भागीड़ो पांच सौ पांच मारका बीड़ी राखै तो भीखलो राजदरबार री पिचकारयां छोड-छोड'र रेत में रंगोळ्यां-सी मांडै। लालै नै तो ईं राजदरबार गुटकै री गिंध सूं ई अेलर्जी है, बो रजनीगंधा अर तुलसी रळा'र मंडल में रोळतो रै। अबै बो टैम कठै रह्यो जद चौपाळां परां चिलमां सारीजती ही। बूढिया पींजरै रै मांय फंस्यै सिंघ-सा गरड़ावता आप-आपरी जवानी री जुगाळ्यां कर-कर'र जोर हंसता अर हंसावता हा। अेक-दूजै नै 'स्पेंट फोर्स' बतावता हा। कोई बीड़ी रै धुंवै रो छल्लो बणावतां कैवतो कै बामण दादै री के बतावां, बो तो 'फ्यूज' लोटियो है। अेक दिन अेक छोटो टींगर कह बैठ्यो, "के बात करो हो, दादै रै मूंडै में दांत कोनी, पेट में आंत कोनी, पण इन्नै-बिन्नै झांकता फिरै।" दादो दोरी कोनी मानी, पण बो किसो घाट पड़ै हो! छोरै नै बुचकार'र बोल्यो, "हाल थूं टाबर है, थनैं तजुरबो कठै, के होयो भायला जे मूंडै में दांत कोनी अर पेट में आंत कोनी।" पोपलो मूंडो पंपोळतो बोल्यो, "देखण में आंट कोनी।" अै तो चौपाळ री नर्सरी क्लास री बातां हुंवती, कुण जाणै कै ऊपरली क्लासां री पढाई में कांई-कांई हुंवतो हो। इण खातर ई चौपाळां पर मन न लागै, आ कींकर हो सकै भायला!

जोध-जवानां री चौपाळां पर आखै गांव री छोरयां री कुंडळियां खुलती ही, जवान भोजायां री डाक री खबरां-सी खबरां बंचती ही। कुणसी किणरै फेर में आथण मिंदर भाजै, कुणसी सिंझ्यां खेत कानी मूंडो करै अर उणरै गैल गांव रो कुणसो टाबर फदड़का मारै। कुणसै खेत में बैठ, लोटो परियां सिरका, हाथ में हाथ थाम रंगीला सपना लेंवता गोधुळी पछै ईज पाछा बावड़ै, क्यूंकै झालर बाजै रै अंधारै रो फायदो लेवै कै गांव नै खबर

 ISSN : 2320-0995

न लागै पण जग्गा जासूसां कुण लगै, केजीबी रा जासूसां दांई खबरां चौपाळ पर आ ईज जावै। स्हैरां में चाहै किसी ई कोलोनी में रैवणिया दो स्टोप आंतरै ई मिलै, चाहै सगळा ई मॉल में भेंटा करै, पण चौपाळां पर एफआईआर लिखीज ई जावै है।

बात रो बतंगड़ बणावणो होवै, चाहै बाल री खाल काढणी होवै, आं चौपाळां सूं सांतरी जग्यां कठै मिलै? अै टीवी रा सीरियल आं चौपाळां सूं ईज सीखै कै बात कठै सूं कठै ले जावणी है।

अेक दिन री बात कै खींवलो गुटकै री पिचकारी मारतो बोल्यो, ''फक्कड़ भाईजी! थे फलाणै नै तो जाणता ई हुवोला... ?''

म्हैं हां में मुंडी हिलावतो कैयो, ''खींया... बै तो गांव रा मौजीज सेठ है, बांनै कुण कोनी जाणै, लूंठो कार-ब्योपार है, मोकळी संपदा है।''

बो बात नै बीच में काट'र कैयो, ''आ ईज तो बात है, सो-क्यूं ई ठाडो है, पण करम भी तो ठाडा कोजा है।''

म्हैं अचंभो करतो बूझ्यो, ''इस्यो के है... ?''

कीं ताळ में बात रा फोरा टेकतो क्लाईमैक्स पर ल्यावतो खींवो बोल्यो, ''भाईजी खुद मिनख तो घणो ई चोखो है, पण चरितर धाप'र माड़ो है... इणरी आपरै बेटै री बींदणी सूं लग्गी है।''

म्हारै झाळ चढगी। डपटतो कैयो, ''सा'ळा खींवला! जूता खासी के... ? कूड़ा आळ ठोकै, थूं कदैई आंख्यां देख्यो के... ?'' जोर सूं झाड़्यो तो कीं ढब्यो, पण थोड़ीक ताळ में निसरमो फेर बोल्यो, ''म्हैं थांनै कैवूं नीं, बस थे देख्यै समान ई समझो।''

अबै बतावो कै के करल्यां, चौपाळां पर के रो के हो जावै। का म्हैं जाणूं का राम जाणै।

भायला! चेतै आवै कै बो भी बगत हो जद आधा टाबर तो स्कूल जावता ई कोनी हा। जिका जावता बै भी दो-तीन घड़ी खातर ई जावता हा। अेक-अेक घर में केई भायां रा रळा'र दस-पंदरै टाबर तो छोटी बात हुंवती ही। छोरयां तो उण बगत घर रै मांय ई रैवती ही, पण टींगरां री चौपाळ तो दिन आंथ्यां ताणी ग्यान में सजती ही। कंचा, मारदड़ी सतौळिया, सताताळी जियांकला खेल रमता हा। भूख लागती तो घरां ढूकता हा। अबै बदळ्यै बगत में टाबरां नै टैम ई कठै... ? ढाई-तीन बरस री उमर में चड्डी अर ऊपर पैंट वाळा टाबर स्कूल जावै। बां टाबरां नै कुण बतावै कै उण बगत छह-सात बरस तांई नागा फिरणै रो अर कमीज री बाजू सूं सैडो पूंछणै रो मजो ई के होवै! अबै तो स्कूल पछै ट्यूसन, डांस-क्लास अर जाणै कित्ती भांत रा काम? टाबर बिचारो आखतो होय जावै,

पण पिंड कठै छूटै! आं नूंवोड़ा नै के ठा चौपाळ के होवै। ठा नीं आंरी भड़ांस बुढापै में भी निकळसी कै नीं... ?

कैबत है कै बात रै पग कोनी होवै। बात रो के है कद किन्नै रुड़ती किन्नै रूड़ज्या। सरू होवै मंहगाई-बेरोजगारी सूं अर खतम होवै सत्ता री कुरसी परां। केई तो आपरी पार्टी रा सांकळिया होवै जिका तो पारटी खातर मरण-मारण त्यार रैवै। आं चौपाळां पर बै सगळी बातां चरचीजै जिकी संसद मांय होवै चाहै नीं होवै। अठै बिना लाग-लपेट सगळी पारटियां रो पोस्टमार्टम होवै। कुण कद किसी पारटी में है, पण पळटण नै त्यार बैठ्यो है। केई तो मांयली खबर कैय'र बम-सा फोड़ै। फलाणै नै मंतरी बणासी, तो कुणरी मिनिस्ट्री जावण वाळी है। कुणसो नेता दळ बदळसी अर कुणसै पांणै में ढुकिंग है। चुनाव री रुत में तो अै चौपाळां तंदूर-सी ताती रैवै अर बातां में स्वाद इयां आवै जियां सियाळै में गरमागरम दूध-जळेबी में आवै। मिनट-मिनट रा भाव चौपाळ री महत्ता बधावै। उण बगत ठा नीं कित्ता खाईवाळ गईवाळ बण जावै। आं मजां रै कारणै ईज चौपाळां माणसां रै काळजै री कोर कैयीजै।

गांव रै कंवारा-कंवारियां रो इतिहास ई अठै सूं मंडै। किणी छोरै रो नांव लेवण री देर है, किता ताचक'र पड़ै! छोरै री जलम-कुंडळी अठै ईज बांचता देर नीं लगावै। सगपण तो होसी कै नीं होसी, पण तीया-पांचा आगलै रा चौपाळ में करतां बित्ती ई देर लागै जित्ती भारत सरकार रै राहत कोस री घोसणा करण में लागै। छोरां सागै उणां रा माईतां रा तळपट अठै ओडिट कर्‌योड़ो-सो तळपट आ जावै। किणरै कित्ती देणदारी, कित्तां माथै है, कीं पावणा है कै नीं, जाणै इनकम-टैक्स रो दफतर अठै ईज लागै है। तळपट रै साथै-साथै घरवाळां रा सभाव भी उपाणीजै। किणरै घरां सासू-बींदणी में लठ्ठ बाजै, तो कठै देवर-भोजाई रो टांको फिट है। सीआईडी री फाइलां झट खुल जावै।

अबै तो घर-घर टीवी लाग्या है, पण पैलां अै चौपाळां ईज टीवी रो काम काढती ही। कुण री बींदणी रो पग भारी है, किसै घर में जापो होयो है, चौपाळां री चौकसी किन्नरां रै खबर-तंतर नै ई फेल कर देंवती ही। जुवानियां रै जोबन री तो अै चौपाळां बैरण ही। अबै तो स्हैरां में कोई डिस्को, पब, बार में जावै तो बेरो ई कठै लागै, पण उण बगत स्पीड-पोस्ट सी खबर तुरतै चौपाळ पर भुगतीज जावती ही। कित्ता छोरा-छापरा भागवत में या फेर मिंदर क्यूं जावै, कठै पल्ला लहराइजै, चूंगी री फड़दी चौपाळ पर कटती ई दीसै। मटकै रै आंक रो खुलासो आगूंच अठै आय जावतो हो। गजब रुतबो हो आं चौपाळां रो।

चौपाळ पर बात रो नुकतो पकड़ में आवण री जरूरत ही, बाकी सब तो आपरै मत्तै ई घड़ण रा खिलाड़ी पैनल्टी कारनर मारण नै त्यार ई रैवता हा। खास बात आ ही कै आज

री मीडिया सूं चार पांवडा आगै चालती ही चौपाळ। जियां टीवी में नित नूंवा मुरदा बळै बियां ई चौपाळां पर आज कही बात तो काल रै दिन बोदी कहीजती ही। नित नूंवी बातां रो अंबार रैवतो हो। काल वाळी बात तो बासी गिणीजती ही। केई संकाळु सभाव रा मिनख तो आपरै मन री कैयां बिना ई रैय जावता हा। केई तो मोदीजी री दांई मन री बात सगळां सूं पैलां कैवण री होड मचाई राखता, आज न करी तो सवारै पुराणी हो जावणी है।

चौपाळ, गांव री हरियाळी, गांव री नसीली, रंगीली, हठीली बातां करण रै सागै दुख-दरद, मरयै-खप्यै रो इतिहास भी अठै ईज मंडतो हो। पण अेक बात सै सूं सूगली ही कै बात बधावण रै फेर में ठा नीं किती कूड़ी बातां किणी नांव रै चेप देंवता, बै तो आपरो बगत काट रोट्यां भेळा हो जावता, पण कद बिचारयो कै जिकै री चरचा करी, बीं बापड़ै री कांई गत होसी? किणी रो तीयो-पांचो करयां बगत तो कट जावतो, पण झूठी थूकबिलौई रो अगूण-आथूण सो भेळो हो जावतो हो। पग धरती पर लटकता, पण मन चांद पर उडतो हो। थांरा बैंगण म्हारी छाछ रो जे ओलंपिक हुंवतो तो सगळा मैडल चौपाळां री झोळी में आवता। हरेक रै हबसाड़ काढण री अेकदम 'परफेक्ट' जग्यां हुंवती ही चौपाळां। देस री परंपरा अर संस्कृति रो ईज अंस है चौपाळां। चौपाळां आज भी जींवती है। बस, सरूप बदळ्यो है, पण बातां रा लच्छा कम कोनी होया। कैबत है—''पर हित सरिस धरम नहीं भाई'', बियां ई 'पर निंदा सम सुख नहीं भाई' तो आतमा होवै है चौपाळां री। ठाडो चमत्कारी इतिहास बखाणनै री म्हारी खिमता कठै, बाकी आप अनुभव करो अर मजा ल्यो।

◆◆

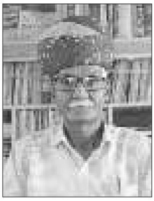

मानसिंह शेखावत 'मऊ'

चाय-पच्चीसी

पीणी पड़सी चाय, चाय रो चसको लाग्यो।
सूरज उग आकास, घड़ी दो ऊपर आग्यो।।
दादाजी नै चाय, चाय दादी नै चावै।
चाय चाटगी भूख, टुकड़ा नीं दो भावै।।
सब रो आदर चाय, चाय पै चरचा चालै।
बाबूड़ा बिन चाय, घणा दिन फोड़ा घालै।।
चाय बिना सूंनेड़, चाय बिन रंगत क्यांकी।
चाय गुवावै गीत, चाय बिन संगत क्यांकी।।
चूल्है बैठी चाय, भाग चोबारै चढगी।
सम्मेलण में चाय, चाय पर निजरां गडगी।।
लागै आटो पाव, चाय की चिन्ता मोटी।
बजट चाय रो भोत, दूध री बोतल छोटी।।
चाय मरद री स्यान, चाय में जागीरदारी।
मूंडै पर मुस्कान, चाय बिन लागै खारी।।
पकवानां रा ढेर, चाय बिन लागै माड़ा।
मूड कवि रो ओफ, चाय बिन हुवै कबाड़ा।।
चाय चलावै राज, चाय सूं चिटली पकड़ै।
नरम पड़ै पी चाय, चाय बिन बेजां अकड़ै।।
मान मऊ जिद पाण, चाय जद नीं बपरावै।
घर में व्है घमसाण, खालड़ी सगळा खावै।।
कोडवर्ड है चाय, चाय चरचा रो सेतू।
चाय चढी चौपाळ, चाय है मोटो हेतू।।

ठिकाणो :
मु. पो. मऊ
तहसील-श्रीमाधोपुर
जिला-सीकर (राज.)
332715
मो. 9829164164

 ISSN : 2320-0995

संसद पूगी चाय, चाय सूं सत्ता पायी।
चाय करावै मेळ, चाय है मोटी मायी।।
चेला चावै चाय, चाय बाबां नै प्यारी।
जीव-जड़ी है चाय, चाय री महिमा भारी।।
बिना चाय कोकाड़, चाय बिन माथा फाटै।
गळी-गळी में चाय, चाय है भाटै-भाटै।।
चै'रा माळै चाय, चमक है चोखी ल्यावै।
जीवै मरिया बीर, चाय जद साम्हीं आवै।।
पैलो वर दे चाय, दूसरो कोनी सूझै।
दीखै कोनी चाय, जीव जद घणो अमूझै।।
नहीं जींवता चाय, दिनां में होटल खोलै।
आयां रो सम्मान, गांव रा सरवण बोलै।।
जग में चावो जीत, चाय रो बजट लुटावो।
खुद छळकावो जाम, चाय लोगां नै पावो।।
जात-पांत नै बाळ, चाय है प्रेम बधावै।
चाय दिरावै जोस, जीव मुरदा में ल्यावै।।
साधन घणो अचूक, चाय री छोटी प्याली।
दुनिया छोड्यो दूध, चाय रै गेलै चाली।।
चाय घणी चालाक, भूख नै झटपट मारै।
अनशन पर अड़ बैठ, लोगड़ा जलम सुधारै।।
बाबू दफ्तर छोड, चाय पीबा नै आवै।
अफसर केबिन मांय, चाय है घणी मंगावै।।
निविदा में है चाय, चाय में ठेका छूटै।
चा-पाणी री ओट, लोगड़ा चांदी कूटै।।
काम हुवै आसान, चाय बिन फाईल डूबै।
चाय पीयां मुस्कान, नहीं तो बाबू ऊबै।।
मती बचावै चाय, स्याणपत कोनी चोखी।
नहीं मिली जद चाय, डाक बाबूड़ो रोकी।।

◆◆

भंवरलाल बैरागी (सरदारशहर)

टिकड़्यां-सुयां सूं जीवां हां

म्हे तो जे साची पूछो तो, टिकड़्यां-सुंयां स्यूं जीवां हां!

थे कुत्तां दांई भूख मरो, म्हे गधां दांई खावां हां
थे बैठ्या हो थांरै घर में, म्हे लाखूं कोसां जावां हां
ईं धन खातर तो दादोजी, फिर-फिरकै ज्यान गमा दीनी
मरग्या तो चाहे मर ज्यावो, म्हारी तो नींव जमा दीनी
बां कै ही पुन परतापां सूं, म्हे खून जगत रो पीवां हां!

औ हाथी रो सो पेट लियां, पड़ ज्यावां आकर पोळी में
सारो दिन बैठ्या काटां हां, किरचा-खाटा अर गोळी में
इतै नै दिन तो ढळ ज्यावै, के पड़्यो है झूठी बातां में
दाळ-भात पर मच ज्यावां, ले-ले पापड़ म्हे हाथां में
सब्जी अर भात मिला करकै, म्हे दाळ रहड़ की पीवां हां!

गिटणै अर लिटणै दो चीजां सूं, जे बंगालै ब्यापार चलै
तो थांरै तीर-तलवारां जिसी, म्हारी कलम री चाल चलै
जे भवसागर में डूबां तो आ, कलम नाव नै पार करै
इनकम-टैक्स रै रोळै में, मालकां री चोखी सार करै
बस ठौड़ बंदूकां री म्हे तो, आ कलम हाथ में लियां हां!

चोरी तो कदै करां कोनी, क्यूंकै भगवान रा प्यारा हां
गिद्‌दी पर धोळै दोपारां, बैठ्याई डाको मारां हां
जे राज तेज में काम पड़ै, सामै आंख्यां री खावां हां
छोरां रै सिर पर हाथ धरां, मिंटां में धरम उठावां हां
म्हे म्हारी जाण में चोखां हां, अब थे ई बताद्यो कियां हां!

साभार :
सोशल मीडिया

 ISSN : 2320-0995

औ सांस अटकतो जावै है!

मिनखां रो तो मिनखपणो, दिन रात भटकतो जावै है
रोटी रोजी री चिंत्या में, औ सांस अटकतो जावै है

छोरा अंगरेज बणै लाग्या, घाल गळै में टाई नै
भाभी नै होठां री लाली, साइकल दे दी बाई नै
बापूजी बैठ्या देखै है, ऊंची अेड्यां रै बूटां नै
माऊजी रोज सुंवारै है, छोर्‌यां रै दो-दो चुट्टां नै
दादी रो बोदो घाघरियो, दिन रात खटकतो जावै है
रोटी-रोजी री चिंत्या में, औ सांस अटकतो जावै है

कुणसो घर है जिकै में, पश्चिम री लाय नहीं लाधै
कुणसो घर है जिकै में, बिस्कुट और चाय नहीं लाधै
चूल्है रो चोको देवण नै चाहे, घर में मेट नहीं लाधै
के पोल पड़ी है हाथां में, जगती सिगरेट नहीं लाधै
दिन-रात काम री सूळी पर, इंसान लटकतो जावै है
रोटी रोजी री चिंत्या में, औ सांस अटकतो जावै है

म्हे तो देख्यो हो बायां नै, इस्कूलां मांय पढा देसी
म्हानै के ठा हो बापूजी, डाकण नै जरख चढा देसी
म्हे तो देख्यो हो पढ-लिखकै, सूत्या इंसान जगा देसी
म्हानै के ठा हो अै दादा बण, बांसां में आग लगा देसी
आं सूं तो सो संकोच सरम, अब दूर फटकतो जावै है
रोटी-रोजी री चिंत्या में, औ सांस अटकतो जावै है

मिनखां रो तो मिनखपणो, दिन रात भटकतो जावै है
रोटी रोजी री चिंत्या में, औ सांस अटकतो जावै है

◆◆

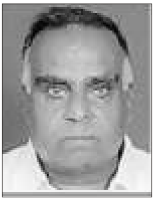

डॉ. रमेश 'मयंक'

सफर रा दरसाव

सफर

फोरी–फोरी फुहारां सूं
सफर थोड़ो आसान जणावै
सड़क रै दोन्यूं आड़ीनै हरियाळी
पहाड़ पे बादळां रो डेरो
अर मन मांय उमाव
सफर मांय
तावड़ै–छांव सूं बंतळ करता
पाछै छूटता जावै गांव।

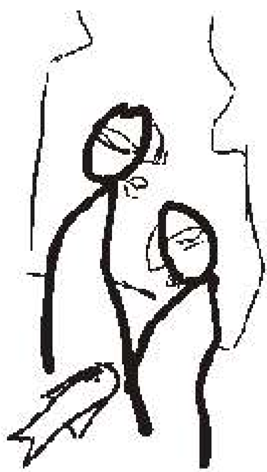

संतोष

पूरै दिन टिक'र
कारज निपटायो
मैणत करता
देह गमला मांय
बुद्धि री कळियां देखण रो
सुखद सुपनो साकार हुय पायो।

सूरज ढळतां हुयग्यो संतोष
अबै सफर पे जावतां
कोई नीं देसी दोष

ठिकाणो :
बी–8, मीरा नगर
चित्तौड़गढ़ (राज.)
312001
मो. 7023664777

कारज ई पूजा हुवै
उणरी ठौड़
कोई कोनी लेवै।

जंगळ

पहाड़ी मारग पे
घुमावदार मोड़ कनै
मन मांय राखता विस्वास
लोग निजरै आया,
टोकरियां मांय
पीळा रसीला आम
काळा करून्दा जामुन
म्हांनै कनै बुलाता हा,
मनमोवणा चितराम
मूंडै बोलता निजरै आता हा

घाटियां सूं गुजरती
छुक-छुक रेलगाडी मांय
बैठ्या जातरी
कांई जंगळ री भेंट
स्वीकार कर पाया ?
छनीक देर सारू
टेसण पे मौजूद
गुलदस्तां सूं जातरी
फूलां सरीखा हरसाया।

बादळां री बरा

पहाड़ां पे सफर
सफेद बादळां री बरात
चिलकी चमकीली
चटखीली
अर आसमान
अेकदम साफ।

छोटा-छोटा गांव
रूंखां री छांव
परकत रा मुकाम।

छनीक अगाड़ी
खेत-पेड़-पौधां री हरियाळी
गुलमुहर रा लाल-पीळा फूल,
साइकस-पाइनस री शोभा निराळी।

फेरूं आगै बध्यो तो
सौर ऊर्जा रो चाव हो,
पवन चक्कियां रो
उमाव हो,
सड़कां-पुळां रो निरमाण-कारज
जारी है
विकास री रफ्तार अठै भी
घणी प्यारी है।

आशीष

नींद खुली
सूरज चमकै हो
मंदिर में दरसण रो चाव
झलकै हो

मंदिर तांई पूगण री
संकड़ी गळी मांय
कोई अधेड़ औरत

ठंड सूं ठिठुरती
ऊभी हुयगी बण'र याचक
जोड़ायत कानी हाथ बधायो
अेक पुराणी साड़ी-शॉल रो
पैकेट पकड़ायो

म्हैं देख्यो—
उण रा चेहरा पे आशीष
अर होठां पे
दुआवां रा भाव निजरै आया
म्हैं देखतो रैयो
उदारता रो विचार
म्हनैं भी पसंद आयो।

सफर बीच पड़ाव

म्हैं देख्यो
लम्बा सफर बीच पड़ाव,
किणी तळाब रै किनारै
रूंखां री छियां रै सहारै
गाडियां रुक जावै
थोड़ी देर सुस्तावै
थकान मिटावै,
अमरूद-गन्नां रो रस
जामुन-आम रो सुवाद
आनन्द बधावै।

म्हैं देख्यो—
रंग-बिरंगी झालरां
झूलां री दुकानां ही,
सज्योड़ी बेलां
मारग मांय
आपणी तरीकां रा
रेलम-पेला हा।

म्हैं देख्यो
चाय-काफी-चिप्स रो
आपणो चाव हो
सफर आनंद सूं बीतै
सुरक्षा सागै,
चेहरा पे बस
औ ईज भाव हो।

वापसी में रोसणी

सिंझ्या बगत
बादळां बिच्चै
ढळता सूरज री ललाई
मनमोवणी निजरै आती,
पहाड़ पे
धीरै-धीरै उतरतो काळास
रोमांचक जणातो

ढळती-शाम री संगत मांय
गरमा-गरम पकौड़्यां
चाय-काफी री चुस्कियां दाय आती
और
वापसी रा सफर मांय
दूर सूं टिमटिमावती रोसणियां
यादगार बण जाती।
◆◆

ISSN : 2320-0995

सत्येन्द्र सिंह चारण

कीं तो हुयो है!

पैलड़ी पीढी बिच्चै
इण पीढ़ी में
कम हुयग्या
लोगां रै मूंडै बोलणा
भैरू, माता अर भौमिया
कम हुयग्या
लोगां में आवणा भाव,
भूत-चैड़ा ई कम चिपै
इण नूंवी पीढ़ी रै,
कांई बात है?
कळजुग में
कम हूयगी कांई
भैरू, माता अर भौमिया री कळा?
कै घटग्यो
इण पीढी रो सत्त?
कै आ पीढी
हुयगी शिक्षित?
कीं तो हुयो है!

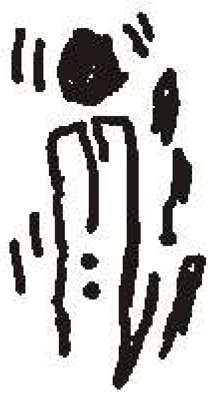

पैलड़ी पीढी में
जे मरज्यावतो
गांव में
फलाणी जात रो मिनख

ठिकाणो :
गांव-झोरड़ा
पोस्ट-चाऊ
जिला-नागौर (राज.)
341001
मो. 6350366382

तो नीं हुंवती बिरखा
पड़तो काळ,
जणै उणरी कबर माथै
मुट्ठियां भर-भर'र
फेंकता लूण
जद हुंवती बरसात,
पण इण पीढ़ी में
मरै कोनी कांई ?
फलाणी जात रा लोग
कै अबै नीं रैयो
उणां री मौत रो
पैलां जैड़ो परचो ?
कै आ पीढी
हुयगी शिक्षित ?
कीं तो हुयो है!

पैलड़ी पीढी में
फलाणी जात रो मिनख
जे थूक ई देंवतो खेत में
तो हुय जावतो
माटी रो सित्यानास
उणरो थूक हो
अमल बिरखा सूं ई माड़ो
घट ज्यावती खेत री
उपजाऊ खिमता,
पण इण पीढी
फलाणी
कोजै थूक आळी जात
फलाणी
चोखै थूक आळी जात रा
खेत ई बावै
बठैई रैवै
बठैई खावै
बठैई धोवै
बठैई न्हावै
अबै क्यूं नीं हुवै
खेत रो नास ?
कांई अबै उणरै थूक री
हुयगी सुद्धी ?
कै उणरै थूक में
घुळग्यो इमरत ?
कै आ पीढी
हुयगी शिक्षित ?
कीं तो हुयो है!

पैलड़ी पीढी में
दिनूंगै पैली दिख जावतो
जे फलांणी जात
कै बांझ रो मूंडो
अणूता माड़ा हुंवता सुगन,
पण इण पीढी तो
नीं आवै सुगनां में आडी
कांई इण पीढ़ी में
नी रैया बांझ ?
कांई परखनळी तकनीक सूं
सगळा ई बांझिया
बणग्या माईत ?
कै फलाणी जात लगा'र फिरै
सूबै-सुबै मुखौटो ?
कै आ पीढी
हुयगी शिक्षित ?
कीं तो हूयो है!
◆◆

 ISSN : 2320-0995

मीनाक्षी पारीक

गांव रा काचा-पाका घर

सौंधी-सौंधी माटी सूं
लीप्या-पुत्या
करम अर प्रीत री
सौरम सूं महकता
रिस्तां री
चरचराहट सूं चहकता
गरमी रा थपेड़ा में
ठंड देवता
सियाळै में नरम-गरम
अैसास भरता
चौमासै में भीजता
पीढ्यां-पीढ्यां सींचता
सुकून री जेवड़ी सूं बंध्या
घासफूस अर पूळां री
परवाह परखता
छोटा अर मोटा
अणमावती अपणायत सूं तर
गांव रा काचा-पाका घर।

गेरू अर कळी रा
मांडणा सूं
फबता घरां रा आंगणा
बडा-बडेरां री सुगबुगाट नै

ठिकाणो :
फ्लैट नं. 505
विकास हाइट फर्स्ट
12 बी कॉलोनी
गोकुलपुरा, कालवाड़
रोड, जयपुर 302012
मो. 8824061780

सरावता
चौक, चूंतरा, बारणा
खूणै में
चूल्है री चतराई पर सीझतो
आलण रो साग
सिलबट पर बंटतो
जीभ रो सुवाद
चाकी रै मेळ-मिळाप सूं
दादी-काकी रा हेज अपणेस सूं
पिसतो अनाज, मोठ-बाजरो
जीवण री इमरत काया नै
निरोगो राखतो
बिलोवणै रो दूध
कूंडै रो दही बाटको
लूण्या रो चटको
मीठो घणो लागतो
बाजरै रो बटको
परिवार रै साथै
चूंतरा माथै
जीमता प्रीत रो जीमण
दोन्यूं हाथ हुंवता
दही-छाछ सूं झर- झर
गांव रा काचा-पाका घर।

छ्याळी-बकर्‌यां
ढोर-ढांढां नै
परिवार मानता
जांटी सूं लूंग छांगता
मन रो मैल तरारो झाड़ता
किस्सा-कहाण्यां सूं
चौक-चौपाळ गूंजतो
भाईबंधां सूं चौक पूरीजतो
छोटी-मोटी बधायां
कबीजै में बांटता
मुकलावै में मुळकता
बिदाई में रोवता
जंवाइयां रा लाड-कोड सूं
झोळा भरता
बींदणी रा आवला-चावला
सगळा रळ-मिल'र करता
जीवण जीता जी भर
गांव रा काचा-पाका घर।

होळी में रंगीजता
दीवाळी रै दिवलां साथै
सजता
खूब धन निखरता
तीज-तिंवारां नाचता
टैम, वार, तिथि-मिति
लांबा-लांबा हिसाब
आंगळ्यां पर राखता
हंसी में हंसता
दुख में रोता
आपसरी रो मून बांचता
लाडू-पूड़ी, लापसी नै
घर-घर बांटता
ब्यांव-सगाई
बरत-उजरणा
चूल्हो उपाड़ जीमता
देखो हुयग्या न्यारा-न्यारा
आथूण रो ढोल पीटता
आज रोवै भीतर-भीतर
गांव रा काचा-पाका घर।
◆◆

 ISSN : 2320-0995

सोनाली सुथार

चार कवितावां

मिस

म्हारो काल रो रोवणो,
आज बेमतलब लाग रैयो है
काल म्हनैं लाग्यो हो कै,
जियां कीं भी नीं है
अर आज लाग रैयो है कै
अणमीत रो ई है
घरां मांय बैठ'र मिनख
जिण मिस
जूण नै कोसै है
रोवै है,
कदैई–कदैई
झिड़क भी देवै,
बै सगळा ई मिस,
सड़कां माथै
अणूत रा ई
मींयां हो जावै है।

समदर थकै है कांई ?

समदर बैवतो–बैवतो
थकै है कांई ?
मिनखजूण रै दुसराव सूं
थक जावै है,
समदर लैरां रै दुसराव सूं
थकै है कांई ?
सोचो—
मिनख नै,
केई–केई दिनां तांई
महीनां तांई
दीसण रै नांव पर
फगत आपरो वजूद
अर अेक नीरस
खितिज दीसै,
समदर री
लगैटगै सगळी उमर,
इयां ईज कटै है...
मिनख थक जावै है,
पण समदर थकै है कांई ?

ठिकाणो :
कृष्णालय,
विश्वकर्माजी मिंदर रै
साम्हीं, पूगल रोड,
बीकानेर–334004
मो. 8619621885

खिड़की

कोई खिड़की कठैई
किणी री उडीक री
अेकली गवाह है।

बरसां री उडीक
उडीक री पीड़
आंनै भोगतां-भोगतां
किणी री हूंस,
म्रित्यु तांई पूगगी है।

म्रित्यु सूं अणजाण
बा बूढी खिड़की
आज तांई उण
बरसां पुराणी
उडीक नै,
आधी रात तांई
उडीकै है।

चाणचक

लोग टुर जावै
आज होवै
अर काल नीं रैवै
कैवण आळा कैवै—
चाणचक ई टुरग्यो
किणी नै बतायां बिना ई।

औ चाणचक सबद
कदैई-कदैई
फालतू-सो लागै,
कोई भी कियां
फांसी रै फंदै तांई
चाणचक पूग सकै!
अेक लांबी जातरा करतां
खुद नै घसीटतां
बो उण फंदै तांई पूगै है।

उण जातरा मांय
किणी न किणीनै तो
बो कैयो ईज हुवैला
कै, उण जातरा मांय
बो चाल नीं रैयो है
खुद नै घसीट रैयो है,
गोडा छुलग्या है
जी दुख पा रैयो है
हथेळियां छुलगी है
अर लोही पसरतो जा रैयो है।

उणनै स्यात
आस भी हुंवती हुवैला
कै, कोई तो
उणरी सुणसी
कोई तो होसी, जिकै नै
उणरै टूरण रो पिछतावो
चाणचक करण रो
जी नीं हुवैला!

◆◆

ISSN : 2320-0995

डॉ. कृष्णा कुमारी

तीन कवितावां

महामिलन

थांकै कारणै
जरूरी छै म्हं सूं ज्यादा
फरज / दिखावा
रीति-रिवाज / बंधन
जमाना का सारा गोरखधंधा
अर म्हारै कारणै
सब सूं पैली सूं बी पैली छो
थां
थांको घणो सारो प्रेम
थांकै लारां बिताया हुया
अेक पल कै आगै
हो जावै छै
करोड़ां कलावां बी बावना
रीता हो जावै छै ज्हां
सारो अहंकार
क्यूंकै
थां छो म्हारा आदिगुरु
आदि सबद
थांका बारा में
सोचबो ई छै
म्हारै कारणै महामिलन!

ठिकाणो :
सी-368, तलवंडी
कोटा (राजस्थान)
324005
मो. 9166887276

भोळी-बावळी

घर का मांयनै की हवा में
जद घुटबा लाग्यो ऊंको जीव
तो फड़फड़ाबा लागी वा
आपका पांखड़ा
चड़ी की नाईं
आकास में उडबा कै लेखै
घणी चतराई सूं मरदां नै
ऊंका हाथां में पकड़ा द्यो
नौकरी को खेलकणो
अर वा भोळी-बावळी
चालाक मर्दां का झांसा में आ'र
लांघ'र देळ खड़गी बारै
तड़कै-तड़कै सारो काम नमटा'र
कांधा पे परस लटका'र
आंख्यां पे काळो चस्मो चढा'र
तेली का बैल की नाईं
चल जावै छै दफ्तर,
स्याम की दो पाटां कै बीच पस-पसा'र
जद थाकी-मांदी आवै छै घरां तो
आतां ईं ऊंका छोटा-छोटा बाळक
ऊं सूं लिपट'र हेरबा लागै छै
आपणी मां कै तांईं
अस्यो छै म्हारो गांव
ऊं का निढाल सरीर में,
अर वा झांकै छै
न्हार कै साम्हीं ऊभी
हिरणी जस्यी आंख्यां सूं
बाट न्हाळता चूल्हा नै
कै हाल तो निपटणो छै
चौका को बी सगळो काम!

सांवळो रंग

म्हारा आपणा नै
म्हारो सांवळो रंग देख'र
म्हंईं कर दी बारै
आपणा मन का घर सूं,
म्हूं काटती री
घर में बी बनवास
क्यूंकै म्हारा काळा रंग सूं
वांको संगमरमरी गळ्यारो
हो जातो सांवळो,
अेक दिन जाणै कस्यां
पड़गी थांकी नजर म्हारै ऊपर
सायद! म्हारा पाछला जनम का
चोखा करम या पुण्य
आयग्या काम,
थांकी जौहरी नजर नै
म्हारा काळा रंग का
कोयला ईं मेल'र हथेली पै
देख्यो, परख्यो, तरास्यो
घणा प्रेम सूं,
जीं सूं कोयलो बणग्यो
हीरो
जीं की चमक सूं, जगमग सूं
दमक उठी दसूं-दिसा
थांनै, हां थांनै
म्हारा मन की गुफा में
भर दियो अणंत उजास
अस्यो छै म्हारो गांव
अर म्हूं बणगी 'कोहिनूर'
थांनै! फगत थांनै ई।

◆◆

ISSN : 2320-0995

पवन कुमार राजपुरोहित

चार कवितावां

गांव नै गांव रैवण द्यो

सैरां सूं लाख भली म्हारी पैचाण रैवण द्यो
ऊभी बाड़ रै नेड़ै हथाई वाळी ठौड़ रैवण द्यो

गंगाजळ सो मीठो पाणी सरवर री पाळ रैवण द्यो
गुवाड़ बिचाळै डांगरां री बा घमसाण रैवण द्यो

गळी री रेत मांय खोजां री पिछाण रैवण द्यो
सुखाण मांय थेपड़ियां री थरपाण रैवण द्यो

करमां बाई रै खीचड़लै मांय धोळी धार रैवण द्यो
ऊभो जीमणो छोड'र बाजोट री सतकार रैवण द्यो

दिवाळी रा दीया अर होळी री पिचकार रैवण द्यो
आखातीज, गणगौर, भादवै रा तिंवार रैवण द्यो

मिंदर मै झांझरकै झालर री झणकार रैवण द्यो
मिनखपणै रो सुभाव जीवां माथै उपकार रैवण द्यो

हियै में प्रेम अर भेळो भायां रो कड़ूंबो रैवण द्यो
कलम पवन री कैवै, अजी गांव नै गांव रैवण द्यो

ठिकाणो :
गांव-नौसरिया,
तहसील-रतनगढ़
जिला (चुरू)
पिन-331022
मो. 6350277530

ISSN : 2320-0995

म्हैं आदमी हूं

म्हैं साम्हीं तो कठोर बजर–सो
पण मन रो कंवळो काचो हूं!

जगत रा दुखड़ा सुण सुणकै
म्हैं सुख–दुख बिचलो खांचो हूं!

म्हैं हर विपदा नै सह लेऊं
मन री मन मांय ई धर लेऊं

म्हैं लोक री निजरां पाको हूं
पण मन रो कंवळो–काचो हूं!

मायड़ भासा

जिण भासा मांय सोचूं–मांडूं
म्हैं जिण भासा में बोलूं–चालूं

जिण रा म्हैं गीत गुण गुणाऊं
जिण में जीवण रा सुपना जोऊं

जिण रा सबदां सूं प्रीत रचाऊं
प्रीत रचा'र म्हैं मीत नै रिझाऊं

म्हैं निज भासा री बात बताऊं
इण खातर जीऊं अर मर जाऊं

कहै पवन आ पिछाण बणाऊं
बोली सूं जग रै हिरदै बस जाऊं

मजदूर

दिहाड़ी वाळो जद घर सूं निसरै
खुद रा, माईतां रा सपना सागै
परिवार सुख री आस मांय बा
आखै दिन सुरजी रै तळै तपै

सैंस मिनखां री बात सुणै
जण जा'र आ दिहाड़ी मिलै
पण जगत रा अधकिचरा धनी
मजूर री मजूरी री तौहीन करै

रिस्तेदार भी रिस्तेदारी छोड दै
बतळावै तो लिलाड़ में सळ भरै
मजदूर च्यारां कानी सूं दबेल है
अमीरां री अमीरी रो खेल है

गरीब नै कुण कद साख देवै
दिहाड़ियो तो हमेस पिसतो रैवै
मिनखां री आ मानसिकता
समाज मांय दुभांत भर देवै

मजूरियो तो हमेस एकलो रैवै
मजूरियो तो हमेस एकलो रैवै!

◆◆

ISSN : 2320-0995

अब्दुल समद 'राही'

चार गजलां

(अेक)

जद ई थारी ओळ्यूं आवै
नींदां नैणां सूं उड जावै

मन म्हारो चितबंगो व्हैगो
थारा ई गुणगान सुहावै

थारी सोरम चहुंदिस फैली
मन मोहित व्है बस जस गावै

गैलो व्है गुरणी नित गाऊं
थारा ईज गुणगान गिणावै

भागी सगळी नींद मथारै
जद-जद थूं सुपना में आवै

जद-जद थनै भुलाणी चाऊं
दुगणी उण पुळ याद सतावै

(दो)

आभा सूं जद उतर्‌यो पाणी
जगां-जगां औ बिखर्‌यो पाणी

ठिकाणो :
प्रधान संपादक
शबनम ज्योति
सोजत सिटी
जिला-पाली (राज.)
मो. 9251568499

थारै तो बरसात सांतरी
परनाळा में उफण्यो पाणी

कितरा नै तो बाढ़ खायगी
नैणां में जद भरग्यो पाणी

नाव खेवतां उमर बीतगी
मरतां नै नीं मिलियो पाणी

जोबन रा दिन छूटा लारै
बूढापा रो मरग्यो पाणी

मरदां रा इब रया पूतळा
मतलबियां रो तरग्यो पाणी

(तीन)

आओ आपां नेम निभावां
सब रा हित अंतस सूं चावां

चुग-चुग नै गुण जोड़ण वाळा
दुनिया सूं भेळा कर लावां

खावां -पीवां, मौज मनावां
पण कोई नै नाय सतावां

दुनियादारी रै दरवाजै
घुसती वेळा समझ दिखावां

इण री टोपी उणरै माथै
'राही' हरगिज नीं पै'रावां

(चार)

लूटै सगळा न्यारा-न्यारा
कैवै सब रा सारा-बारा

खावै मूंडो लाजै आंख्यां,
तोई देखै खारा-खारा

किणमें इतरी हिम्मत रैयी
तोड़ै यांरा अै दरबारा

आंधी नगरी चौपट राजा
अधल न्याव रा बाजै बाजा

लागै वोटां री जद लाठी
आवै बखड़ी में अै सारा

◆◆

 ISSN : 2320-0995

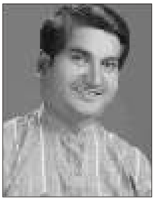

देवकी दर्पण

आजादी को अमरत उच्छब

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई, हलमल नेह जगावां सा
आजादी को अमरत उच्छब, आवो मल'र मनावां सा

कतनी उणस कुणस झेली, बतळाबो घणो जरूरी छै
या आजादी कस्यां मली, समझाबो घणो जरूरी छै
इतिहासां का वां पानां नै, जाग फणु पलटावां सा

रणबंका झूंझार पूत, धन-धन वां मां नै रण पेल्या
भारत मां कै खातर भैरूं, लोही की होळ्यां खेल्या
कस्यां मली आजादी, पीढी-पीढी नै समझावां सा

लक्ष्मीबाई जीजा हाडी, हाळो नज छै गान जठी
शैखर बिस्मिल भगत सिंह, नेताजी को बलिदान अठी
अमर शहीदा को संदेसो, जन-जन तांई पुगावां सा

आजादी में बेटा लारां, बेट्यां धाक जमाई छी
बेट्यां नै तलवास्यां रण में, घोड़ा चढ'र बजाई छी
सूना का आखर हाळा, हाथां सूं पाठ पढावां सा

लूट-फूट में होती आई, जिन्दो रैवै भाईचारो
बन्ध्यो सदा रै अेकता की डोरी में भारत सारो
विश्वगुरु का निज आसण पै, आओ ईंनै बिठावां सा

ठिकाणो :
काव्य-कुंज
रोटेदा (बूंदी)
राजस्थान-323301
मो. 9799115517

भाला सूं बाट्यां नै मत फेर भाईला!

ऊंळा–सूंळा बंग मत हेर भाईला!
भाला सूं बाट्यां नै मत फेर भाईला!

उठ–बैठ थोड़ी–सी सुधार तो सणी
प्रेम की नगा रखाण,क्यूं राखै तणी
अणमोल जिन्दगाणी को थूं ई धणी
ऊजळी रखाण बिधाता को छै रिणी
भांव मनखपणा का उसेर भाईला!

बुरी संगतां सूं भाया, जिन्दगी नै टाळ
लारां रैबाळा की भाळी, नत काटै भाळ
गांव सैर कांकड़, अछूता कोनै माळ
बछा राख्या बैर्‌यां नै,च्यारूंमेर्‌यां जाळ
मत फसै, बण'र बटेर भाईला!

जिन्दगी में रंग अस्या धारणा थनै
पग सौड़ जतरा ही पसारणा थनै
सध जावै पग वै पखारणा थनै
बर्‌योबर का ई लेणा छै वारणा थनै
कुण भूलज्या छै, य्हा देर भाईला!

जिम्मेवारी देख अस्यां रुखळावै मत
खुद हाथां काम कर, झुकळावै मत
धीर धार चाल नत, उकळावै मत।
धाकाधीक सूं खुदी नै, चुकळावै मत
सांस–सांस लार आस हेर भाईला!

महलां का सपना थनै ई आवै क्यूं
मन माळवै चित,चंगरेंया जावै क्यूं
मेहनत कर गाढी,बुरी नीत लावै क्यूं
थूं बी होज्यागो लाखां को, काची लावै क्यूं
मन घोड़ो हुंस्यारी सूं घेर भाईला!

काम हाथां को हाथां सूं कर्‌यां ई सरै
देखणो सुरग तो खुद मर्‌यां ई सरै
फेरी को धन्दो कर्‌यो तो फर्‌यां ई सरै
जळ में पड़्यो तो खुद तर्‌यां ई सरै
खुद ई नया जुगाड़ हेर भाईला!

ढंग सूं करै नै बीरा, बाड़ी सांख थूं
रामजी पै थोड़ो बसवास राख थूं
उडर्‌यो छै कांई यूं फैला'र पांख थूं
थोड़ा साक ई जमीं पै पांव राख थूं
ऊकै घरां देर, न अंधेर भाईला!

◆◆

ISSN : 2320-0995

देवीलाल महिया

अैड़ो रचियो राजस्थान

चांदी वरणी रेत-रेत में ऊंचा ऊभा धोरिया
आभै सूं बतळावै धरती, मधरा बोलै मोरिया
धिन-धिन है भगवान, अैड़ो रचियो राजस्थान
धिन-धिन है भगवान, अैड़ो रचियो राजस्थान

चिड़ी-चुगारी चुग-चुग लावै बाजरियै रा दाणा
मूंडै-मूंड चुगै है बैठ्या चिड़कल स्याणा-स्याणा
तोतै री तरकीब थे देखो, मीठा कर दै बोरीया
आभै सूं बतळावै धरती, मधरा बोलै मोरिया
धिन-धिन है भगवान, अैड़ो रचियो राजस्थान
धिन-धिन है भगवान, अैड़ो रचियो राजस्थान

खेत-खेत में खेजड़ली अर गांव-गांव में गोगा
रेत हेत में लुळ-लुळ करता सींवां खींपड़ फोगा
कैर-खींप री ओट में देखो, गादड़-लूंकड़ सो रिया
आभै सूं बतळावै धरती मधरा बोलै मोरिया
धिन-धिन है भगवान, अैड़ो रचियो राजस्थान
धिन-धिन है भगवान, अैड़ो रचियो राजस्थान

बाखळ बोलै आंगणियै सूं, आंगणियो मुस्कावै
मुळक-मुळक में घर-ग्वाड़ी री बातां हंस बतळावै
काण-कायदा पाण जुगत में, जीवण माळा पो रिया
आभै सूं बतळावै धरती, मधरा बोलै मोरिया
धिन-धिन है भगवान, अैड़ो रचियो राजस्थान
धिन-धिन है भगवान, अैड़ो रचियो राजस्थान

ठिकाणो :
गांव-खारी
तहसील-लूणकरणसर
जिला-बीकानेर
मो. 9602771955

बेमन होयो आदमी

देखो च्यारूंमेर जग में, खोयो-खोयो आदमी
मनड़ै री मनवार करतो, बेमन होयो आदमी

दिन छिपावै रात काढै, ओढै-पै'रै ओजको
गम गिटै अर गाळ जीमै, सांसां बणगी सोरको
करै जतन हंसणै रा लाखूं, रोयो-रोयो आदमी

घर-गुआड़ी गांव-गेला, थाकल होया बात रा
आभो-धरती टाळ लेवै, कुण धणी दिन-रात रा
दाता नै इलजाम देंतो, मुंह लकोयो आदमी

जग री जुगती डोळबायरी, डोळबायरो मानखो
देखै सींचै सात जुग री, ठाह नहीं सांझ को
झूठी आस अकास चढतो, सोयो-सोयो आदमी

चिड़कली गांव सूं आई

चिड़कली गांव सूं आई, गांव री बातड़्यां ल्याई
मुंडेरी बैठ सामोसाम, म्हारै सूं चीं-चीं बतळाई

कै घर रै मांयली बातां, बतावै ले-ले सूंसाटा
कै दादो चौकी सूं पड़ग्या, कांकरा कड़तु में गुडग्या
कै ढकणी फूटगी गोडै री, बीं रै पाटी करवाई

अगुणै खेत री बातां, खेत रै धान री बातां
बतावै बाजरी मोळी, कै अबकै छांटा ही थोड़ी
लगोलगआठ दिन खेतां, चली ही झीणी पुरवाई

कै मां रो काळजो दूखै, थारै बिन अेकली कूकै
नहीं जी-सोरो बापू रो, करै है लाड धापू रो
थारो ही ओजखो पाळै है, थारी मोटोड़ी बाई

◆◆

ISSN : 2320-0995

राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'

धरती री सोरम : आरै-सारै रो जथारथ

बडेरा साहित्यकार मनोहर सिंह राठौड़ रो कहाणी-संग्रै 'धरती री सोरम' सन् 2021 में छप्यो, पण म्हारै हाथ में पोथी भोत पछै आई। बियां तो राठौड़ री आजलग सड़सठ पोथ्यां छपगी, जकी में हिन्दी अर राजस्थानी में कहाणियां री सात पोथियां है। आपरी मौज में काम करणियां राठौड़ जलमजात संवेदनशील कलाकार है। बै आपरी कहाणियां में तो सबद-चितराम उकेरै ई है, बांनै तुरत-फुरत चित्र कोरण रो ई जबरो कोड है। कहाणीकार रै बहुआयामी रचाव में चींत-चितार रै साथै परिवेस रो सुभाविक वरणाव है। कहाणियां नै बांचां तो ठाह पड़ै कै पोथी रो सिरैनांव 'धरती री सोरम' कथानक मुजब खूब ओपतो है। पोथी में दस कहाणियां है। कहाणियां में गांवई परिवेस री सोरम बेसी मिलै। बै परम्परा, रूढियां अर समाज में आवतै बदळाव नै कथानक में सांतरी ढाळ गूंथै। बां सूं मानखै नै सावचेत करै। म्हैं बांरी कहाणियां बांच'र अेक साहित्यिक पाठक री दीठ साम्हीं राखण री खेचळ कीन्ही है।

'डोकरी रो निरणै' कहाणी में बडेरां पेटै औलाद रै नाजोगापण रो नागो नाच साव दीसै। नारीवाद रै असर रै कारण औ मान्यो जावै कै पुरुष प्रधान समाज में लुगाई रो सोसण पुरुष ई करै। पण आज ईं साच सूं इनकार कोनी कर सकां कै लुगाई माथै लुगाई बेसी अन्याय करै। आ बात घर-परिवार-समाज में सांप्रत दीसै। भारत में नारीवादी आंदोलन रो असर औ हुयो कै नारी फगत खुद माथै ई सोचण लागी। दूजी लुगाई री पीड़ सूं ई बीं नै मतलब

ठिकाणो :
सावित्री सदन
सी-122, अग्रसेन नगर
चूरू (राजस्थान)
मो. 9414350848

कोनी। कहाणी बांचता थकां प्रेमचंद री 'बूढ़ी काकी' आंख्यां में उतरज्या। पण इण कहाणी में तो पोती रो वैवार ई जाबक थू-थू करण जोगो है। जकी डोकरी आपरी जवान बहू री बेमारी में बेटी मान'र बीं रा गू-मूत तकात धोया, बा ई बहू बुढापै में आपरी सासू माथै अत्याचार करती कोनी संकै। इसी लुगायां माथै, धोबा भर धूळ आज कोई कोनी नाखै। ईं रो ई नांव है कळजुग।

कित्तोई फेमिनिज्म आय जावै पण संस्कारां री जड़ कदैई सूकै कोनी। कहाणीकार मानै कै पति नै परमेसर मानण वाळी परम्परावादी लुगाइयां अजैई है। 'धरती रो उफाण' कहाणी ईं रो मोटो दाखळो है। लुगाई री सहनसगती धरती जैड़ी हुवै। दारूबाज धणी आपरी लुगाई नै गाळ-भेळ करतो कूटै, बा सहन करै। दारूबाज नै सूंवै गेलै लावण सारू दूजा मिनख कूटाछेती करै तद बा धणी नै बचावण खातर चंडी रो रूप धारण कर लेवै। जदकै दूजा मिनख बीं लुगाई री दुरगत सूं बचावण खातर ई आगै आवै। ईं कहाणी सूं महिला पाठकां नै मोटी आपत्ति हुय सकै। क्यूं कै कहाणी ईं रूढीवाक्य री थरपना करै कै लुगाई पग री मोजड़ी हुवै। घरधणी आपरी लुगाई साथै अणूताई करै तो बो बीं रो अधिकार है।

'दरद री दवाई' कहाणी में कहाणीकार सगळां री ओड़ी में आडो आवणियै मिनख जगतराम रै सुभाव रो सांगोपांग वरणाव कर्‌यो है। कहाणी में बडेरा माईतां री पीड़ संवेदनशीलता साथै मांडी है। अेक एसडीएम रो बाप आपरो दरद ओपरै मिनख साम्हीं इयां बखाणै, ''बेटो म्हनैं मोटा लोगां साम्हीं नीं लावणी चावै। बीं री इज्जत घट जावै। अब मां-बाप तो हुवै जका ई रैवै। अब इण ऊमर में फूटरापो अर मोटो ओहदो तो म्हारै हाथ आवै कठैऊं? खैर! म्हैं आप अणजाण नै घणीं बातां कैयग्यो। कठैई कोई आगै जिकर मती करज्यो। आपरो मीठो सभाव देख कैवीजग्यो।'' आज साहित्य नै विमर्शां रै खांचै में देखै लाग्या। ईं दीठ सूं आ वृद्ध-विमर्श री कहाणी है। चपड़ासी सूं बाबू बण्या भोळा-ढाळा काका रो मनोवैज्ञानिक चित्रण कहाणी नै घणी ऊंचाई देय सरस बणावै।

'कंवारी कै परणी' कहाणी बाल विवाह रै दंस नै सांगोपांग चरूड़ करै। जवान हुयां पछै मुकलावै री उडीक करती नीलम री मनगत नै कथाकार अैड़ी मांडी है कै पाठक भावुक हुयां बिना नीं रैय सकै। इणीज भांत 'घर री जड़ां' अर 'मन री मरोड़' कहाणियां पाठक नै बाल-विवाह, बेमेळ सगपण, लुगाई अर मरद जात री पीड़ रै समंदर में ऊंडो पुगाय रूबरू करवावै। गरीबी अर कळेस जद लारो नीं छोडै तो मिनख री कैड़ी दुरगत हुवै! ईं खारै साच रा चितराम संवादां रै पाण सरजीवण हुवै। अेक संवाद देखो, ''मन में कठैई गरीबी रड़कै ही। एक उंडो निस्कारो न्हाक्यो—अरे, पईसा अंटी में हुयां पेमा रो मुकलावो कद रो ई होय ज्यातो। धनवानां री ओगणगारी, सफा निकरमी, नांजोगी अर

कांण–कसर वाळी ओलादां सोरी–सोरी परणीज ज्यावै।'' कथा–नायिका री पीड़ बांच्यां ई ठाह लागै।

'दियोड़ा बचन' अेक चरितवान चोर रै हिरदै–परिवर्तन री मार्मिक कहाणी है, जकी लागै तो फिल्मी कहाणी बरगी है, पण आ अेक साव साची घटना रा कथानक री नींव माथै रच्योड़ी जबरी कहाणी है। दुनिया में असंभव तो कीं कोनी हुवै। अेक अणजाण मिनख ब्यांव रै घर में भात भरण आवै, बीं वेळा रा जोरदार चितराम कहाणी में है। हुवै इयां कै, दीपचंद नांव रो नामी चोर बारह बरस पैली अेक घर में चोरी करण पूगै, बीनणी बीं रा हाथ अैड़ा पकड़ लेवै कै चोर री मरदानगी चरूड़ हुयज्या। सैंठौड़ बो माफी सारू बीनणी सूं अरदास करै। धरम भाई बण'र हाथ में दस रिपिया देवै। बचन देवै कै जद कदै दरकार पड़ै तो टोक देई। बो दियोड़ो कौल निभावण आवै अर ठाठ–बाट सूं भात भरै।

आजकलै कुटम–कबीलो अर खून रा सनमन दिखावै रा हुयग्या। खुद री औलाद ई कद पलटी मार जावै ठाह ई कोनी पड़ै। सापुरखां नै नीं चांवता थकां ई नस नीची कर्‌यां सो–कीं देखणो–भोगणो पड़ै। अेक कैबत साची है, मिनख रो के बडो–छोटो, बगत ई बलवान हुवै। बगत रो बायरो ठाढा–ठाढां नै धूळ में रळाय देवै। ईं साच माथै रच्योड़ी कहाणी 'ढळती सांझ' भोत मार्मिक रचना है, जकी मिनख रै चोखै–माड़ै बगत री विरोळ करै। खींवजी ठाकर जका आपरै गांव–गुवाड़ रा सिरै मिनख! सगळां रै ओड़ी में आडै आवणिया। आपरै बगत रा नामी दिलेर मिनख, बात रा धणी! बेटा–बेटी रै ब्यांव पछै माईत घणा सोरा हुया करै, पण अठै हुवै उलटो। आखी जिनगी कमायोड़ो मान–सनमान मोटै बेटा री बीनणी रै आकरै सुभाव रै कारण धूळ भेळै रळज्या। खींवजी लाचार। बै चावै कै घर में सांति बणी रैवै। बुढापै में जोड़ायत ई जद धणी सूं मूंडो फेर लेवै तो कैड़ी भूंडई हुवै, बा ई खींवजी में बरतीजै। लुगाई घर री धुरी हुवै, जद धुरी हाल खड़ी रैवै तो घर खिंडळ–मिंडळ हुय जावै। ईं कहाणी में आ बात सांप्रत साबित हुवै। आज तो आ घर–घर री कहाणी बण चुकी।

'गंगूबा' कहाणी फेरूं खरै अर खारै साच री थरपना करै कै मिनख रो मोल कोनी, सगळी माया रोकड़ां री है। सुख रा सब साथी, दुख में न कोय...। कैबत ई है, 'तो कठै राजा भोज, कठै गंगू तेली!' कहाणी रा नायक गंगूबा रै साथै आ ईज बरतीजै। बो दाळद रै दिनां सूं बारै निसर'र खूब धन–दौलत कमावै। आपरो नांव कमावण री तिरसा में परोपकार पेटै रोकड़ा रिपिया पाणी दाईं बैवता जावै अर अेक बगत इस्यो आवै कै गंगूबा रो खजानो खाली! जातरियां खातर भंडारा, गोसाळा अर गांव री सड़क बणावणियो गंगूबा अेक दिन खुद सड़क माथै आय जावै...। बीं रा टाबर मजूरी करण नै मजबूर हुयज्या। अमीरी में जका लोग आसंग–पासंग रैवता, बै माठी वेळा में आंतरै ई कांई हुवै, गंगूबा री

हांसी घालता ई कोनी थाकै। आ ई जग री रीत है। कहाणी सीख देवै कै पीसो कमावणो जित्तो दौरो है, बित्तो ई दौरो बीं नै अंवेरणो है। सेठ लोग पईसा कमावण दिसावर गया अर बठै ई बसग्या। सेठां री सूनी हेल्यां री रुखाळ करै लठैत ठाकर! सेठां री संवेदनहीनता नै सबळै ढंग सूं साम्हीं करती कहाणी 'रात रो पोरायती' शेखावाटी रै प्रवासियां नै अवसकर बांचणी चाईजै।

कैवण रो मतलब है कै मनोहर सिंह राठौड़ कहाणियां में मिनख री निजू, परिवार अर समाज री समस्यावां नै सेंजोरी ढाळ राखै अर कठै समाधान रो सैन ई करै। कहाणियां में मिनख सुभाव री झीणी परख है। कहाणियां री भासा में अेक सांतरी रवानी है। कैबतां रो सखरो-सोवणो प्रयोग कहाणी नै घणमोली बणाय देवै। मिणिया-मोती री दांईं उपमावां अर अलंकारां रो ओपतो सांतरो प्रयोग है। कुल मिलाय'र इसी कमायोड़ी, ओपती, सांतरी भासा गिणती रा साहित्यकारां री है। राजस्थानी संस्कृति रा पोखणहार अेक अनुभवी साहित्यकार री रचनावां साहित्य री धरोड़ हुवै अर बांच्यां नूंवा लिखारां नै कीं सीखण नै अवसकर मिलै। कहाणीकार नै मोकळी बधाई!

◆◆

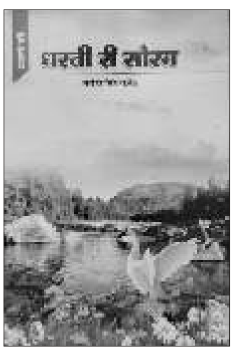

पोथी : धरती री सोरम

विधा : कहाणी

कहाणीकार : मनोहर सिंह राठौड़

प्रकाशक : साईंटिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर

संस्करण : 2021

पृष्ठ : 112

मोल : 250

राजस्थान दिवस 2025 रै मौकै आयोजित ग्यान गोठ में बीज भाषण देंवता
उपखण्ड अधिकारी, श्रीडूंगरगढ़ श्रीमती उमा मित्तल

राजस्थान दिवस 2025 रै मौकै आयोजित ग्यान गोठ में बीज भाषण देंवता
डॉ. सुरेन्द्र डी. सोनी, चूरू

अन्तरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस रै मौकै आयोजित ग्यान गोठ में विचार राखता साहित्य मनीषी
श्री वेद व्यास अर मौलिक सिरजण सारु सम्मानित साहित्यकार

महावीर माली, मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़)
खातर महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ में छपी

राजस्थली लेन-देन सारु :
खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीडूँगरगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

Website : http://rbhpsdungargarh.com